मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 01 | जुलाई, 2018 | पृष्ठ : 56 (पञ्चाङ्ग सहित) | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

शिक्षक बन्धुओं एवं अभिभावक महानुभाव! सादर वन्दे।

नव शैक्षिकसत्र 2018-19 की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

19 जून 2018 को शैक्षिकसत्र के प्रथम दिवस का आपने पूरी ऊर्जा, उत्साह एवं उमंग से आगाज किया होगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

सत्र 2017-18 के बोर्ड परीक्षा परिणाम आप सभी की लगन, मेहनत और सुनियोजित शिक्षण के कारण शानदार रहे हैं। इसके लिए आप सभी को अन्त:स्थल की गहराइयों से साधुवाद।

मेरा मानना है कि हम शिक्षा परिवार के सब सदस्य मिलकर एक ऐसे राजस्थान के निर्माण में लगे हुए हैं जो बालकों में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का निर्माण कर हमारे समाज एवं राष्ट्र को भविष्य के सुनागरिक प्रदान करने में अग्रणी होगा।

इस सत्र में प्रदेश की यशस्वी मुख्यमंत्री महोदया के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को नि:शुल्क दुग्ध वितरण के माध्यम से उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु आवश्यक पौष्टिकता प्रदान करने के कार्य का शुभारम्भ किया गया है जो आप सभी के सहयोग से सफल होगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

प्रदेश में प्रवेशोत्सव (19 जून से 3 जुलाई) पूर्ण उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया, जिसमें नामांकन अभिवृद्धि हेतु हम सभी ने मिलकर प्राणपण से प्रयास किए तथा प्रवेशोत्सव कार्यक्रमों के शानदार आयोजन के साथ लक्ष्य प्राप्ति भी हुई।

हम विश्व में हो रहे जनसंख्या विस्फोट के बारे में विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई के दिन सभी को जागरूक करें। 23 जुलाई को लोकमान्य तिलक जयंती राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा स्वदेशी के भाव को जाग्रत करने के लिए मनाएँ तथा 27 जुलाई को श्री गुरु पूर्णिमा, गुरु वन्दन पर्व के रूप में मनाते हुए 28 जुलाई वन महोत्सव के दिन हम अधिकाधिक वृक्षारोपण कर इनकी रक्षा करने का दृढ़ संकल्प लेवें और ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के बारे में भी जनजागरण करें।

मेरा यह भी विश्वास है राजस्थान शैक्षिक जगत में सिरमौर रहोने के साथ-साथ अपने गौरवशाली अतीत के अनुसार विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ेगा, यह शिक्षा, संस्कार एवं स्वावलम्बन के साथ-साथ नवाचारों, क्रियात्मकता एवं सृजनात्मकता केन्द्रित होगी तथा राजस्थान की शैक्षिक व्यवस्था पूरे भारतवर्ष के लिए अनुकरणीय होगी।

आप सभी गुरुजनों और ज्ञान पथिकों को श्रीगुरुपूर्णिमा पर्व की हार्दिक मंगलकामनाएँ...

(वासुदेव देवनानी)

"मेरा मानना है कि हम शिक्षा परिवार के सब सदस्य मिलकर एक ऐसे राजस्थान के निर्माण में लगे हुए हैं जो बालकों में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का निर्माण कर हमारे समाज एवं राष्ट्र को भविष्य के सुनागरिक प्रदान करने में अग्रणी होगा।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 1 | आषाढ़-श्रावण कृ. २०७५ | जुलाई, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. राजकुमार शर्मा

सम्पादक
गोमाराम जीनगर
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- सत्रारम्भ : नव उमंग 5

आलेख

- शाला दर्पण : क्रांतिकारी पहल 6
  अविनाश चौधरी
- ज्ञान संकल्प पोर्टल : **दिलीप परिहार** 8
- अध्यापक दैनन्दिनी : **वृद्धि चन्द गोठवाल** 9
- प्रेरणा-पद (प्रवेशोत्सव) 10
  हनुमान सिंह गुर्जर
- भारत दर्शन गलियारा : देशभक्ति और सामान्य ज्ञान का अनूठा संगम 11
  संदीप जोशी
- वर्षा ऋतु आई-हरियाली लाई 13
  डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित
- संस्थाप्रधान में लीडरशिप 15
  डॉ. डी. डी. गौतम
- 'चाइल्ड केअर लीव' : भावानुवाद 17
  डॉ. रोहताश पचार
- शिक्षा दान से देहदान का अभूतपूर्व सफर 18
  सूर्यप्रकाश जीनगर
- चाल, पैंतरे और सीखने की जुगत 21
  डॉ. मूलचंद बोहरा
- विद्यार्थी दिनचर्या में स्वच्छता का महत्त्व 35
  भूरमल सोनी
- इसे कहते हैं बालक 37
  ओमप्रकाश सारस्वत
- आई. क्यू. बनाम ई. क्यू. 39
  डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली
- बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका 40
  डॉ. गीता दहिया
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड 42
  सिद्धार्थ देचलवाल

रपट

- गुरुवंदन-सखासंगम : कार्यक्रम के विविध रूप : **दीप सिंह यादव** 43
- विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन 45
  जसाराम चौधरी

मासिक गीत

- स्वयं अब जाग कर हमको..... 10
  संकलनकर्त्ता : **मुरलीधर सोलंकी**

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 23-26, 31-33
- पञ्चाङ्ग (जुलाई, 2018) 33
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 34
- शाला प्रांगण 51-52
- चतुर्दिक समाचार 53
- हमारे भामाशाह 54
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 7,46

पुस्तक समीक्षा 47-50

- आप तो बस आप ही हैं!
  लेखक : बुलाकी शर्मा
  समीक्षक : **डॉ. अनिता यादव**
- पगफेरौ, लेखक : छगनलाल व्यास
  समीक्षक : **रामजीवण सारस्वत**
- संजोग, लेखक : ओम प्रकाश तंवर
  समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
- डॉ. जीवन चन्द्र जैन एक विभूति के जीवन की काव्यमय प्रस्तुति
  रचनाकार : टेकचन्द्र शर्मा
  समीक्षक : **श्रीमती इरम खान**

शिविरा पञ्चाङ्ग : 2018-19
विशेष रंगीन चार पृष्ठ
27-30

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

▼ चिन्तन

नरस्य भूषणं रूपं,
रूपस्याभूषणं गुणः।
गुणस्य भूषणं ज्ञानं,
ज्ञानस्याभूषणं क्षमा।।

भावार्थः- नर का भूषण रूप, रूप का भूषण गुण, गुण का भूषण ज्ञान और ज्ञान का भूषण क्षमा है।

पाठकों की बात

- माह मई-जून 2018 अंक में आवरण पृष्ठ पर भूमण्डल की सुरक्षा करते हुए सशक्त मानव हस्त भविष्य की ओर ध्यान इंगित करने वाला है, वहीं 'सामंजस्य और शांति के लिए योग' का प्रतीक चिह्न स्वास्थ्य के प्रति ध्यान आकर्षित करता है। 'अनूठा महाकवि : कबीर' लेख द्वारा हिन्दी साहित्य के सार्वकालिक कवि की प्रासंगिकता सहज रूप में ही परिलक्षित होती है। कबीर ने अपने समय में सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त कुरीतियों व आडम्बरों का निर्भीकता के साथ विरोध किया। उनकी शिक्षाएँ मानव जीवन के मूलभूत सत्य है। 'स्वाधीनता संग्राम का उज्ज्वल नक्षत्र-वीर सावरकर' लेख भारतीय जनमानस को बलिदान के लिए प्रेरित करता है। 'विद्यालय विकास में सामुदायिक सहभागिता' लेख द्वारा शिक्षा विभाग का नवाचार 'अक्षय पेटिका' की जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार की योजनाओं से राजकीय विद्यालयों के विकास में योगदान तो मिलता ही है। समुदाय के साथ घनिष्ठता का सुअवसर भी मिलता है। संपूर्ण अंक आद्यन्त उत्तम सामग्री को समेटे हुए है। संपादक मंडल को साधुवाद।

महेन्द्र कुमार शर्मा, अजमेर

- 'शिविरा' पत्रिका का मई-जून 2018 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। शिविरा के इस संयुक्तांक में 'अपनों से अपनी बात' में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने जहाँ सत्र 2018-19 के प्रारम्भ की शुभकामनाएँ दी, वहीं दो चरणों में होने वाले प्रवेशोत्सव में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान भी प्रेरणास्पद लगा। आम लोगों का प्रवेशोत्सव से लगाव बढ़ेगा तो नामांकन भी असाधारण रूप से वृद्धि की ओर जाएगा। विभिन्न जयन्तियों, उत्सवों से प्रेरणा लेने का सन्देश पाठकोपयोगी है। निदेशक महोदय ने भी 'दिशाकल्प' के माध्यम से जहाँ प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का सन्देश दिया वहीं पीईईओ. द्वारा नामांकन वृद्धि में जनसम्पर्क से अपनी असाधारण भूमिका निभाने का आह्वान सिरमोर है। स्व. श्री शिवरतन थानवी को श्रद्धांजलि में उनके द्वारा शिक्षा व साहित्य क्षेत्र में किया गया अभूतपूर्व कार्य शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए उपयोगी होगा। विश्व योग दिवस पर विस्तृत डॉ. देवाराम काकड़ के आलेख में योग व उससे जुड़े सभी पहलुओं पर विस्तृत जानकारी उपयोगी व प्रेरणादायी है। योग व स्वास्थ्य के बारे में जानकारी, यह निबन्ध पढ़ कर नागरिकों व विद्यार्थियों को दी जा सकती है। कबीर जयन्ती पर डॉ. कृष्णा आचार्य का विस्तृत आलेख कबीर की शिक्षाओं का आज के युग में प्रासंगिकता का विवेचन सटीक व न्यायोचित लगा। संदीप कुमार छलाणी का वीर सावरकर के जीवन व राष्ट्रहित में उनके योगदान तथा देशभक्ति का बखूबी वर्णन मन को छू गया। 'अर्पित यह जीवन' मासिक गीत भी माँ भारती की सेवा की प्रेरणा व त्याग की भावना पाठकों में भरता है। अन्य शैक्षिक व साहित्यिक सामग्री पठनीय व स्तरीय है। शिविरा की टीम के अथक प्रयास को साधुवाद।

रामजी लाल घोड़ेला, आडसर, बीकानेर

- पिछले अंक के मुखावरण में पर्यावरण संरक्षण व योग का बेहतरीन समन्वय के साथ प्रकटीकरण सृजनकर्त्ता की कुशलता को दर्शाता है। सम्पादक मण्डल की टीम भावना पूरी पत्रिका में परिलक्षित होती है। इसी कारण 'शिविरा' का प्रत्येक अंक संग्रहणीय हो गया है। किसी भी शाला के केवल संस्थाप्रधान ही नहीं बल्कि सभी प्रकार के शिक्षकों को इसका व्यक्तिगत सदस्य बनकर लाभ उठाना चाहिए। प्रत्येक संस्थाप्रधान को चाहिए कि इस संबंध में अपनी स्टाफ मीटिंग में चर्चा कर सदस्य बनने हेतु शिक्षकों को व्यक्तिगत रूप से प्रेरित करे। 'शिविरा' प्रबन्धन ने भी इसको बढ़ावा देने हेतु विद्यालयी शुल्क से भी आधी दर में शिक्षकों को उपलब्ध करवाने की व्यवस्था कर रखी है। माह में आने वाली जयन्तियों, उत्सवों आदि के संदर्भ में उपयोगी जानकारी का प्रकाशन आयोजनों और शिक्षण को प्रभावी बना सकती है। मंत्रीजी व निदेशक महोदय का मागदर्शन पूरे शिक्षा विभाग के लिए लक्ष्य प्राप्ति में सहायक रहा है। आलेखों का स्तरीय प्रकाशन शिक्षकों के बौद्धिक स्तर को बढ़ाने में सहायक है।

मनोज भटनागर, बीकानेर

- 'शिविरा' पत्रिका का मई-जून 2018 का अंक मिला। पत्रिका के इस संयुक्तांक में 'अपनों से अपनी बात' में माननीय मंत्री महोदय ने सत्र प्रारम्भ की शुभकामनाएं व प्रवेशोत्सव में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान किया जो महत्वपूर्ण है। 'अनूठा महाकवि : कबीर' लेख द्वारा हिन्दी साहित्य के सार्वकालिक कवि की प्रासंगिकता सहज रूप में ही परिलक्षित होती है। स्व. श्री शिवरतन थानवी को द्वारा शिक्षा व साहित्य क्षेत्र में किया गया अभूतपूर्व कार्य निश्चित ही शिक्षाजगत लिए उपयोगी व स्तुत्य है। संदीप कुमार छलाणी ने वीर सावरकर के जीवन चरित्र का वर्णन कर नई पीढ़ी को प्रेरणा देने की कोशिश की है। शाला प्रांगण पिछले दो माह से प्रकाशित नहीं हुआ। इस अंक को संग्रहणीय बनाने के लिए सम्पादक मण्डल को ढेर सारी बधाईयाँ।

रमणलाल भील, जैसलमेर

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सत्रारम्भ : नव उमंग

नवीन शैक्षिक सत्र में ग्रीष्मावकाश के पश्चात विद्यालयों के पुन: खुलने पर सभी विद्यार्थियों, सम्मानित शिक्षकों, अभिभावकों और भामाशाहों का हार्दिक अभिनन्दन।

सम्पूर्ण राज्य में शैक्षिक उन्नयनकारी नवाचारों से शैक्षणिक गुणवत्ता का वातावरण बना है, साथ ही सम्माननीय संस्थाप्रधानों व शिक्षकों की कठिन साधना का सुफल है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा घोषित परीक्षा परिणामों में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा है, जिसकी समस्त शिक्षा परिवार को बधाई। नए शैक्षिक सत्र में राजकीय विद्यालयों के नामांकन में उत्साहजनक वृद्धि हुई है, जिसका श्रेय प्रवेशोत्सव के प्रथम व द्वितीय चरण के प्रभावी संचालन को जाता है। स्थानीय जनसमुदाय, विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समितियों (SDMC.) के साथ शिक्षकवृंद के बेहतरीन तालमेल से राजकीय विद्यालय सही मायने में समुदाय से अपनत्व पाकर 'अपना-विद्यालय' बन रहे हैं, यह सम्पूर्ण शिक्षा जगत के लिए सुखद है। समस्त PEEO प्रवेशोत्सव के प्रथम व द्वितीय चरण के दौरान अपने पंचायत परिक्षेत्र में चिह्नित अनामांकित/ड्रॉप आउट बालक-बालिकाओं को उनकी आयु अनुरूप कक्षाओं में प्रवेश देकर शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जाना सुनिश्चित कर अपनी-अपनी पंचायत को ड्रॉप आउट फ्री पंचायत 'उजियारी पंचायत' घोषणा के इस कार्य में व्यक्तिश: रुचि लेकर सार्थक पहल करें।

माननीया मुख्यमंत्री महोदया के बजट अभिभाषण की पालना में राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को मिड-डे-मील में 'अन्नपूर्णा दूध योजना' के अन्तर्गत सप्ताह में तीन दिन दूध उपलब्ध करवाया जाना है, 'अन्नपूर्णा दूध योजना' छात्र-छात्राओं के पोषण से जुड़ी राज्य सरकार की महत्त्वपूर्ण योजना है इसके सफल एवं सुव्यवस्थित क्रियान्वयन व संचालन में PEEO की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, अत: 'अन्नपूर्णा दूध योजना सप्ताह' के आयोजन के माध्यम से व्यापक प्रचार प्रसार कर समस्त कार्य सम्पादित करें।

नवीन सत्र में नव प्रवेशी बच्चों के विद्यालयों में आगमन पर माल्यार्पण, तिलकार्चन आदि से स्वागत पश्चात पाठ्यपुस्तकें प्रदान कर उत्साहवर्धन किया जाए, जिससे नवागन्तुक छात्र-छात्राओं को सहज वातावरण मिले। सत्रारम्भ से ही अपूर्व उत्साह व लगन के साथ योजनाबद्ध शिक्षण कार्य का शुभारम्भ हो, विशेषकर क्रियात्मक एवं गतिविधि आधारित शिक्षण को प्राथमिकता मिले जिससे छात्र-छात्राएँ विद्यालयों में नियमितता के साथ सुरुचिपूर्ण अध्ययन कर सकें। सत्रारम्भ में विद्यालय भवन की रंगाई पुताई, सम्पूर्ण परिसर स्वच्छ एवं हराभरा तथा छात्र-छात्राओं हेतु शुद्ध पेयजल, शौचालय सुविधा की उपलब्धता सुनिश्चित हो जिससे विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण का आदर्श वातावरण बने।

समस्त शिक्षक विद्यालयों में विद्यार्थियों के समक्ष आचरण-व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करें जो विद्यार्थियों के अनुकूल हों तथा बच्चे अनुकरण द्वारा संस्कारित हो कर श्रेष्ठ मानव बनें । जिससे विद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ संस्कार केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठापित हो सके।

शुभकामनाओं सहित...

(नथमल डिडेल)

"सत्रारम्भ से ही अपूर्व उत्साह व लगन के साथ योजनाबद्ध शिक्षण कार्य का शुभारम्भ हो, विशेषकर क्रियात्मक एवं गतिविधि आधारित शिक्षण को प्राथमिकता मिले जिससे छात्र-छात्राएँ विद्यालयों में नियमितता के साथ सुरुचिपूर्ण अध्ययन कर सकें।"

शाला दर्पण : क्रांतिकारी पहल

❐ अविनाश चौधरी

तकनीक एवं प्रौद्योगिकी के युग में जहाँ कम्प्यूटर के माध्यम से सूचना सम्प्रेषण को गति मिली है, शाला दर्पण उन्हीं में से एक है। सूचनाओं का आदान-प्रदान, अद्यतन विभाग व विद्यालयों के मध्य सुगम व दोष रहित रहे तथा नवीन जानकारियों से अंतिम कड़ी तक सूचनाओं का सम्प्रेषण तीव्र गति से होता रहे, इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा विभाग में 'शाला दर्पण' के नाम से पोर्टल का प्रादुर्भाव हुआ।

'शाला दर्पण' एक ऑनलाइन स्कूल मैनेजमेंट सिस्टम है इसने हमें विद्यालय, कर्मचारी, विद्यार्थी और विभागीय योजनाओं से सम्बन्धित डेटा को संग्रह एवं विश्लेषण करने का एक मंच प्रदान किया है। इसकी नींव 01 जुलाई 2015 को माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार श्री वासुदेव देवनानी एवं माननीय प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग श्री नरेश पाल गंगवार के कर कमलों द्वारा रखी गई। आधिकारिक रूप से यह पोर्टल दिनांक 12 फरवरी 2016 को अस्तित्व में आया। इस ऑनलाइन पोर्टल का प्रयोग विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में अब तक एक बड़ी सफलता रही है जिसने माध्यमिक शिक्षा विभाग को सफलता के नये आयाम तक पहुँचाया है। इसने कम समय में ही पूरे शिक्षा परिदृश्य को बदलने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्यालयों में व्यवस्थित स्टाफिंग पैटर्न नीति विकसित करने एवं आगे इसे संचालित रखने में यह आधारभूत पहलू के रूप में उभर कर सामने आया है, इसके माध्यम से ही विभाग ने अपने विभिन्न डीपीसी. कार्यक्रमों, नई शिक्षक भर्ती, शिक्षक काउंसलिंग एवं शिक्षक स्थानान्तरण को व्यवस्थित रूप से करने में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता के गैप एवं एक्सेस को चिह्नित कर दूर कर लेने में भी 'शाला दर्पण' ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि 'Shala darpan online management system is none of kind because it is born and grown up in Rajasthan.'

आज त्रुटि रहित सूचना का अद्यतन हम इस पोर्टल के माध्यम से उपयोग मैत्रीपूर्ण रूप से कर सकते हैं जिसके लिए व्यक्ति को विशेष तकनीकी ज्ञान होना आवश्यक नहीं है इसका उपयोग विद्यालय का वह साथी भी कर सकता है जिसे कम्प्यूटर की साधारण जानकारी है 'शाला दर्पण' के विभिन्न मोड्यूल शिक्षा विभाग एवं सरकार की विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहयोगी है।

आज विद्यालयी सूचनाओं का व्यवस्थित स्वरूप 'शाला दर्पण' पर संकलित है जिसे आवश्यकतानुसार विद्यार्थी, शिक्षक एवं विद्यालय के सन्दर्भ में उपयोग किया जा रहा है।

प्रारंभिक चरण में इसकी संरचना को बड़े ही व्यवस्थित एवं निरंतर स्थिर प्रक्रिया के साथ विकसित किया गया और जिसे शनैः-शनैः आगे बढ़ाया गया लेकिन आज 'शाला दर्पण' माध्यमिक शिक्षा राजस्थान के सम्पूर्ण परिदृश्य का प्रतिनिधित्व कर पाने में सक्षम है।

इस प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों से सम्बन्धित प्रत्येक पहलू की जानकारी को संकलित किया जाता है जो विद्यालयों में ड्रॉप आउट अनुपात को कम करने में, छात्रों की दैनिक उपस्थिति को ट्रैक करने, राजस्थान में बालिका शिक्षा अनुपात को बढ़ाने एवं विद्यालयों में आधारभूत संरचना के विकास जैसी महत्त्वपूर्ण योजनाओं के प्रबंधन में सहायता प्रदान करता है।

इसमें विद्यालय के बुनियादी ढाँचे से सम्बन्धित सभी सूचनाओं जैसे पेयजल सुविधा, शौचालय, बिजली की उपलब्धता, कक्षा कक्ष, कम्प्यूटर लैब, खेल मैदान, चारदीवारी, परिसर इत्यादि सूचनाओं को सम्मिलित किया गया है, जो कि हमारे विद्यालयों में आधारभूत संरचना विकसित करने के लिए हमारे सिविल विंग (समग्र शिक्षा अभियान) को प्राथमिकता निर्धारण में सुविधा प्रदान करने में अत्यन्त उपयोगी रहा है। जहाँ प्राथमिक तौर पर इन सब सुविधाओं को विकसित करने की आवश्यकता है।

इसके उपयोग से हमने बड़े पैमाने पर विद्यालयों, कर्मचारियों और छात्रों की जानकारियों को संग्रहित कर लिया है जो हमारे विद्यालयों के संदर्भ में जानकारियों के प्रत्येक पहलू को सम्मिलित करता है। यह विशाल गुणवत्ता पूर्ण डेटा है जो हमें अपनी योजना और प्रबंधन में सहायता करने हेतु विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्येक पहलू को विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से देखने में मदद करता है।

यह भी देखा गया है कि 'शाला दर्पण' पोर्टल के माध्यम से, माध्यमिक शिक्षा विभाग विद्यालयों में अपनी विभिन्न योजनाओं को और अधिक कुशलतापूर्वक क्रियान्वित करने में सफल रहा है। जैसे ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना, मुख्यमंत्री हमारी बेटी योजना, उपचारात्मक शिक्षण योजना, लैप-टॉप और साइकल वितरण योजना एवं विभिन्न प्री-मेट्रिक छात्रवृत्ति योजनाएँ और आइइडीएसएस. आदि योजनाओं का कुशलतापूर्वक संचालन 'शाला दर्पण' के माध्यम से ही किया जा रहा है साथ ही शिक्षा विभाग के अलावा स्वास्थ्य विभाग की कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाएँ जैसे साप्ताहिक आयरन फोलिक एसिड सप्लीमेंट योजना (नीली और गुलाबी गोलियाँ), हाइजिन से सम्बन्धित सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना और डीवोर्मिंग कार्यक्रम जैसी योजनाओं की क्रियान्विति एवं संचालन भी 'शाला दर्पण' पोर्टल के माध्यम से किया जा रहा है।

हमने बहुत ही कम समय में इस ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से अक्षय पेटिका, गरिमा पेटिका, बालिका उत्पीड़न एवं यौनाचार निस्तारण समिति जैसी योजनाएँ आसानी से हमारे विद्यालयों में लागू कर पाए हैं।

इस ऑनलाइन पोर्टल ने माध्यमिक शिक्षा विभाग को न केवल किसी भी नई जानकारी को एकत्र कर पाने में वरन् फील्ड से इनकी अनुपालना को सुनिश्चित करा पाने में भी विभाग को मजबूती प्रदान की है।

शिक्षा विभाग कार्मिकों की कार्यक्षमता को बढ़ाने और कर्मचारियों को अधिक कुशल बनाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता आया है। वर्तमान में इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन 'शाला दर्पण' के उपयोग से ही किया जा रहा है। विद्यालयों के अकादमिक प्रदर्शन के अनुसार स्टार रेटिंग जैसे कार्यक्रम के तहत विद्यालयों को 'शाला दर्पण' पोर्टल के माध्यम से स्टार रेटिंग दी जाती हैं। जिसके आधार पर वे अब तक के प्रदर्शन का मूल्यांकन कर आगे उसे और बेहतर कर सकें। इन सबके साथ ही विद्यालय इस ऑनलाइन प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से अपने विद्यालयों में अतिरिक्त बजट माँग कर पाने में सक्षम है।

आमजन को विद्यालयों से सम्बन्धित सभी आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए नागरिक केन्द्रित मोबाइल ऐप भी विभाग द्वारा विकसित किया गया है जिसे Google Play Store से rajeshaala की वर्ड से सर्च कर एंड्राइड मोबाइल में डाउनलोड कर एक्सेस किया जा सकता है। यह प्रबंधन प्रणाली कक्षाध्यापकों को कक्षा-कक्ष प्रबंधन में एवं प्रधानाचार्य को विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन एवं बेहतर निष्पादन में मदद करती है इसने विद्यालयों में संचालित विभिन्न गतिविधियों जैसे टीसी. जारी करना, परीक्षा परिणाम तैयार करना, शिक्षकों की कार्यमुक्ति एवं कार्यग्रहण, विद्यालयों में रिकॉर्ड संधारण, बोर्ड परीक्षा फॉर्म भरना, बोर्ड के रिकॉर्ड के साथ बोर्ड परीक्षा परिणाम एकीकरण इत्यादि 'शाला दर्पण' के माध्यम से होने के कारण में व्यर्थ लगने वाले समय एवं परिश्रम को कम कर दिया है। इन गतिविधियों को अब राजस्थान में 'शाला दर्पण' ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से विद्यालयों में किया जाता है। ये हमारे विद्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की कार्यक्षमता एवं गुणवत्ता को भी बढ़ाता है और उनके काम में मानसिक तनाव से भी मुक्त रख पाने में मदद करता है। इसके लाइव स्ट्रीमिंग डाटा के कारण 'शाला दर्पण' पर उपलब्ध समस्त डाटा रियल टाइम डाटा है।

इस विशाल और क्वालिटी डेटा बेस पोर्टल को चलाने एवं विद्यालयों की सहायता के लिए 24×7 कार्य करने वाली एक उत्साही, उच्च योग्य आइटी. फ्रेंडली कर्मचारियों की एक पूरी टीम 'शाला दर्पण' प्रकोष्ठ जयपुर एवं बीकानेर में कार्यरत है।

1. यह टीम दो समूहों में है एक जो कि मोनिटरिंग के उद्देश्य से निदेशालय बीकानेर में कार्यरत है। वे डेटा गुणवत्ता के उद्देश्य से विभिन्न रिपोर्टिंग टूल्स के माध्यम से डेटा गुणवत्ता की दृष्टि से डाटा पर निगरानी रखती हैं एवं दूसरी टीम आरसीएसइ. मुख्यालय जयपुर में हमारी प्रोग्रामिंग टीम एन.आइ.सी. के साथ मिल कर विभिन्न मोड्यूल पर अनुसंधान और विकास के उद्देश्य से कार्य करती हैं।
2. विद्यालयों के लिए इन विभिन्न डाटा मोड्यूल्स में डेटा एंट्री में मदद करने और उनके लॉगिन में आई किसी भी समस्या का हल करने के लिए एक हेल्प डेस्क टीम की स्थापना की गई है जो सम्पर्क न. **0141-2700872** पर उपलब्ध है।
3. विद्यालयों में शाला दर्पण से सम्बन्धित किसी भी समस्या सम्बन्धी पत्र व्यवहार हेतु मेल आइडी 'rmsaccr@gmail.com' उपलब्ध है। कोई भी कार्मिक संस्थाप्रधान के माध्यम से मेल के द्वारा हमें अपनी समस्याएँ भेज सकते हैं।
4. 'शाला दर्पण' का एक यू-ट्यूब चैनल 'शाला दर्पण जयपुर राजस्थान' के नाम से बनाया गया है, जिसे 'You-tube' पर 'shaala darpan jaipur rajasthan' के नाम से बनाया गया है। यहाँ पर शाला दर्पण से संबंधित सभी मोड्यूल्स के वीडियो Tutorials में 'शाला दर्पण' के विभिन्न मोड्यूल्स में किस तरह से डाटा एन्ट्री की जानी है, के बारे में समस्त जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती है। जिन्हें अब तक 76178 लोगों ने 1.31 लाख मिनिट्स से भी ज्यादा समय you tube पर देखा है। साथ ही इन सभी वीडियोज के लिंक आप विद्यालय लॉगइन पर उपलब्ध वीडियो गैलेरी से भी प्राप्त कर सकते हैं।

5. इसके अलावा फेसबुक पेज 'शाला दर्पण' भी है। यहाँ 8 हजार से अधिक विद्यालय प्रिंसिपल/शिक्षक इसके सदस्य हैं, सभी सदस्य अपने प्रश्न/समस्याएँ साझा करते हैं और एक दूसरे को जवाब देते हैं, परोक्ष रूप से 8 हजार सदस्य स्वयं के लिए एक सहायता डेस्क के रूप में काम कर रहे हैं।
6. समय-समय पर 'शाला दर्पण' हमारे प्रधानाचार्यों एवं 'शाला दर्पण' incharges के साथ 'शाला दर्पण कार्यशालाओं' का आयोजन करते हैं और शाला दर्पण में उपलब्ध रिपोर्ट मोड्यूल्स को किस तरह उनके लिए और अधिक यूजर फ्रेंडली और आसान बनाया जा सके, के बारे में जानने के लिए विभिन्न कार्यालयों एवं विद्यालयों का दौरा करते हैं।
7. शाला दर्पण टीम संस्थाप्रधानों एवं शाला दर्पण In-Charges को 'शाला दर्पण' से सम्बन्धित योग्यता स्तर को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्लेटफॉर्म्स से उनको प्रशिक्षण प्रदान करती है।

यह सिर्फ एक शुरुआत है, 'शाला दर्पण' के माध्यम से विभाग में कागज के उपयोग को कम से कम करने और 'शाला दर्पण' को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में हम निरंतर लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

सहायक निदेशक
शाला दर्पण प्रकोष्ठ,जयपुर।
मो: 9549373123

मुख्यमंत्री विद्यादान कोष

ज्ञान संकल्प पोर्टल

❒ दिलीप परिहार

राजकीय विद्यालयों को वित्तीय सम्बल प्रदान करने तथा आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण हेतु स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा ज्ञान संकल्प पोर्टल एवं मुख्यमंत्री विद्यादान कोष स्थापित किया गया है। इस पोर्टल का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री महोदया द्वारा 5 अगस्त 2017 को किया गया। इस पोर्टल की सहायता से भामाशाह/दानदाता/औद्योगिकी इकाइयाँ शिक्षा के प्रसार में अपना सहयोग प्रदान कर सकती है। इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की सहायता से सी.एस.आर. कम्पनियों/ दानदाताओं व क्राउड फण्डिंग के माध्यम से आवश्यक धन राशि का संग्रहण व प्रबंधन किया जा रहा है।

विशेषताएँ :

- पारदर्शिता।
- राज्य सरकार की प्राथमिकताओं के अनुरूप कार्य चयन।
- विद्यालय की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप परियोजनाएँ।
- चालू परियोजनाओं की ऑनलाइन ट्रेकिंग की सुविधा।
- दानदाताओं हेतु सुविधाजनक एवं चयन की स्वतंत्रता
- आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के तहत छूट का प्रावधान

सहयोग के प्रकार

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से सी.एस.आर. कम्पनियाँ/ भामाशाह/ व्यक्तिगत दानदाता चार प्रकार से सहयोग प्रदान कर सकते हैं–

- **सपोर्ट एक प्रोजेक्ट:** पोर्टल पर पूर्व में प्रदर्शित प्रोजेक्ट को सपोर्ट कर सहयोग प्रदान करना।
- **विद्यालय गोद लेना:** पोर्टल पर दर्शाये गये विद्यालय को तीन वर्ष के लिए गोद लेना। जिसमें आभारभूत आवश्यकताओ की पूर्ति के साथ तीन वर्ष के आवर्ती खर्च हेतु सहयोग प्रदान करना।
- **स्वयं का प्रोजेक्ट बनाकर सहयोग प्रदान करना:** भामाशाह या सी.एस.आर. कम्पनियाँ पूर्व प्रदर्शित प्रोजेक्ट के अलावा स्वयं के प्रोजेक्ट बनाकर, प्रमाणित होने के पश्चात सहयोग प्रदान कर सकता है।
- **मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में सहयोग:** कोई भी दानदाता/भामाशाह मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में सीधे ही राशि हस्तान्तरित कर सहयोग प्रदान कर सकता है।
- **डोनेट टू ए स्कूल:** कोई भी दानदाता/ भामाशाह राजस्थान के किसी राजकीय प्रा./उप्रा./मावि./उमा. विद्यालय को ऑनलाईन सहयोग प्रदान कर सकता है।

प्रोजेक्ट क्रियान्वयन

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से सी.एस.आर. कम्पनियाँ/भामाशाह अपने प्रोजेक्ट को राजस्थान के किसी भी जिले के किसी ब्लॉक के किसी भी विद्यालय में तीन प्रकार से क्रियान्वित कर सकता है–

- **स्वयं के द्वारा:** सी.एस.आर. कम्पनी/ भामाशाह अपने प्रोजेक्ट की स्वीकृत के पश्चात् स्वयं अपने प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन कर सकती है।
- **किसी एजेन्सी के माध्यम से:** कोई सी.एस.आर. कम्पनी/भामाशाह स्वयं क्रियान्वित नहीं कर अपने किसी पार्टनर के साथ क्रियान्वित कर सकती है।
- **शिक्षा विभाग द्वारा:** कोई सी.एस.आर. कम्पनी/भामाशाह उपर्युक्त दोनों प्रकार से क्रियान्वित नहीं कर सकती है तो वह शिक्षा विभाग द्वारा अपने प्रोजेक्ट का कार्य करवा सकती है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल: उपयोगकर्त्ता हेतु सुविधाएँ

- **उपयोगकर्त्ता का डैशबोर्ड:** कोई भी व्यक्तिगत दानदाता/ भामाशाह/ सी.एस.आर. कम्पनी/ एन.जी.ओ. ज्ञान संकल्प पोर्टल पर रजिस्टर कर अपने डैशबोर्ड की मदद से अपने प्रोजेक्ट व सहायता राशि की अद्यतन रिपोर्ट देख सकता है।
- **मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में ऑन लाइन सहयोग:** पोर्टल राजस्थान सरकार के राजस्थान पेमेंट पोर्टल से जोड़ दिया गया है जिसकी सहायता से दानदाता ऑनलाईन राशि हस्तान्तरित कर सकता है।
- **80 जी हेतु प्राप्ति रसीद:** भामाशाह/ दानदाता ऑनलाइन मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में दी गई सहयोग राशि की ऑनलाइन रसीद प्राप्त कर सकता है।

पोर्टल के माध्यम से सहयोग पर प्रोत्साहन : ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से किए गए योगदान पर प्रोत्साहन को नवीन विद्यालय भामाशाह योजना के दिशा–निर्देशों में

शामिल किया है। पोर्टल के माध्यम से किए गए सहयोग पर दानदाता/भामाशाह/औद्योगिक इकाइयों को नवीन विद्यालय भामाशाह योजना के दिशा-निर्देशों अनुरूप योग्यता अनुसार स्वत: प्रोत्साहन प्राप्त हो जाएगा उसे किसी प्रकार के आवेदन की आवश्यकता नहीं होगी।

ज्ञान संकल्प पोर्टल व मुख्यमंत्री विद्यादान कोष: प्रगति ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अब तक 31 करोड़ से अधिक की राशि के 43 प्रोजेक्ट अनुमोदित किए जा चुके हैं तथा मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में 9 करोड़ से अधिक का सहयोग प्राप्त हुआ है। पोर्टल पर 1000 से अधिक उपयोगकर्त्ता रजिस्टर हो चुके है।

मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में प्राप्त राशि से 33 जिलों में एक-एक शहरी आदर्श विद्यालय को सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स के रूप में विकसित किए जाने का लक्ष्य रखा है। जिसमें से अभी तक 15 जिलों के 15 शहरी आदर्श विद्यालयों हेतु 50-50 लाख रूपये की राशि स्वीकृत की जा चुकी है।

राजस्थान के माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा के समस्त विद्यालयों में कार्यरत संस्थाप्रधान एवं विद्यालय के समस्त कार्मिक यथासंभव सहयोग करते हुए अपना रजिस्ट्रेशन ज्ञान संकल्प पोर्टल पर करवाएँ। साथ ही आप से आग्रह है कि इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार स्थानीय भामाशाह एवं प्रवासी राजस्थानियों के मध्य करते हुए जनसहभागिता का राजस्थान के शिक्षा के क्षेत्र में अधिकाधिक सहयोग ऑन-लाइन पोर्टल के माध्यम से लिया जा सके, ऐसा प्रयास हो। ज्ञान संकल्प पोर्टल एवं मुख्यमंत्री विद्यादान कोष से जुड़ने एवं इससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु आप निम्नांकित मे से किसी का भी उपयोग कर सकते हैं:-

Website :- http://gyansankalp.nic.in
Email:- off.csr.dse@rajasthan.gov.in, csr.dir.bkn@gmail.com, ad.csr.dse@rajasthan.gov.in
Facebook Page:- https://www.facebook.com/GyanSankalp/
Twitter Page: https://twitter.com/gyan_sankalp
Youtube Channel:- https://www.youtube.com/channel/UCYD-6-_IaTE_k13nSW9IEAw

सहायक निदेशक (सी.एस.आर.)
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
मो. 90017-39911

अध्यापक दैनन्दिनी

❐ वृद्धि चन्द गोठवाल

कार्य कैसा ही हो, पूर्व नियोजित हो तो उसकी क्रियान्विति सुन्दर, सरल एवं समय पर होती है। व्यक्ति के सम्मुख शिक्षण कार्य हो अथवा कोई अन्य, परन्तु उद्देश्य पूर्ति हेतु योजनाबद्ध कार्य बहुत जरूरी है। सत्रारम्भ में शिक्षक को अपने विषय का प्रभावी शिक्षण कार्य कब, कैसा, कितना कराना है, इसके लिए एक डायरी देने का प्रावधान है। उसे अध्यापक दैननन्दिनी के नाम से जाना जाता है। इसके महत्त्व को समझना एवं सदुपयोग करना बहुत आवश्यक है। क्योंकि शिक्षण योजना का महत्त्व समझकर ही विभाग द्वारा अध्यापक दैनन्दिनी का प्रावधान है। एक शिक्षक के लिए व्यापारी की तरह पहले 'लिख-फिर पढ़ा' सूक्ति की पूर्ति में डायरी बहुत लाभदायक है। डायरी भरना कोई जटिल एवं लम्बा-चौड़ा कार्य नहीं, बल्कि शिक्षण में निष्णात शिक्षक के लिए नियमित रुचि का कार्य है। मैं अपने चालीस वर्ष की सेवा के आधार पर यह कह सकता हूँ कि अध्यापक दैनन्दिनी छात्र एवं शिक्षक के लिए जीवनोपयोगी है। जो प्रधानाध्यापक एवं प्रधानाचार्य कक्षा शिक्षण कराते हैं वे भी अध्यापक दैनन्दिनी का महत्त्व समझकर इस का उपयोग करते हैं। यह तो शिक्षण कार्य का एक आदर्श एवं आत्मावलोकन भरा कार्य है। अतः इसके प्रति उदासीनता के भाव अशोभनीय हैं। प्रश्न एवं सन्देह भरी बात यह है कि क्या विद्यालय में शिक्षकों द्वारा टीचर्स डायरी का अनिवार्य एवं समुचित सदुपयोग शत-प्रतिशत होता है?

शिक्षक डायरी भरने का कार्य दो प्रकार से करते हैं। दैनिक अथवा साप्ताहिक रूप में शिक्षण सामग्री का उल्लेख करना होता है। इसके अतिरिक्त डायरी में अन्य आवश्यक जानकारियाँ देनी होती है। जिनकी पूर्ति तो शिक्षक द्वारा अपनी सुविधा एवं जरूरत माफिक की जाती है। डायरी भरने की औपचारिकता एवं अरुचि देखकर प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षक को कर्त्तव्यपरायणता का स्मरण कराया जाता है, जो विचारणीय बिन्दु है। डायरी शिक्षक का बल है एवं कर्त्तव्य का प्रमाण है। इसके प्रति अरुचि एवं अनियमितता तो सपने में भी नहीं होना चाहिए। यह औपचारिक कार्य नहीं बल्कि यह शिक्षक का दर्पण है। जो शिक्षक विधिवत नित्य ही डायरी का उपयोग करते हैं वे अपना स्वाभिमान बनाए रखते हुए कर्त्तव्यपरायणता का प्रमाण दे सकते हैं। एक शिक्षक का संस्थाप्रधान ने वेतन रोक दिया। बात आगे बढ़ी, जाँच हुई। शिक्षक पर आरोप लगाया गया कि ये छात्रों को कक्षा में पढ़ाते नहीं और ट्यूशन करते हैं। शिक्षक ने अपने पक्ष में जाँचकर्त्ता के सम्मुख अपनी दैनिक डायरी रखते हुए कहा कि श्रीमान् मेरे अध्यापन कार्य का सच्चा प्रमाण यह डायरी है, जिस पर हमारे प्रधानाध्यापक जी ने शिक्षण के प्रमाणित हस्ताक्षर कर रखे हैं। ट्यूशन न तो करता हूँ और न छात्रों को कभी प्रेरित किया। सत्यापन के लिए कक्षा के बालकों से पूछताछ की जा सकती है। आरोप बेबुनियाद है एवं मुझे परेशान करने के लिए मेरा वेतन रोका है, मुझे बिना मतलब दबाया जाता है। शिक्षक की सफाई के सामने संस्थाप्रधान के लिए कहने को कुछ नहीं, बल्कि अध्यापक दैनन्दिनी ने सारी समस्या सुलझा दी।

इस कार्य को प्रभावी बनाने के लिए यदि विद्यालय निरीक्षण के समय अध्यापक दैनन्दिनी की सदुपयोगिता का मूल्याँकन होने लगे एवं सत्रारम्भ में दी गई डायरियाँ सत्रान्त में पुनः जमा करके एक वर्ष तक सुरक्षित रखने का प्रावधान हो जाए तो अध्यापक दैनन्दिनी शिक्षक की मुख्य पसन्द बन जाएगी। अध्यापक दैनन्दिनी एक ऐसा रिकॉर्ड है जो शिक्षक को अपने कर्त्तव्य का अहसास दिलाता है। बशर्ते शिक्षक डायरी भरना अपने जीवन का अभिन्न अंग समझे।

से. नि. व्याख्याता, कपासन, चितौड़गढ़ (राज.), **मो. 9414732090**

मासिक गीत

स्वयं अब जाग कर हमको

स्वयं अब जाग कर हमको, जगाना देश है अपना।
जगाना देश है अपना, जगाना देश है अपना।।

हमारे देश की मिट्टी हमें प्राणों से प्यारी है,
यहीं के अन्न-जल वायु परम श्रद्धा हमारी है,
स्वभाषा है हमें प्यारी, औ प्यारा देश है अपना।

जगाना देश है अपना....।।2।।

चहूँ दिशि दिख रहा है देश-धरती पर महासंकट,
अनेकों आपदाओं का है पग-पग पर लगा जमघट,
विपत् के काल में से चल रहा है देश यह अपना।।

जगाना देश है अपना....।।2।।

पुनः लेकर नया संकल्प, मिल-जुल हम चलें आगे,
सुरक्षी हो जन्म-धरती और भागें कष्ट सब भागे
बहुत दिन का अधूरा पूर्ण करना एक यह सपना।
जगाना देश है अपना....।।2।।

नहीं है अब समय कोई गहन निद्रा में सोने का
समय है एक होने का, न मतभेदों में खोने का
बढ़े बल राष्ट्र का जिससे वो करना मेल है अपना।।

जगाना देश है अपना.....।।2।।

स्वयं अब..... अपना।।

संकलनकर्त्ता: मुरलीधर सोलंकी
जवाहर स्कूल के पास,
भीनासर, बीकानेर-334403
मो. 9414012038

प्रवेशोत्सव

प्रेरणा-पद

❐ हनुमान सिंह गुर्जर

सुन रे अंकित सुन विमलेश,
सुन शीला के पिता रमेश।
इस बार सभी ने ठान लिया,
सरकारी स्कूल में लेंगे प्रवेश।।1।।

निःशुल्क जहाँ सारी चीजें,
बिन पैसे सब-कुछ मिलता है।
बिन पैसे ड्रेस-किताबें मिले,
पैसों से क्या कोई पढ़ता है?।।2।।

बिन पैसे भोजन मिलता है,
रोज बदल कर मिनू विशेष।
फल मिलते मौसम अनुसार,
टीचर योग्य हैं अतिविशेष।।3।।

वे बनते हैं कड़ी मेहनत से,
देकर परीक्षा हजारों में एक।
उनकी योग्यता पद से ज्यादा,
देते परीक्षा वे और अनेक।।4।।

पूर्ण योग्यताधारी शिक्षक,
रखते पर्यावरण को शुद्ध।
ना गली-कुचली में स्कूल,
रास्ता उनका ना अवरुद्ध।।5।।

और परीक्षा नित बच्चों की,
होती एक से बढ़ कर एक।
ना बच्चों को कोई परेशानी,
ना शिक्षक लेते फीस अनेक।।6।।

सब कुछ हमने देख लिया,
अब हमने यह ठाना है।
जहाँ से बनते योग्य सभी,
सरकारी स्कूल में जाना है।।7।।

जहाँ से बनते डाक्टर-शिक्षक,
वहाँ हमें भी पढ़ने जाना है।
इन स्कूलों से बनते अधिकारी,
यह सबको हमें दिखाना है।।8।।

फीस नहीं है, ना कुछ और,
और परेशानी नहीं कोई।
माँ-बाप करें अपना धन्धा,
बच्चे भी पढ़े बेफ्रिक होई।।9।।

कमरे बड़े व ऊँची मंजिल,
बच्चे बढ़ते जाएँ निरन्तर।
साफ आँगन और शौचालय,
जीवन में नित आये अन्तर।।10।।

सब सुविधाएँ हैं उपलब्ध,
मैदान, लैब, पुस्तकालयों में।
नित नये तरीकों से होती,
अब स्पर्द्धा इन विद्यालयों में।।11।।

वहाँ निंदा नहीं, ना चुगली है,
ना दण्ड है, ना उत्पीडन है।
नभ में उड़ते ज्यों पंछी,
स्वच्छंद सभी का जीवन है।।12।।

बालक है सब एक समान,
ना उनमें कोई कमजोरी है।
वहाँ नहीं जरूरत रुपयों की,
मानो अनमोल तिजोरी है।।13।।

हर तरह की छुट्टी हैं उनमें,
नित होमवर्क नित पी.टी. है।
बच्चों को करते प्रेम सदा,
ज्यादा करें तो बस सिटी है।।14।।

अद्भुत बन गई अब शालाएँ,
देखो सरकारी राजस्थान में।
मेरिट में आते हैं बालक,
नाम कमाया हिन्दुस्तान में।।15।।

उनका लोहा चारों ओर,
सब मानें, सब कहते हैं।
उन बच्चों को सुकून सदा,
जो सरकारी शाला में पढ़ते हैं।।16।।

क्या कहा? शिक्षा पर खर्चा,
ना बाबा! ना रुपया एक।
सरकारी में पढ़कर लाखों,
निकले उत्तम एक से एक।।17।।

आर.ए.एस., अतिरिक्त कलक्टर
शाहबाद-बारां
मो: 9414570200

भारत दर्शन गलियारा

देशभक्ति और सामान्य ज्ञान का अनूठा संगम

❒ संदीप जोशी

विद्यार्थी छात्र जीवन से ही देशभक्ति का पाठ पढ़ें, भारत को जाने, भारत को समझें, भारत पर गर्व करें और इसके साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भारत संबंधी अपने सामान्य ज्ञान में वृद्धि करें ऐसे कुछ उद्देश्यों को लेकर यह 'भारत दर्शन गलियारा' बनाने का काम वर्ष 2012 से शुरू किया था। किसी महापुरुष ने कहा भी है कि राष्ट्र भक्ति सभी सद्गुणों की जननी है। बचपन से ही यदि बालक को देशभक्ति के संस्कार दिए जाएँ तो भावी जीवन में आने वाली तमाम चुनौतियों का वह मुकाबला कर पाएगा। देश का भावी नागरिक यदि देशभक्त है तो वह बेईमानी नहीं करेगा, भ्रष्टाचार नहीं करेगा, जातिवाद- भाषावाद-क्षेत्रवाद-नक्सलवाद-आतंकवाद जैसी समस्याओं से न केवल स्वयं दूर रहेगा वरन् इन चुनौतियों का सामना भी कर सकेगा। इतना ही नहीं हम देशभक्ति को दैनिक जीवन से भी जोड़ कर देख सकते हैं। छात्र यदि देशभक्त है तो वह संविधान का सम्मान करेगा, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान नहीं पहुँचाएगा, बिजली-पानी का दुरुपयोग नहीं करेगा, कानून व्यवस्था का पालन करेगा, यातायात के नियमों का पालन करेगा .....इत्यादि। व्यक्तिगत जीवन से जुड़े ऐसे ही बहुत सारे सद्गुण और व्यवहार इस देशभक्ति के भाव से जुड़े हुए हैं।

बचपन में बालक की देखने की, सुनने की, समझने की, अनुकरण करने की, विश्लेषण करने की और याद करने की क्षमताएँ अद्भुत होती हैं। इस जीवन से यदि बालक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मन बनाना शुरू करेगा तो भावी जीवन में भी इसका लाभ मिलेगा। कुछ ऐसे ही विचारों को लेकर मन में 'भारत दर्शन गलियारा' की संकल्पना आई। लगभग दो ढाई वर्ष के परिश्रम और तथ्य संग्रह के बाद एक अच्छा प्रभावी 'भारत दर्शन गलियारा' बनकर तैयार हुआ जिसकी वर्तमान में राजस्थान के शिक्षा जगत में बहुत चर्चा है। माननीय शिक्षा मंत्री जी स्वयं इस गलियारे को देखने जालोर जिले के मेरे विद्यालय गोदन में आए थे। हाल ही में माननीय शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी जी ने विधानसभा के बजट सत्र में इस बात की घोषणा की है कि राजस्थान के सभी विद्यालयों में ऐसे भारत दर्शन गलियारे बनाए जाएँगे। सोशल मीडिया पर चर्चा और व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर अब तक राजस्थान के 9 जिलों के 15 विद्यालयों में ऐसे 'भारत दर्शन गलियारे' तैयार हो चुके हैं। आइए इस 'भारत दर्शन गलियारे' को और इसके पीछे के मूल भाव को विस्तार से समझते हैं।

भारत दर्शन गलियारा- उद्देश्य और प्रस्तावना- भारत .....हम सब की प्रेरणा का केंद्र और पूरे विश्व की आशा का केंद्र है। पश्चिमी देशों के विद्वानों ने इसे पूरे संसार की माँ स्वीकार किया। यह भूमि इतनी पवित्र है कि यहाँ पर स्वयं भगवान ने अनेक बार जन्म लिया।

शास्त्रों में जिसके बारे में लिखा गया-

हिमालयं समारभ्य, यावदिंदुसरोवरम्।
तम् देवनिर्मितं देशम् हिंदुस्तानम् प्रचक्षते।।

अर्थात् हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक का जो भू भाग है वह देवताओं द्वारा निर्मित है एवं इसे हिंदुस्तान के नाम से जाना जाता है।

विश्व के अन्य भागों पर जब लोग पशुओं से मनुष्य होने की प्रक्रिया में रहते थे, तब यह देश मनुष्य से देवत्व की यात्रा कर चुका था। शेष संसार जब विश्व के अज्ञात भू-भागों की खोज का प्रयास कर रहा था यह देश उसके हजारों साल पहले ही सौर मंडल, तारामंडल की गति-मती एवं स्थिति की शक्ति से परिचित हो चुका था। शेष विश्व जब आखेट युग की परंपरा अनुसार स्वयं की भूख मिटाने को संघर्षरत था तब भारतीय साहित्य 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का उद्घोष करके प्राणी मात्र को सभ्यता और अभयता प्रदान कर रहा था।

जब शेष विश्व स्वयं से अनभिज्ञ था तब भारत पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का अनुसंधान करके मानवता के आवश्यक मापदंड़ स्थापित कर चुका था....

ऐसा गौरवशाली भारत, वैभवशाली अतीत और आज का वर्तमान दृश्य कभी-कभी कुछ विद्वान प्रश्न उठाते हैं कि क्या भारत खत्म हो जाएगा?

मैकाले की शिक्षा पद्धति में पढ़ने वाली नई पीढ़ी के कुछ बुद्धिजीवियों को तो भारत कुछ लगता ही नहीं! स्वत्व पर कोई गर्व नहीं। अपना देश कुछ नहीं कर सकता ऐसा भाव मन में गहराई तक समा गया है।

पढ़ा-लिखा वर्ग भी निराशा, उत्साह हीनता के वातावरण में देश के बारे में नकारात्मक चिंतन ही करता दिखता है।

आइए! हम अपने अतीत का स्मरण करें, वर्तमान का चिंतन करें ताकि भविष्य को अपने हाथों में ले सकें।

इस 'भारत दर्शन गलियारे' के माध्यम से यही एक विनम्र प्रयास किया गया है। नई पीढ़ी में देश के प्रति सम्मान और गौरव का भाव बढ़े, सब प्रखर देशभक्त बनें, जातिवाद, भाषावाद एवं क्षेत्रवाद की संकीर्णता से ऊपर उठकर राष्ट्रीय चरित्र का गठन करें और साथ ही साथ विद्यालयी जीवन से ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भारत का सामान्य ज्ञान भी तैयार हो जाए।

पूरा विश्व भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है अतः आइए! भारत को जानें, अपने 'स्व' का विस्तार करें और 'वसुधैव कुटुंबकम्' को साकार करें।

कैसा हैं यह गलियारा- 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की' फिल्म जागृति का यह गाना एक समय देश की हर जुबान पर था जिसमें एक शिक्षक गीत के माध्यम से ही बच्चों को पूरे भारत का दर्शन करा देता है।

हमने भी अपने सरकारी विद्यालय में ऐसी ही पूरे भारत की झाँकी सजाई है और नाम दिया है 'भारत दर्शन गलियारा'। यदि आप अपने विश्वगुरु कहे जाने वाले भारत देश के गौरवशाली और स्वर्णिम इतिहास से रूबरू होना चाहते हैं, भारत के बारे में सामान्य ज्ञान को बढ़ाना चाहते हैं, भारत के महापुरुषों की जीवनी से शिक्षा ग्रहण करना एवं वर्तमान परिदृश्य में विश्व में भारत की स्थिति के बारे में जानना चाहते हैं, तो राजस्थान के उन सरकारी

विद्यालयों में चले आइये, जहाँ ये गलियारे विकसित हुए हैं। इन गलियारों को देखकर ऐसा लगता है जैसे विद्यालय के बरामदे में पूरा भारत उतर आया हो।

दरअसल इस नवाचार में विद्यालय में कक्षा कक्षों के आगे स्थित बरामदे का नाम 'भारत दर्शन गलियारा' दिया है। जिसमें घूमते हुए पूरे भारत का दर्शन हो जाता है। गलियारे में चित्र मानचित्रों, फ्लेक्स, भित्ति चित्र, दीवार लेखन की सहायता से 300 से अधिक तथ्य 121 चित्र और आठ मानचित्रों का सारगर्भित समावेश किया गया है।

जालोर के गोदन गाँव के विद्यालय में बने इस गलियारे को देखने के लिए राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी, गृहमंत्री श्री गुलाबचंद कटारिया समेत अनेक मंत्री, सांसद, विधायक, जन प्रतिनिधि, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं शिक्षा विभाग के आला अफसर भी विद्यालय में पहुँचे और सबने सराहना की है।

क्या है गलियारे में– विद्यालय का गलियारा ज्ञान का खजाना है। एक प्रकार से '– 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ भारत' भी कह सकते हैं। इसे तीन भागों में बाँटा गया है। इसमें भारत के प्राचीन गौरव की शृंखला में प्राचीन भारतीय विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, वैदिक गणित, संस्कृत, आयुर्वेद, योग, विमान शास्त्र, नौकायन, आर्यभट्ट, वराह मिहिर, भास्कराचार्य, तक्षशिला, नालंदा के विश्वविद्यालय, बोधायन प्रमेय, पाई और समय के न्यूनतम मान की गणना, शतरंज की खोज, शल्य चिकित्सा जगदीश चंद्र बसु के प्रयोगों से संबंधित अनेक गौरवशाली एवं ज्ञानवर्धक तत्त्वों का समावेश है।

वर्तमान की गौरवशाली उपलब्धियों में जयपुर फुट, चेन्नई का शंकर नेत्रालय, आइ.आइ.एम.; आइ.आइ.टी., मेडिकल टूरिज्म, सर्वाधिक दूध उत्पादन, भारत हीरे तराशने का सबसे बड़ा केंद्र, सुपर कंप्यूटर, क्रायोजेनिक इंजन, सर्वाधिक फीचर फिल्म, एशियन पेंट्स, पेंटियम के जनक विनोद धाम, सन माइक्रोसिस्टम के सृजक विनोद खोसला, सर्वाधिक शाखा वाली बैंक एसबीआई, विश्व का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क, क्रिकेट किंग सचिन तेंदुलकर से लेकर लक्ष्मी मित्तल तक की उपलब्धियाँ, महात्मा गाँधी, विश्वनाथ आनंद, डॉ. कलाम, डॉ. राधाकृष्णन से लेकर उपग्रह प्रक्षेपण क्षमता तक का उल्लेख किया गया है। विद्यार्थियों का गौरव एवं स्वाभिमान जागृत करने के लिए इस गलियारे में भारत के अतीत एवं वर्तमान की गौरवशाली उपलब्धियों के साथ ही भविष्य के भारत की झलक भी दिखाई गई है जिसमें अर्थव्यवस्था, कृषि, अंतरिक्ष क्षेत्र, युवा, जनसंख्या, नए राजमार्ग जैसे अनेक तथ्यों द्वारा सुनहरे भारत के भविष्य की संभावना का चित्रण किया गया है।

प्रारंभ ब्रह्मांड की कथा से– भारत दर्शन गलियारे का प्रारंभ ब्रह्मांड से किया गया है। क्रमशः आकाशगंगा, सौरमंडल, नौ ग्रह, पृथ्वी, महाद्वीप–महासागर, एशिया होते हुए भारत का परिचय करवाते हुए इंदिरा गाँधी और प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा के मध्य हुए संवाद का उल्लेख किया गया है। (तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा यह पूछने पर कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है जवाब में राकेश शर्मा ने कहा था **सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तां हमारा।**

पिल्लर बने ज्ञान स्तंभ– बरामदे के पिल्लरों को ज्ञान स्तंभ का नाम दिया है। इन ज्ञान स्तम्भों पर एक तरफ विभिन्न राष्ट्रीय प्रतीकों का सुंदर चित्र वॉल पेंटिंग के माध्यम से बनाया गया है। वहीं दूसरी ओर ज्ञान और जानकारियों का खजाना भरा गया है। इन पिल्लरों पर भारत, उसके नाम का अर्थ, जनसंख्या, क्षेत्रफल, साक्षरता, स्त्री–पुरुष अनुपात, स्थल सीमा, जलसीमा, पड़ोसी राष्ट्र, विभिन्न राज्य– राजधानियाँ और उनकी भाषाएँ, वेद, वेदांग, उपनिषद, पुराण, षड्दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता महत्त्वपूर्ण फसलें–उनके उत्पाद राज्य, विभिन्न खनिज– उनकी उपलब्धता वाले स्थान, नदियाँ उनके उद्गम, लंबाई, ऐतिहासिक इमारतें एवं उनके शहर, भारत में सबसे ऊँचा, लंबा, छोटा जैसी जानकारियाँ, विभिन्न प्रदेशों के लोक नृत्य इत्यादि का समावेश है। आते जाते चलते फिरते छात्र इन्हें देखकर, पढ़कर सामान्य ज्ञान का अभिवर्धन कर रहे हैं।

आजादी का गौरव– सन 1757 के प्लासी युद्ध से लेकर 1950 में गणतंत्र बनने तक की विभिन्न घटनाओं का गलियारे में समावेश किया गया है। स्वतंत्रता संग्राम के 18 दुर्लभ चित्रों का भी समावेश गलियारे का आकर्षण एवं उपयोगिता बढ़ाने वाला सिद्ध हो रहा है

मानचित्र विशेष आकर्षण– भारत दर्शन गलियारे का विशेष आकर्षण इसके मानचित्र हैं। भारत के राजनीतिक एवं प्राकृतिक मानचित्रों के अलावा कुछ विशेष मानचित्र भी बनाए गए हैं इसमें आजादी की लड़ाई के वीर योद्धाओं, विभिन्न कलाकारों, वैज्ञानिकों एवं समाज सुधारकों के जन्म स्थान को दर्शाया गया है। इसके अलावा चार धाम, चारमहाकुंभ स्थल, ऐतिहासिक युद्ध के मैदान, राम के वनवास का पूरा मार्ग दर्शाया गया है। इसके अलावा विरासत समूह में ऐतिहासिक इमारतों, दीपावली, संक्रान्ति, ईद, होली, बैशाखी, बिहू, क्रिसमस, ओणम समेत विभिन्न पर्व त्योहारों, लोक नृत्य, वन एवं वन्य जीव से संबंधित 121 चित्र इस गलियारे के सौंदर्य को बढ़ा कर इसे मनोहर स्वरूप प्रदान करते हैं।

दीवारों पर स्लोगन भी भारत की थीम पर आधारित–इस 'भारत दर्शन गलियारे' की एक और खास बात यह है कि इसमें जो नारे और स्लोगन लिखे गए हैं वे सभी भारत के इतिहास और भूगोल की जानकारी देने वाले तथा देश के प्रति कर्त्तव्य भाव का जागरण करने वाले हैं।

सर्वप्रथम 2013 में ऐसा गलियारा सामतीपुरा (जालोर) विद्यालय में बनाया था। फिर सत्र 2015–16 गोदन (जालोर) विद्यालय में पदस्थापन होने पर तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री जितेंद्र कुमार सोनी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में गोदन विद्यालय में भी यह भारत दर्शन गलियारा बनाया गया। सोशल मीडिया पर इस गलियारे की चर्चा होने पर विभिन्न शिक्षकों ने इसमें रुचि दिखाई है अब तक राज्य के 9 जिलों के 15 विद्यालयों में ऐसे 'भारत दर्शन गलियारे' सज चुके हैं जो छात्रों को भारत के गौरव का भान कराने के साथ–साथ छात्र जीवन से ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छी सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। इसके उपयोग के लिए विशेष योजना बनाई गई है जिसके अंतर्गत प्रतिदिन प्रार्थना सभा में इस गलियारे के आधार पर प्रश्न उत्तर किए जाते हैं। यह प्रश्न उत्तर एक दिन पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिखे जाते हैं। छात्रों को याद करना होता है अगले दिन प्रार्थना सभा में उनके उत्तर पूछे जाते हैं। इस प्रकार अनौपचारिक शिक्षण का यह तरीका छात्रों में उत्सुकता और ज्ञान का संचार कर रहा हैं।

व्याख्याता
शांति नगर, बी ब्लॉक
रामदेव कॉलोनी के पास जालोर, राज.
मो : 9414544197

वृक्षारोपण

वर्षा ऋतु आई - हरियाली लाई

❒ डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित

वसंत प्रकृति के स्वत: शृंगार का मौसम है तो वर्षा मानवकृत शृंगार का। बरसात के मौसम में पेड़-पौधे लगाकर इनकी देखभाल की जाए तो ये भली प्रकार से विकास करने लगते हैं। आज जब दुनिया वैश्विक तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) के संकट से जूझ रही है, ऐसे समय में पेड़ ही दुनिया का सहारा बन सकते हैं।

राजस्थान जैसे कम वर्षा वाले प्रदेश के लिए पेड़-पौधों का विषय महत्त्वपूर्ण तो है ही, अन्य स्थानों से भिन्न भी है। वृक्षारोपण के लिए पेड़-पौधे यहाँ की जलवायु और वर्षा के अनुसार लगाए जाने चाहिए। ऐसे पौधे लगाने चाहिए जो कम सिंचाई और कम वर्षा में भी वृद्धि कर सकें। साथ ही यहाँ के मौलिक जैव विविधता वाले वृक्षों की रक्षा भी करनी चाहिए।

मरुभूमि का धन- न्यूनतम सिंचाई और देखभाल वाले पौधे- मरुभूमि राजस्थान में पेड़-पौधों की ऐसी कई प्रजातियाँ हैं जो शताब्दियों से यहाँ के निवासियों को अपनी छाया और काया से संतुष्ट करती आ रही हैं। हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य है ऐसे पेड़-पौधों की रक्षा। साथ ही राजस्थान के जो पेड़-पौधे लंबे समय से अपने अस्तित्व को यहाँ की जलवायु में सुरक्षित किए हुए हैं, उनको ही वृक्षारोपण में प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि देखा-देख/सजावटी अधिक पानी की जरूरत वाले पेड़ों को। इस प्रकार राजस्थान के खेजड़ी, केर, बेर, रोहिड़ा, कुमटिया, जाल (पीलू/मिसवाक), बबूल, गूँदा आदि। कभी कभी देखने में आता है कि लोग स्वत: उग आए इनमें से किसी पौधे को हटाकर अन्य प्रजाति का पौधा लगाते हैं। ये हमारी नासमझी ही है। केर, बेर, बबूल (यहाँ देशी बबूल का उल्लेख किया जा रहा है जो कि परदेशी कीकर से भिन्न है) आदि स्वत: उग जाते हैं क्योंकि ये यहाँ के वातावरण के प्रति अनुकूलित हैं, स्वत: उग कर विकसित होना इनके अनुपयोगी होने के प्रमाण नहीं है। अगर हम ऐसे पेड़-पौधों को काटकर दूसरे पौधे लगाते हैं तो ये एक प्रकार का प्रकृति विरोधी कार्य है। वातावरण से विरोध है और इसका खामियाजा हमें दूसरे पौधों की ज्यादा देखभाल और ज्यादा सिंचाई से भुगतना पड़ता है। इस प्रकार हमारे लिए सबसे पहले ध्यान देने योग्य बात है कि हम मरुद्भिद, कम पानी की आवश्यकता वाले, कम देखभाल की जरूरत

वाले खेजड़ी, केर, बेर, रोहिड़ा, कुमटिया, बबूल, गूँदा, जाल आदि वृक्षों को प्राथमिकता दें। मरुभूमि का वास्तविक धन ये ही पेड़-पौधे हैं। अगर हम इन पेड़ों का सम्मान और परिवर्धन नहीं करते हैं तो ये जैव विविधता के सिद्धांतों के विरुद्ध होगा। अतएव हम अपने घर, विद्यालय, बगीचा, खेत आदि स्थानों पर इन पेड़-पौधों का संरक्षण और रोपण अवश्य करें। बहुधा स्वत: उग आए ऐसे पौधों को न काटें। यथा-समय डालियों की काट-छाँट और सामान्य सुरक्षा कर देने से ये पौधे पनप जाते हैं।

हल्की सिंचाई और सामान्य देखभाल वाले पौधे- न के बराबर सिंचाई और देखभाल वाले मरुभूमि के पौधों के बाद वरीयता मिलती है हल्की सिंचाई और सामान्य देखभाल वाले पौधों को। इस दृष्टि से ऐसे पौधों का रोपण करना चाहिए जिनमें हफ्ते में तीन-चार बार देखभाल और सिंचाई करके भी इनको बढ़ाया जा सकता है। ऐसे ही कुछ पौधे हैं- बरगद, पीपल, नीम, बेलपत्र, आंवला, शीशम, शिरीष, गुलमोहर, मेहँदी आदि। ये पौधे सामान्य पानी और देखभाल से पनप जाते हैं। लंबे समय तक जीवित रहते हैं। ऐसे में जहाँ नियमित देखभाल की सुविधा की जा सके वहाँ ऐसे पौधे लगाने चाहिए। इन पौधों के लिए हल्की सी छाया और नम मिट्टी की आवश्यकता होती है, अत: इनको प्याऊ आदि के पास जहाँ नियमित पानी गिरता रहता है, वहाँ लगा देने से ये आसानी से पनप जाते हैं। ये घने होते हैं, छाया और अनेक जीवों को आश्रय देते हैं। इनके लिए अच्छा सा सुरक्षा आवरण बनाना चाहिए। इसके लिए ईंटों की दीवार, लोहे की जाली, काँटों आदि से सुरक्षा करनी चाहिए।

बदलती जलवायु और पेड़-पौधों का अस्तित्व- हम सब जानते हैं कि पूरी दुनिया की जलवायु तेजी से बदल रही है। वातावरण की उष्णता में वृद्धि हो रही है। ऐसे में कुछ विशेष पेड़-पौधे लगाने चाहिए। सौभाग्य से ये विशेष पेड़-पौधे हमारी मरुभूमि के पेड़-पौधे हैं जो इस बदलती जलवायु में भी अपना अस्तित्व बनाए रख सकते हैं। अत: हमें अपने आस पास खेजड़ी, गूँदा, जाल, केर, बेर, रोहिड़ा, नीम, पीपल, बरगद जैसे पौधे लगाने चाहिए जो आने वाले समय में लंबे समय तक कम देखभाल के बाद भी अपना अस्तित्व बनाए रख सकते हैं। खेजड़ी का पेड़ मरुभूमि के लिए वरदान है। इसकी फली मरुधर का मेवा है। इसकी पत्तियाँ लूंग कहलाती है, जो पशुओं के लिए श्रेष्ठ आहार है। इसकी छाया मानव और पशु पक्षियों के लिए तपते खेतों-मार्गों पर आश्रय का केंद्र है। खेजड़ी का पेड़ लंबे समय तक जीवित रहता है। इतना ही नहीं, ये अपनी आस-पास की जमीन को उपजाऊ भी बनाता है। बाजरी की फसल खेजड़ी के आस-पास अच्छी होती है। ऐसे ही केर के आस-पास की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। नीम के आस पास जहाँ इसके पत्ते गिरते हैं, वहाँ की मिट्टी विषाणुनाशी बन जाती है। आक के पत्ते मिली हुई मिट्टी कीटनाशी होती है। जाल की छाया घनी और मनोरम होती है। केर का कड़वापन भी मानव स्वास्थ्य के लिए वरदान है।

जब तक साँस तब तक आस- जीवन का सबसे अनमोल कारण है प्राणवायु। आज दुनिया पर प्राणवायु के प्रदूषण का संकट सबसे भीषण होकर खड़ा है। प्राणवायु का एक मात्र उत्पादक पेड़-पौधे हैं। पेड़-पौधों की कमी से होने वाली इस समस्या का स्वयं पेड़ों के अलावा

कोई उपाय नहीं है। ये प्राणवायु हमें हर उस कोने तक चाहिए जहाँ हम बैठे हों, सो रहे हों अथवा और कुछ कर रहे हों। ऐसे में घरों और कार्यालयों का वृक्षों से घिरे होना बहुत जरूरी है। ऐसे ही सड़कों के किनारों और बीच में भी पेड़-पौधे होने चाहिए। हमने दिखावे की होड़ में भवनों को पूर्ण वातानुकूलित तो कर दिया है, परंतु प्राणवायु को अनुकूलित नहीं किया है। प्राणवायु का अभाव वातानुकूलित भवनों की बड़ी समस्या है। इस समस्या का समाधान है कि हमारे आस-पास का परिसर पेड़-पौधों से घिरा हो। हर खाली स्थान पर पेड़-पौधे होने चाहिए। भले ही पक्के स्थानों पर गमलों में क्यों न हो।

जब तक जल, तब तक कल –जल है तो कल है। स्वच्छ जल का बड़ा स्रोत है वर्षा। वर्षा आकर्षण का बड़ा कारक है पेड़-पौधे। पेड़ ऐसे जैव-भौतिकीय चक्र का निर्माण कर देते हैं, जहाँ वाष्प-बादलों को बरसना पड़ता है। इसके साथ ही वर्षा के उपरांत बहते जल को पेड़-पौधों की जड़ें समेटकर-सहेजकर रखती है। जिससे पानी जमीन में अवशोषित होकर संग्रहीत हो जाता है। जिस भू-भाग पर अधिक वृक्ष होते हैं, वहाँ का जलस्तर बढ़ने लगता है। अत: वर्षा और भूमिगत जल दोनों के लिए वृक्ष आवश्यक है।

बालकों में पर्यावरण संरक्षण का भाव जगाना– बालक-बालिकाओं में पर्यावरण संरक्षण की आजीवन चलने वाली भावना भरने के लिए बाल्यावस्था से उन्हें पेड़-पौधों से जोड़ देना चाहिए। कुछ समूह बनाकर या कक्षावार पेड़-पौधों की देखभाल उनके अधीन कर देनी चाहिए, इससे वो नियमित रूप से प्रकृति के लिए अपना समय देना सीख जाते हैं, यही भाव आगे जाकर पर्यावरण संरक्षण के रूप में उनकी बड़ी भूमिका बनाता है।

पौधे लगाने के साथ अति आवश्यक है उनकी देखभाल– पौधे लगाने के साथ ही उनके सुरक्षा आवरण की भी व्यवस्था करनी चाहिए। पौधे में पानी डालने के लिए स्वयं जिम्मेदारी लेनी चाहिए या किसी को देनी चाहिए। हालांकि ऊपर बताए अधिकतर पौधों में खाद की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती है फिर भी पौधा लगाते समय और इसके बाद साल में एक बार सर्वसुलभ गोबर की सड़ी हुई खाद डालनी चाहिए।

अकारण नहीं काटना कोई छोटा सा पौधा भी–वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में हम अपने परिसर को साफ दिखाने के लिए कभी कभी केर-बेर जैसे पेड़-पौधों को काट देते हैं। केर-बेर तो क्या आक जैसा पौधा भी अत्यंत उपयोगी है, इसे भी अकारण केवल साफ-सफाई के दृष्टिकोण से नहीं काटना चाहिए। आक के पत्तों से जमीन के कई विषाणु नष्ट होते हैं, इससे कई जैविक कीटनाशक भी बनते हैं। कीटाणुनाशी प्रवृत्ति के कारण नीम की तरह जहाँ भी इसके पत्ते गिरते हैं हानिकारक कीटों को नष्ट ही करते हैं। ऐसा ही महत्त्व अनेक पौधों और झाड़ियों का है।

सजावट को नहीं उपयोग को महत्त्व– सजावट के लिए या देखा-देख नकल के चलते हम कई ऐसे पौधे लगा देते हैं जो हमारे वातावरण के अनुकूल नहीं हैं। जैसे कि सफेदा। ये वृक्ष आस पास का खूब पानी खींच लेता है और किसी भी पौधे को निकट पनपने नहीं देता। ऐसे ही कई विदेशी फूल जो बहुत पानी की आवश्यकता रखते हैं, ऐसे सभी पौधे हमारे लिए अनुकूल नहीं है। दूब घास भी केवल व्यर्थ बहते पानी के निकट लगानी चाहिए। 10×10 फीट के क्षेत्रफल में दूब लगाने के बदले साल भर की सब्जी और एक साल में दस पेड़ तैयार करने जितना पानी मिल जाता है। परदेशी कीकर भी राजस्थान और आस पास के प्रदेशों की जैव-विविधता के लिए संकट बनकर खड़ा हो गया है।

गमलों में उपयोगी पौधे–गमलों में तब पौधे लगाने चाहिए जब कच्ची जगह उपलब्ध न हो। गमलों में भी केवल सजावट की बजाय उपयोगिता वाले पौधों को वरीयता देनी चाहिए। जैसे कि तुलसी, गिलोय, चमेली, मोगरा, मधुमालती, घृतकुमारी आदि। ये सभी पौधे उपयोग और सौन्दर्य सभी तरह से विलक्षण है। घरेलू बचा हुआ पानी इन पौधों में डालना चाहिए। नियमित खाद गमले के पौधों की बड़ी जरूरत होती है।

यहाँ से लें पौधे–वन विभाग द्वारा अनेक क्षेत्रों में स्थायी/अस्थायी नर्सरी स्थापित की जाती है। जहाँ से विविध पौधे लिए जा सकते हैं। इसके अलावा अपने समीपस्थ कृषि विश्वविद्यालय, सरकारी अनुसंधान केंद्र आदि स्थानों से भी पौधे न्यूनतम दरों पर प्राप्त हो जाते हैं।

विद्यालय बनें पर्यावरण जागरूकता का केंद्र–आज मानव जाति के सामने कोई सबसे बड़ा संकट है तो वह है पर्यावरण और इसके घटकों का क्षरण। ऐसे में प्रारंभ से ही बाल-मन में पर्यावरण संरक्षण का भाव जगाना जरूरी है। अत: विद्यालय में वर्षा ऋतु को वृक्षारोपण ऋतु के रूप में मनाना चाहिए। विद्यालय परिसर में अपने क्षेत्र की जलवायु के अनुकूल पौधों की विविध प्रजातियों का संरक्षण करना चाहिए। जैव-विविधता संरक्षण पर्यावरण संरक्षण का एक प्रमुख सोपान है। पौधा लगाने की वैज्ञानिक पद्धति, उसकी पानी और खाद से देखभाल, ट्री गार्ड आदि से सम्बन्धित चर्चा, विशेषज्ञ प्रबोधन, प्रश्नोत्तरी आदि आयोजित करवाने चाहिए। वस्तुत: ये सब सहयोगी गतिविधियाँ हैं, सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है-वृक्षारोपण, वृक्षों की देखभाल और वृक्ष संरक्षण।

पेड़-पौधे प्रकृति और मानव के अस्तित्व के लिए आधारभूत हैं-

पेड़ तुम हमारे मीत
सदा निभाते अपनी रीत
धूप-ताप खुद सह-सहकर भी
बरसाते छाया अमित।
पेड़ तुम हमारे मीत
घबरा जाते हम कोलाहल से
अपनी डालें हिला-हिलाकर
गाते मधुर मौन संगीत।
पेड़ तुम हमारे मीत
खुद कट कर भी
हमें जोड़ते जीवन से
देते अंग-अंग विनीत।
पेड़ तुम हमारे मीत
पत्थर खाते मारे जाते
फल देते मधुर मनोरम
मीठी है तुम्हारी प्रीत।
पेड़ तुम हमारे मीत
जल की बूंद सहेज रखते
प्राणवायु की वर्षा करते
कौन करे ऐसा हित-हित।

व्याख्याता
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
हदाँ, कोलायत-(बीकानेर)
मो: 9414012028

नेतृत्व

संस्थाप्रधान में लीडरशिप

❒ डॉ. डी.डी. गौतम

विद्यालय को राष्ट्र निर्माण जैसे गुरुत्तर उत्तरदायित्व का निर्वाह करना होता है। इस दायित्व का निर्वहन करने के लिए विद्यालय के संस्थाप्रधान को संगठनकर्त्ता के रूप में कार्य करते हुए संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक विशेष प्रकार का वातावरण निर्माण करना होता है। जिसमें संस्थाप्रधान विद्यालय से जुड़े मानवीय संसाधन के साथ टीम भावना से काम करने के लिए प्रेरित करते हुए सबको साथ लेकर प्रदत्त लक्ष्यों को सहज रूप से हासिल कर सकता है। दल/टीम बनाने एवं संचालन में संस्थाप्रधान की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वह विद्यालय के शिक्षकों, छात्रों एवं समुदाय को न केवल नेतृत्व प्रदान करता है; अपितु उनकी योग्यताओं एवं क्षमताओं को पहिचान कर संस्था के सफल संचालन में टीम के सदस्यों को लीडर के रूप में प्रोत्साहित भी करता है। एक संस्थाप्रधान के लिए विद्यालय हित ही सर्वोपरि हो, उसकी कथनी और करनी में अन्तर न हो। वह स्वयं आगे बढ़कर प्रत्येक कार्य में पहल भी करे, तो टीम के सदस्यों को सहयोग/सम्बलन मिलता है। इसके लिए यह जरूरी है कि वह टीम के स्वरूप, संरचना एवं क्षमताओं की समस्त जानकारी भी रखे।

एक सफल टीम के स्वरूप एवं संरचना को हम निम्नलिखित बिन्दुओं में देख सकते हैं–

- टीम का प्रत्येक सदस्य महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्येक सदस्य अपनी क्षमता के अनुसार किसी न किसी रूप में टीम की सफलता में सहयोगी होता है, जिससे किए कार्य के सम्पादन में उसकी विशिष्ट भूमिका होती है।
- गलती होना मानव का स्वभाव है। टीम सदस्यों से भी गलतियाँ संभव हैं। लेकिन सफल टीम लीडर अपने साथी की गलती के समाधान के साथ-साथ सुधारने का प्रयास करता है।
- टीम लीडर अपने सभी सदस्यों की योग्यता व सामर्थ्य से परिचित होते हैं, वे एक दूसरे पर परस्पर विश्वास के साथ

आपस में मदद करते हैं; जिससे प्रत्येक सदस्य में टीम भावना एवं आत्मविश्वास जाग्रत होता है कि मैं यह कर सकता हूँ।

- एक सफल टीम के साथी स्वतन्त्र रूप से, तनाव रहित होकर टीम लीडर के नेतृत्व में कार्य करते हैं। साथ ही वे संगठित, सजग, तत्पर, शांत एवं संयत भी रहते हैं।
- यह आवश्यक नहीं कि एक टीम लीडर होने के नाते आपको सभी सदस्य पसंद हो; लेकिन, फिर भी आपको उनके साथ पूरे मनोयोग से काम करना ही होगा। आपको मन मस्तिष्क से सदैव सहयोग देने हेतु तत्पर रहना होगा।
- संस्थाप्रधान को टीम लीडर के रूप में लक्ष्य प्राप्ति हेतु यथाशक्ति श्रेष्ठतम प्रयास करने होते हैं, साथ ही अन्य सदस्यों को भी इस दिशा में आवश्यकतानुसार सहायता करनी अपेक्षित है क्योंकि इस आस्था के साथ कि टीम भावना व्यक्ति से ऊपर होती है।
- कुशल लीडर के नेतृत्व में टीम का प्रत्येक सदस्य अपनी गलती स्वीकार करने एवं सुधारने में न तो संकोच करता है और न ही नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है।
- समग्र टीम एक जुट होकर 'हम' की भावना से कार्य करती है। सभी सदस्य अपने विद्यालय/संस्था में अपने दायित्व एवं लक्ष्य के प्रति निष्ठावान एवं समर्पित होते हैं।

सफल टीमलीडर टीम के बलबूते से ही अपनी संस्था/विद्यालय को आगे बढ़ाता है, साथ ही तरक्की करते हुए अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होता है।

हम कई बार देखते हैं कि संस्था में बहुत-सी बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती है; जैसे-छात्र विनयी नहीं होते, अध्यापकों में परस्पर मेल-मिलाप नहीं होता है, किसी की राय कुछ तो किसी की राय कुछ होती है, सब अपनी अपनी ढपली अपना-अपना राग आलापते हैं, तो समझना चाहिए कि संस्थाप्रधान में लीडरशिप के गुणों की कमी है जिसमें सुधार की आवश्यकता है। इसका कारण या तो वह स्वयं उत्साही नहीं है या उसमें आत्मविश्वास की कमी है। ऐसे में लीडर दूसरों में कैसे विश्वास पैदा कर सकता है। इसीलिए कहा गया है कि 'यथाराजा तथा प्रजा' जैसा हमारा संस्थाप्रधान होगा वैसा ही विद्यालय संचालित होगा। इसलिए एक संस्थाप्रधान में प्रबन्धन के गुणों के साथ-साथ एक लीडर के गुण भी होने नितान्त आवश्यक है।

एक शिक्षक के रूप में :– संस्थाप्रधान एक कुशल अध्यापक होता है। जैसे कि किसी भी खेल का कप्तान पहले एक कुशल खिलाड़ी होता है कप्तान बाद में, ठीक इसी प्रकार एक संस्थाप्रधान पहले एक कुशल शिक्षक होना ही चाहिए। शिक्षण हेतु निर्धारित कालांश उसे पढ़ाने ही चाहिए, एक आदर्श स्थिति में वह सदैव विद्यार्थी के साथ शिक्षक भी रहे जिससे टीम के अन्य सदस्य उनकी इस कला को आदर्श मानते हुए संस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों में संस्कार विकसित कर सकें।

स्कूल में सबसे छोटी कक्षा बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। अक्सर देखा जाता है कि संस्थाप्रधान केवल उच्चतर कक्षाओं पर ही अपना अधिक ध्यान केन्द्रित रखते हैं। जो न्याय संगत प्रतीत नहीं होता है, संस्थाप्रधान एक कुशल अध्यापक के रूप में अपने विद्यालय की नींव को मजबूत करने के साथ-साथ कंगूरे को भी तराश सके।

संस्थाप्रधान एक निरीक्षणकर्त्ता के रूप में – संस्थाप्रधान एक निरीक्षणकर्त्ता के रूप में देखें कि विद्यालय का कोई भी पहलू उनके निरीक्षण/परीक्षण से वंचित न रहे। क्योंकि विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि के सफल संचालन से ही बालकों का सर्वांगीण विकास होगा, तभी विद्यालय का विकास माना जाएगा। उन्हें प्रत्येक शैक्षिक-सहशैक्षिक गतिविधि पर प्रखर नज़र रखते हुए आवश्यक सम्बल प्रदान करें।

संस्थाप्रधान विद्यालय के समस्त दस्तावेजों का समय-समय पर अवलोकन करें। जिससे विद्यालय के समस्त लेखा जोखा नियमित संधारित हो सकें। शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ समस्त व्यवस्था को पारदर्शी एवं जबाबदेही बनाए। खेल मैदान, प्रयोगशाला और पुस्तकालय-अवलोकन भी समय-समय पर हो, सभी गतिविधियाँ उत्कृष्ट रूप से संचालित हैं। इसमें ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास निहित होता है।

संस्थाप्रधान शिक्षण कार्य निरीक्षणकर्त्ता के रूप में – संस्थाप्रधान एक टीमलीडर के रूप में शिक्षण कार्य का निरीक्षण व सम्बल प्रदानकर्त्ता होना चाहिए। उसे चाहिए कि वह समय-समय पर अध्यापकों की कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया का निरीक्षण करे। कमियों को सहजता के साथ चर्चा करते हुए सम्मानजनक शब्दों में आवश्यक सुझाव देते हुए दूर करे।

शिक्षण की सफलता-असफलता की जाँच परीक्षा परिणामों के आधार पर भी होती है। अतः वर्ष में होने वाली परीक्षाओं की मासिक अथवा त्रैमासिक जाँच करते समय विशेष ध्यान रखे एवं आवश्यक सुझाव व सहयोग करते हुए अपनी टीम के सदस्यों की क्षमता संवर्धन का कार्य करें।

संस्थाप्रधान एक समन्वयकर्त्ता के रूप में – एक संस्थाप्रधान की कुशल समन्वयन शक्ति से टीम में न केवल सामंजस्य स्थापित होता है; बल्कि समाज और विभाग से भी उसे भरपूर सहयोग प्राप्त होता है। उसके इस गुण से समुदाय विद्यालय के करीब आता है। वह विद्यालय के बाहर के समाज/समुदाय से अपने को अलग नहीं समझे। संस्थाप्रधान की नेतृत्व क्षमता समाज एवं विद्यालय में सामंजस्य रखते हुए समाज के लोगों को विद्यालय विकास में भागीदार बनाती है। वह किसी जाति, बंधन, समाज बिरादरी का नहीं होता है। वह तो सब का होता है और सब उसके होते हैं।

एक संस्थाप्रधान – संस्थाप्रधान केवल शिक्षक ही नहीं होता, वह नेता और कुशल अभिनेता भी होता है। वह अपने वाक्चातुर्य से सभी को अपना बना कर रख सकता है। वह समाज के साथ-साथ सरकार व विभाग से भी तालमेल रखता है। समय-समय पर जारी निर्देशों/राज्यादेशों का ध्यान रखना उनकी पालना सुनिश्चित करना अपना प्रथम धर्म समझते हुए वह विद्यालय के संचालन का सम्पूर्ण प्रयास करे एवं अपने टीम के सदस्यों को भी अपडेट रखे। विभाग को प्रेषित की जाने वाली सूचनाओं के लिए सदैव तैयार रहकर उच्च अधिकारियों का प्रिय बन जाता है।

वर्तमान में हम एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं, जिसमें सरकारी विद्यालयों में बच्चों के नामांकन, ठहराव, निरन्तरता एवं गुणवत्ता पर विशेष बल दिया जा रहा है। सरकारी विद्यालय कुशल नेतृत्व के बल पर समाज की पहली पंसद बन रहे है। संस्थाप्रधान की एक टीमलीडर की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नहीं नकारा जा सकता। इसके लिए संस्थाप्रधान अपनी टीम के साथ विद्यालय का 'विजन' तैयार कर तदनुरूप विद्यालयों की गतिविधियाँ संचालित करता है तभी विद्यालय के स्वरूप और स्थिति में निरंतर प्रगति होती हैं। एक जीवन्त और जवाबदेही के रूप में विद्यालय अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुए समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरता हैं। समाज का विश्वास और गहरा होता हैं।

मै पुनः आग्रह करता हूँ कि संस्थाप्रधान जहाँ एक शिक्षक के रूप में कार्य करता है, वहीं उससे यह अपेक्षा भी है कि वह विद्यालय के लीडर के रूप में भी कार्य करे। एक ऐसे लीडर के रूप में जो शिक्षक का सहयोगी हो, समुदाय और विद्यालय के संबंध को मजबूती दे सके, विद्यालय की बेहतरी के लिए प्रासंगिक योजना बना सके, साथ ही विद्यालय के कुशल संचालन के लिए नेतृत्व क्षमताओं का प्रदर्शन करते हुए विद्यालय और प्रशासन के बीच समन्वय स्थापित कर सके।

उपनिदेशक, प्रशिक्षण-सीसीई
सर्व शिक्षा अभियान
राजस्थान शिक्षा परिषद् जयपुर
मो: 9413671118

आवश्यक सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। ● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।

–वरिष्ठ संपादक

अधिसूचना

'चाइल्ड केअर लीव' : भावानुवाद

❒ डॉ. रोहताश पचार

वित्त विभाग (नियम अनुभाग), राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान सेवा (चतुर्थ संशोधन) नियम-2018, नियम-103ग (चाइल्ड केअर लीव) विषयक अधिसूचना क्रमांक. प.1 (6) वित्त/नियम/2011 जयपुर, दिनांकः 22 मई 2018 का हिंदी भावानुवाद

(1) महिला कर्मचारी को परीक्षा, अस्वस्थता अथवा पालन-पोषण आदि किसी भी आवश्यकताओं की स्थिति में उसके प्रथम दो जीवित बच्चों की देखभाल के लिए सम्पूर्ण सेवाकाल के दौरान अधिकतम दो वर्ष अर्थात् 730 दिन का 'चाइल्ड केअर लीव' सक्षम अधिकारी द्वारा स्वीकृत किया जा सकेगा। बच्चे से आशय है-

(ए) 18 वर्ष से कम आयु का बच्चा।

(बी) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार की अधिसूचना क्रमांकः 16-18/NI.1 दिनांकः 01.06.2001 में वर्णित अनुसार न्यूनतम 40 फीसदी निःशक्तायुक्त संतान जिसकी आयु 22 वर्ष से कम हो।

(2) चाइल्ड केअर लीव की स्वीकृति निम्नलिखित शर्तों के अध्यधीन होगी-

(i) महिला कर्मचारी चाइल्ड केअर लीव के दौरान अवकाश प्रस्थान करने से पूर्व प्राप्त वेतन के समान दर पर अवकाश वेतन की हकदार होगी।

(ii) चाइल्ड केअर लीव को किसी भी अन्य देय अवकाश के साथ संयुक्त किया जा सकेगा।

(iii) राज्य सरकार द्वारा निर्धारित प्रारूप में अवकाश स्वीकृति हेतु आवेदन सक्षम अधिकारी को पर्याप्त समय पूर्व देना होगा।

(iv) चाइल्ड केअर लीव का दावा अधिकारपूर्वक नहीं किया जा सकेगा। किसी भी परिस्थिति में अवकाश स्वीकृति अधिकारी की पूर्वानुमति के बिना कोई महिला कर्मचारी अवकाश का उपभोग नहीं करेगी।

(v) चाइल्ड केअर लीव कर्त्तव्य से अनधिकृत अनुपस्थिति के पश्चात् आवेदन करने पर किसी भी परिस्थिति में स्वीकार्य नहीं होगी।

(vi) महिला कार्मिक द्वारा पहले से ही उपभोग किए जा चुके अथवा उपभोग किए जा रहे अवकाशों को किसी भी परिस्थिति में चाइल्ड केअर लीव में परिवर्तित नहीं किया जा सकेगा।

(vii) चाइल्ड केअर लीव को किसी अन्य अवकाश लेखे में नामे नहीं लिखा जाएगा। राज्य सरकार द्वारा निर्धारित प्रपत्र में इसका पृथक अवकाश लेखा संधारित किया जाएगा और इसे सेवा पुस्तिका में चस्पा किया जाएगा।

(viii) अवकाश स्वीकृति अधिकारी राजकार्य के सुचारू संचालन अथवा विभागीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवेदित अवकाश को अस्वीकृत कर सकता है।

(ix) चाइल्ड केअर लीव एक कैलेण्डर वर्ष में तीन बार से अधिक स्वीकृत नहीं की जाएगी। एक कैलेण्डर वर्ष में शुरू होकर यदि अवकाश दूसरे कैलेण्डर वर्ष में पूर्ण होता है तो उस स्पेल को अवकाश शुरू होने वाले वर्ष में काउंट किया जाएगा।

(x) सामान्यतः यह अवकाश परिवीक्षाधीन प्रशिक्षण अवधि में स्वीकार्य नहीं होगा। विशेष परिस्थितियों में स्वीकृत होने की स्थिति में परिवीक्षाकाल उतनी ही अवधि के लिए आगे बढ़ाया जाएगा।

(xi) इस अवकाश को उपार्जित अवकाश की तरह स्वीकृत और व्यवहृत किया जाएगा।

(xii) रविवार और अन्य अवकाशों को इस अवकाश के पहले अथवा बाद में जोड़ा जा सकेगा। चाइल्ड केअर लीव के मध्य में आने वाले रविवार, राजपत्रित और अन्य अवकाश उपार्जित अवकाश की तरह ही चाइल्ड केअर लीव में काउंट होंगे।

(xiii) निःशक्त बच्चे के संबंध में अवकाश स्वीकृति से पूर्व सक्षम प्राधिकारी/मेडिकल बोर्ड से जारी निःशक्तता प्रमाण पत्र के अलावा महिला कार्मिक पर बच्चे के आश्रित होने का प्रमाण-पत्र महिला कर्मचारी से लिया जाएगा।

(xiv) विदेश में रह रहे बच्चे की अस्वस्थता अथवा परीक्षा आदि की स्थिति में अवकाश अधिकृत चिकित्सक/शिक्षण संस्थान से प्राप्त प्रमाण-पत्र के आधार पर स्वीकृत किया जा सकेगा। विदेश में रह रहे अवयस्क बच्चे के सम्बन्ध में अवकाश लेने पर विदेश यात्रा सम्बन्धी अवकाश के नियम/निर्देशों का पालन करना होगा और 80 प्रतिशत अवकाश अवधि उसी देश में बितानी होगी जहाँ बच्चा रह रहा है।

(xv) देश या विदेश में किसी छात्रावास में रह रहे बच्चे की परीक्षा आदि के दौरान अवकाश चाहे जाने पर महिला कार्मिक को यह स्पष्ट करना होगा कि वह बच्चे की देखभाल किस प्रकार से करेगी।

डिस्क्लेमरः मूल अधिसूचना से भिन्नता/अस्पष्टता की स्थिति में अथवा आधिकारिक संदर्भ के लिए मूल पाठ का परिशीलन अवश्य कर लें यह प्रस्तुति केवल हिंदीभाषी कर्मचारी/अधिकारियों की सहायतार्थ और सुलभ अर्थग्रहण के लिए है।

आवासीय गृहपति
सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर
मो: 9414605309

स्मृति-शेष

शिक्षा दान से देहदान का अभूतपूर्व सफर

❒ सूर्यप्रकाश जीनगर

देश के जाने-माने शिक्षाविद्, प्रखर विचारक-लेखक एवं 'शिविरा' के संस्थापक-संपादक शिवरतन थानवी का अपने पैतृक गाँव फलौदी (जोधपुर) में 22 अप्रैल 2018 को देहावसान हो गया वे 88 वर्ष के थे। कुछ समय से वे अस्वस्थ चल रहे थे। अपनी पूरी ज़िन्दगी शिक्षा को समर्पित करने वाले विख्यात लेखक थानवी ने निधन के बाद देह भी शिक्षा के लिए सौंप दी। अक्टूम्बर 2016 में उन्होंने अपनी हस्तलिपि में शोक संदेश लिखकर परिजनों को सौंप दिया था। जिसमें निधन व शोक सभा की तारीख की जगह खाली छोड़ दी गई थी। इस शोक संदेश में उन्होंने देहदान करने का जिक्र भी किया था, साथ ही समाज में सुधार की दृष्टि से निधन पर उठावणा के बाद किसी भी प्रकार का क्रिया-कर्म नहीं करने की इच्छा व्यक्त की थी।

शिक्षा साधक थानवी ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर मृत्यूपरांत उनका दाह संस्कार न करके देह का चिकित्सा एवं अनुसंधान में विद्यार्थियों को दान करने की परिजनों से चर्चा कर इच्छा जताई तथा देहदान के लिए उन्हें विश्वास में लिया। जिस पर जोधपुर के डॉ. एस.एन. मेडिकल कॉलेज में 23 दिसम्बर 2016 को देहदान के लिए आवेदन किया गया था। निधन के बाद उनकी इच्छा अनुरूप उनके अनुज रमेश थानवी (संपादक-अनौपचारिका), पुत्र ओम थानवी (वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक), पुत्र जयप्रकाश थानवी (सहायक प्रशासनिक अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर), पुत्र मुरारीलाल थानवी (निदेशक, दूसरा दशक फलोदी) ने मेडिकल कॉलेज को सूचित कर दिया था। 23 अप्रैल (विश्व पुस्तक दिवस) सोमवार सुबह उनकी पार्थिव देह एम्बुलेंस में रखकर निवास मोची स्ट्रीट से राजकीय चिकित्सालय तक अन्तिम यात्रा निकाली गई। जहाँ अस्पताल प्रशासन ने पार्थिव देह पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान परिजनों सहित शहर के गणमान्य नागरिकों, साहित्यकारों, पत्रकारों व आमजनों ने नम आँखों से उन्हें अन्तिम विदाई दी तथा गहरा दुःख व्यक्त करते हुए इसे शिक्षा एवं साहित्य जगत में अपूरणीय क्षति बताया। अन्तिम यात्रा के बाद देह को जोधपुर के एस.एन. मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग को सुपुर्द कर दिया गया। फलोदी शहर में देहदान का यह पहला अवसर रहा।

शिविरा मासिक पत्रिका के संस्थापक, संपादक श्री शिवरतन् थानवी 22 अप्रैल 2018 को इस नश्वर संसार से महाप्रयाण कर गए। शिविरा को राज्य और राज्य से बाहर भी देश में श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतन मंच के रूप में जो मान्यता मिली वह शिवरतन् थानवी जी की देन रही। शिक्षकों में ही नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति में शिक्षा के अंतस को जानने की तड़प वाली विचारणा के अग्रदूत थानवी जी को शिविरा-परिवार की ओर से शत-शत नमन।

-वरिष्ठ संपादक

शिक्षक और पुस्तक प्रेमी पिता भीखमचंद थानवी के घर पर उनका 3 अगस्त 1930 को जन्म हुआ। पिता से मिले संस्कारों की घुट्टी में उन्हें पुस्तकों से चाव बचपन से रहा। पिताजी के स्कूल पुस्तकालय से पढ़ी पहली पुस्तक 'दूध बताशा' थी। स्कूली दिनों से ही शिक्षा एवं साहित्य की पुस्तकें पढ़ने की धुन सवार हो गई थी। पहले प्रेमचंद, बच्चन एवं मैथिलीशरण गुप्त को आनन्दपूर्वक पढ़ा। दसवीं करते ही राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'तुम्हारी क्षय' पढ़ी और जीवन में आमूलचूल बदलाव आ गया। ब्राह्मण की निशानी लम्बी चोटी सिर में रहा करती थी वह बराबर हो गई, यज्ञोपवीत (जनेऊ) भी उतार कर रख दिया। गीता-रामायण बार-बार पढ़ने की बजाय प्रगतिशील साहित्यकारों यशपाल, जूलियस फूचिक, कृशनचंदर और मैक्सिम गोर्की की पुस्तकों में मन लगाया। शिक्षक पद पर रहते लोर्डिया, लोहावट, बोरूंदा, टी.बी. (हनुमानगढ़) जैसे दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में अध्यापन करवाया। वहाँ बालकों के सहज सीखने, समझने के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया। बालकों में सृजनात्मक कौशल को विकसित करने के लिए उन्हें हर अवसर पर प्रोत्साहित किया। साहित्य पठन-लेखन की रुचि शुरू से रही। 1951 में साप्ताहिक ज्वाला पत्रिका में बतौर पत्रकार के रूप में अपनी पैनी कलम चलाई। गम्भीर एवं वैचारिक पत्रकार की छवि आमजन में बनी। साहित्यकार यशपाल जोधपुर आए और रांघेय राघव जयपुर आए तो उनका साक्षात्कार लिया, वह ज्वाला साप्ताहिक में छपा।

1965 में शिक्षा विभाग राजस्थान की पत्रिका 'शिविरा' का नामकरण एवं संस्थापक-संपादक बनने का गौरव थानवी को हासिल हुआ। शिक्षा में मौलिक लेखन एवं नवाचारों के लिए उन्होंने खूब प्रसिद्धि पाई। नया शिक्षक (त्रैमासिक) का कायाकल्प भी किया। थानवी के शिक्षा में उच्च चिंतन एवं बाल मनोविज्ञान के विचारों से 'शिविरा' ने देश में कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने तेरह वर्ष दो शैक्षिक पत्रिकाओं का पूर्णकालिक संपादन किया। इस दौरान विभाग में उनकी कार्यशैली उत्कृष्ट रही। उनकी निर्भयता, ईमानदारी एवं कर्मठता की जड़ें दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ती रही। शिक्षक समाज के हितों के लिए अपनी प्रखर कलम से अनेक रचनात्मक कार्यों को अंजाम दिया। रचनाकार शिक्षक साथियों को मंच मिले, इस क्रम में

साहित्य प्रेमी एवं उद्भट विद्वान थानवी ने 'शिक्षक दिवस प्रकाशन' योजना को शुरू किया। शिक्षक रचनाकारों की पहिचान इस माध्यम से सुदूर इलाकों में होने लगी। नये रचनाकार भी सामने आने लगे। शिक्षा विभाग की इस योजना की सराहना देश के कोने-कोने में होने लगी। देश में शिक्षा का साहित्य से रिश्ता जोड़ने वालों में वे अव्वल रहे हैं।

सच्चे शिक्षा प्रेमी, अनूठे व्यक्तित्व के धनी एवं कुशल प्रशासक अनिल बोर्दिया की प्रेरणा से थानवी ने 'शिविरा' पत्रिका का कार्य सम्भाला था। तत्कालीन शिक्षा निदेशक बोर्दिया ने उनके कार्यों की भरपूर सराहना की। शिक्षा मनीषी गिजु भाई, दयालजी मास्साब से लेकर इवान इलिच, जॉन हॉल्ट और पावलो फ्रेरे आदि प्रसिद्ध शिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों पर गहन चर्चा का थानवी ने अभियान चलाया। ग्रीष्मावकाश के दौरान माउंट आबू, पंचमढ़ी व प्रमुख दर्शनीय स्थलों पर शिक्षा की गुणवत्ता पर शिक्षकों के साथ परिचर्चा आयोजन माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान द्वारा अनूठा प्रयोग साबित हुआ। इसमें थानवी की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। शिक्षा शास्त्री थानवी अपनी शैली, संकल्पबद्धता एवं लीक से हटकर कार्यों को कुशलतापूर्वक करने के लिए जाने जाते रहे हैं। समाज में बढ़ते अंधविश्वास एवं पाखंड के धुर विरोधी रहकर इसके गढ़ को तोड़ने के लिए उन्होंने वैज्ञानिक चेतना का विकास आमजन में हो इसके लिए शिक्षा को सर्वोपरि बताया।

शिक्षा में अपने मौलिक चिन्तन व लेखन के लिए देश में व्यापक पहिचान बनाने वाले चिन्तक एवं लेखक शिवरतन थानवी की पहली पुस्तक 'आज की शिक्षा कल के सवाल' पाठकों में खूब चर्चित रही। उन्होंने 'कोबायाशी की कहानी' 'सामाजिक विवेक की शिक्षा' 'भारत में सुकरात' एवं 'शिक्षा सर्वोपरि' पुस्तकें अपनी गहन साधना से लिखी। भाषा सरल व सहज। शिक्षा व साहित्य प्रेमी पाठकों व लेखकों ने इन पुस्तकों की सराहना करते हुए गहराई से विश्लेषण किया। समाज में नई शैक्षिक दृष्टि व दिशा बोध के प्रेरक विषय इन पुस्तकों में समाहित हैं। जो पाठकों के सामने जहाँ कई रचनात्मक सवाल खड़े करता है, वहीं गहरे चिंतन के लिए नए भाव बोध का विकास गहनता से होता है। इस वर्ष उनकी डायरी 'जग दर्शन का मेला' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। रोचक संस्मरण एवं व्यापक शैक्षिक अनुभवों का खजाना इस डायरी की तारीखों में हमसे बतियाता रहता है, एक नई दुनिया की सैर इस डायरी में होती है। प्रत्येक अनुभव एवं शैक्षिक विचार जीवन की प्रगति में संजीवनी सरीखा लगता है।

पुस्तक प्रेमी एवं अद्भुत शिक्षक थानवी का मुझे चौदह वर्ष आत्मीय सान्निध्य मिला। उनके सरल एवं सहज व्यक्तित्व ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। उन्होंने मुझे देश भर की चर्चित शिक्षा एवं साहित्य की पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए दी। उनकी सभी पुस्तकें मैंने उपहार में पाई हैं। अनेक पत्रिकाएँ भी। हर महीने घर पर मैं मुलाकात करने जाता था। बड़े प्रेम के साथ संवाद करते थे। आपसी संवाद में शिक्षा एवं साहित्य की चर्चा बड़े आनन्द के साथ होती थी। वे शिक्षक जीवन व 'शिविरा' पत्रिका संपादन काल के संस्मरण सुनाते थे। इन दिनों क्या पढ़ा, क्या लिखा, इस पर विचार विमर्श होता था। इस तरह वे हर मिलने वाले पाठक या रिश्तेदार को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। रुचिवान पाठकों को पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए देते थे। उन्हें पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। एक कस्बे में रहते हुए हमारा पत्र-व्यवहार भी हुआ। मेरे पास उनके अनेक पत्र हैं। वो मेरी बहुमूल्यपूंजी है। इन पत्रों में साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन है। पुस्तकों को पढ़ने की प्रेरणा है। देश व समाज की स्थिति पर चिन्तन है। वर्तमान समय में शिक्षा की स्थिति पर उनके विचार भी चिट्ठियों में हमसे मुखातिब होते हैं। वे देश भर के पाठकों व लेखकों को पाठकीय प्रतिक्रिया अपने हाथ से लिखे पत्रों द्वारा देते थे। वे हमेशा कहते ''जो भी लिखो उसे 'लाल खंभे' (लेटर बॉक्स) के हवाले कर दो।''

उनकी अपनी सृजित भाषा में कहें तो पुस्तकों को थोड़ा टटोलना यानी स्वाद चखना, पूरी पढना यानी तृप्त होना। इस प्रकार अपनी शैली से हर मिलने वाले को सहज भाव से आकर्षित कर देते थे। उनके आत्मीय स्वभाव से देश भर के पाठकों एवं लेखकों में गहरी पहिचान है।

उनके हृदय में नित्य सीखने की धुन सवार रही। जिज्ञासु रहकर संगीत की निराली दुनिया में वे मगन रहते थे। गीत-संगीत की जुगलबंदी में सीखने का भाव उन्हें हमेशा तरोताजा रखता था। प्रकृति में उनके प्राण बसते थे। पेड़ों पर खिलने वाले फूलों की विशेष जानकारी रखते थे। किसी जगह पर कोई अनोखा पेड़ देखकर उसके बारे में पूरी पड़ताल करते थे। जब तक सही जवाब हासिल नहीं होता था, तब तक उसके बारे में अपनी जिज्ञासा बरकरार रखते थे। पुस्तकों के प्रति उनका अनन्य लगाव इसी तरह था। वे खोज-खोजकर किताबें पढ़ते थे। अनेक बार किसी प्रिय लेखक की पुस्तक का बरसों इन्तजार करते थे। पुस्तक प्रेमियों को जो पुस्तकें पढ़ने के लिए दी थी, लम्बे समय पश्चात् नहीं लौटाने पर उन्हें पत्र लिखते थे। आज के सूचना तकनीकी युग में पत्र विधा पर बहुत संकट है। सोशल मीडिया पर लोग दिन-रात लगे रहते हैं। लेकिन पत्र लिखना आम आदमी के लिए मुश्किल होता जा रहा है, इस पर वे बहुत चिन्ता व्यक्त करते थे। वे कहते थे- चिट्ठी-पत्री साहित्य की अग्रणी विधा है। यदि ये विलुप्त हो जाएगी तो हमारा प्राथमिक संवाद व्यवहार बीते जमाने की बात हो जाएगी।

उनके असीम स्नेह एवं प्रेरणा से मैंने अपने घर की छत पर बने कमरे में निजी लाइब्रेरी बनाई हैं। उनका पूरा घर लाईब्रेरी सरीखा है। हर जगह पुस्तकों के सम्मुख मुस्कान बिखेरती हुई स्वागत करती है। पोथी का सुख निराला होता है। उन्होंने अटूट साधना से पुस्तकों की अप्रतिम दुनिया की सैर कर आनन्द का रस पान किया। दोनों आँखों की रोशनी जाने लगी थी कि दोनों आँखों में दो नए लैंस लग गए और वे पुस्तकों को सीने से लगाकर बैठ गए। गुणग्राही एवं सहज गद्य के चितेरे थानवी को नववर्ष पर डायरी, कलम एवं पंचांग कई वर्ष तक मैंने भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। वे मुझे सुन्दर डायरी से नवाजते रहे। उन्होंने वर्षों तक नियमित डायरी लेखन किया। मेरे तेरह वर्ष के डायरी लेखन सफर के वे प्रेरणा स्रोत रहे हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में मेरी रचनाओं के प्रकाशन पर तत्काल प्रतिक्रिया देते थे। मैं सम्मानपूर्वक उन्हें पत्रों एवं आपसी संवाद में 'गुरुजी' नाम से सम्बोधित करता रहा हूँ। मेरी हस्तलिपि को अनुकरणीय बताते हुए डायरी 'जगदर्शन का मेला' छपने से पहले मुझे अपनी

हस्तलिपि में लिखने के लिए उन्होंने रोचक अन्दाज़ में अपनी बात कही थी। ... वो टयूशन वाली कहानी.... मुझे खूब याद रहेगी। करीब तीन महीने में मैंने डायरी लिखकर उन्हें लौटाई। डायरी लेखन से मुझे उनके गहन दृष्टिकोण, अदम्य पुस्तक प्रेम एवं शिक्षा पर मौलिक चिन्तन से मैं परिचित हुआ। मुझे नई दिशा व दृष्टि मिली। मैं निहाल हो गया। उन्होंने मुझे आशीर्वाद स्वरूप राशि से भी नवाज़ा।

मानवीय मूल्य बोध को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले बिरले शिक्षक थानवी जीवन भर शिक्षा को धर्म एवं जाति को जिज्ञासा से जोड़ने के पक्षधर बने रहे। उन्होंने बी.ए. में हिन्दी साहित्य और एम.ए. में अंग्रेजी साहित्य पढ़ा। अगस्त 1988 में संयुक्त शिक्षा निदेशक पद (माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर) से सेवानिवृत हुए। उनकी सात सन्तानों में तीन पुत्र व चार पुत्रियाँ हैं, पूरा परिवार पुस्तकों को मन से चाहता है तथा अपनी रुचियों और मेहनत से विभिन्न क्षेत्रों में सुपरिचित हैं। जिज्ञासु शिवरतन थानवी विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता थे। शिक्षा व साहित्य लेखन के दौरान उन्होंने राजस्थानी, बांग्ला, गुजराती और अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद भी किए। स्वाध्यायी शिवरतन थानवी का जीवन किताब की तरह रहा। ताज़िन्दगी शिक्षा में नवचिन्तन एवं पठन-लेखन की जागृति का शंखनाद करने वाले महामनीषी थानवी ने निधन उपरान्त विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए देहदान का अभूतपूर्व सफर तय कर समाज में मिसाल पेश की है।

फलोदी में मोक्षधाम के निकट ब्रह्मबाग में उनकी इच्छा अनुसार परिजनों ने 26 अप्रैल, गुरुवार को स्मृति सभा पुरुषों एवं महिलाओं के लिए एक साथ रखी गई। तपते रेगिस्तान में शिक्षा की अलख जगाने एवं पुस्तकों से अद्‌भुत रिश्ता रखकर आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने थानवी को हर वर्ग के लोगों ने स्मृति सभा में श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान शिक्षा, साहित्य एवं मीडिया जगत की हस्तियों ने अपनी संवेदना व्यक्त की।

उनके देहावसान के बाद देहदान का समर्पण एवं उठावणा के बाद किसी तरह का क्रियाकर्म नहीं करने का निर्णय समाज के हर वर्ग में नई चेतना पैदा करता है। राष्ट्र कवि रामधारीसिंह दिनकर की पंक्तियों में कहें तो- ''इस पथ का उद्‌देश्य नहीं है, शान्त भवन में टिक रहना। बल्कि पहुँचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह नहीं....।'' सही मायनों में वे उस राह के राही थे जो नित्य ज्ञान के अविरल निर्झर में रमकर समाज के हर वर्ग तक शिक्षा की रोशनी फैलाने तथा वैज्ञानिक चेतना से मानवीय जीवन को सफल बनाने की कोशिश में लगे रहे।

हमें पूरी उम्मीद है, उनकी प्रगतिशील सोच में समाज में बदलाव का नया सूरज उगेगा...।

मरु भूमि की महक देश के कोने-कोने में फैलाने वाले सच्चे कर्मयोगी शिवरतन थानवी को अल्लामा इकबाल की इन पंक्तियों के साथ विनम्र श्रद्धांजलि- 'हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा...।

'हरि सदन', इन्दिरा कॉलोनी फलोदी,
जिला-जोधपुर (राजस्थान)-342301
मो. 9413966175

शाला दर्पण को मिला अवार्ड

वर्ष 2018 का आयोजित 52 वाँ राष्ट्रीय स्तरीय स्कॉच समिट 'वन नेशन वन प्लेटफॉर्म', नई दिल्ली में शिक्षा के क्षेत्र में किये गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए माध्यमिक शिक्षा राजस्थान के ऑनलाइन पोर्टल 'शाला दर्पण' को स्कूल शिक्षा में किए गए अपने अभिनव प्रयासों एवं नवाचारों के लिए दिया गया। प्रमुख शासन सचिव महोदय की दूर-दर्शिता एवं हजारों लाखों शिक्षक बन्धुओं की मेहनत के प्रतिफल के रूप में शाला दर्पण को यह सम्मान प्राप्त हुआ है। 'शाला दर्पण' पुरस्कारों की अपनी श्रेणी में प्रथम स्थान पर रहा। इस राष्ट्रीय स्तरीय अवार्ड का आयोजन दिल्ली के कान्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ़ इंडिया के मावलंकर सभागार में किया गया। इस अवसर पर विभाग से राज्य परियोजना निदेशक समसा शिवांगी स्वर्णकार, आभा बेनीवाल उपायुक्त 'शाला दर्पण', तकनीकी निदेशक विनोद कुमार जैन एन.आई.सी, तूलिका गर्ग उपनिदेशक एवं अविनाश चौधरी सहायक निदेशक 'शाला दर्पण' जयपुर ने इस अवसर पर स्कॉच ग्रुप के चेयरमैन समीर कोचर से यह अवार्ड ग्रहण किया। इस मौके पर राज्य परियोजना निदेशक ने कहा कि इसका श्रेय हमारे विद्यालयों के संस्थाप्रधान, शाला दर्पण प्रभारी एवं अन्य हजारों शिक्षक-शिक्षिकाओं को जाता है जिन्होंने कड़ी मेहनत व लगन के साथ पोर्टल में सूचनाओं के संधारण करने का कार्य कर इस पोर्टल को इस ऊँचाई तक पहुँचाया। पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाओं को एवं इस पर उपलब्ध मोड्यूल्स को सिलेक्शन जूरी ने सराहनीय बताया। वास्तविक तौर पर देखा जाए तो जिस प्रकार से 'शाला दर्पण' ने पिछले कुछ वर्षों में तीव्र सूचना सम्प्रेषण में अपनी भूमिका निभाई है वह अपने आप में बेजोड़ है।

-वरिष्ठ सम्पादक

शतरंज का खेल

चाल, पैंतरे और सीखने की जुगत

❒ डॉ. मूलचंद बोहरा

खेल कोई-सा भी हो, आनंद देता है। तन को भी और मन को भी। थक हार कर भी हमारा मन उसमें बार-बार लौटने-लोटने का करता है। यह खेलने का मन बड़े-बच्चों में फर्क नहीं करता। सभी एक मन, एक रस होकर उसमें तल्लीन होना चाहते हैं। तो क्यूं न बच्चों के लिए कोई ऐसे खेल की बात करें, जो उन्हें खेलने के साथ-साथ सीखने-सिखाने में भी मद्दगार बने। यूं तो सभी खेल हमारे सीखने में मददगार बनते हैं, पर शतरंज एक ऐसा खेल है, जिसमें हम खेलने के दौरान ही सीखने-समझने लगते हैं। यह सीखने का एक तरह से औजार है, जो हमारे सीखने को सरल बनाता है और सीखने को प्रेरित करता है। एक खेल के तौर पर मंजे हुए खिलाड़ियों के लिए जहाँ यह खेल साध्य के रूप में हैं, तो नन्हे-मुन्हे बच्चों के लिए सीखने के साधन के रूप में। हालांकि आगे चलकर वे भी इसे साध्य के रूप में अपना सकते हैं।

इस खेल की इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि राज्यों में इसे प्रारंभिक शिक्षा में अनिवार्य किया गया है। राजस्थान सरकार में भी एसआइक्यूइ, शैक्षिक कार्यक्रम के तहत इसे प्रारंभिक शिक्षा में अनिवार्यतः लागू किया गया है जिसके सकारात्मक परिणाम भी आने लगे हैं। कभी राजाओं-महाराजाओं के मनोरंजन का साधन रहा यह खेल आज के लोकतांत्रिक समाज में भी प्रासंगिक है। कहा जाता है कि भारत ने दुनिया को दो अद्भुत नियामतें दी है, उन में से एक है, शून्य का ज्ञान और दूसरा है शतरंज का खेल। हालांकि यह मान्यता सर्वमान्य नहीं है कि इस खेल की शुरूआत भारत में ही हुई थी। कुछ विद्वान इसे चीन से निकला हुआ मानते हैं, कुछ मिश्र से और कुछ यूनान से। लेकिन यह खेल भारत से बाहर का है, इसकी पुष्टि में उनके द्वारा कोई तथ्य या तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है। हमारे भारतीय इतिहास में इस खेल के यहीं-से निकलने के कई प्रमाण हैं।

इस खेल के मूल स्रोत पाँचवी-छठी शताब्दी में मिलते हैं। इसका प्राचीन नाम चतुरंग अर्थात चार अंग था, जो भारत से अरब होता हुआ यूरोप पहुँचा और पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में पूरे संसार में फैल गया। फारसी में इसे चतरंग-शातरंज कहते- कहते शतरंज कहा जाने लगा। फारस में जाने से पहले इस खेल में ऊँट की जगह रथ का प्रयोग होता था, चूँकि फारस की सेना में ऊँटों का इस्तेमाल होता था, इसलिए इस खेल में ऊँटों को भी शामिल कर लिया गया।

पुरा आख्यानों में मान्यता है कि रावण को युद्ध से दूर रखने के लिए उसकी पत्नी मंदोदरी ने यह खेल शुरू किया था। महाभारत में भी इस खेल बाबत पूरा विवरण दिया गया है जिसमें चार लोगों का एक साथ खेल खेलने का वर्णन है। इस खेल में 64 घरों का उल्लेख है। संस्कृत में इस चतुरंग खेल पर अनेक ग्रंथ मिलते हैं। मिसाल के तौर पर चतुरंगक्रीडन, चतुरंगप्रकाश, चतुरंगविनोद आदि इसी प्रकार के ग्रंथ हैं।

यह एक ऐसा खेल है, जो गरीब-अमीर, ऊँच-नीच, गाँव-शहर, हर वर्ग और हर क्षेत्र के लोगों में प्रचलित है। एक जमाने में यह खेल प्रायः हर घर में खेला जाता रहा है परन्तु जब से टी.वी., मोबाइल और 'जीयो' का जमाना आया है, बच्चे टी.वी., मोबाइल, कम्प्यूटर आदि से चिपके रहते हैं। शतरंज का खेल आम जीवन से दूर होता जा रहा है। यह समस्या पहले से ही है कि बच्चे मैदानी खेलों से दूर होते जा रहे हैं। गली-गली में खेले जाने वाले गिल्ली-डंडा, हरदड़ा, सतौलिया, लुकमिचनी जैसे खेल अब बीते जमाने की बातें हो गई हैं। अब तो खेल दूर, बच्चे को घर से बाहर गली में जाने की भी छूट नहीं है। छोटे-छोटे बच्चों के माँ-बाप काम पर जाते समय घर के बाहर ताला लगा जाते हैं, ताकि वे घर से बाहर निकलकर उछलकूद न कर सकें, सजायाफ्ता बंद जेल के बंदी के मानिंद।

कुछ माँ-बाप उदारतावश घर के बाहर ताला नहीं लगाते परन्तु वे बच्चों को सख्त हिदायत देना नहीं भूलते, अन्दर से कुंडी लगाए रखें, हमारे आने से पहले गेट किसी सूरत में न खोलें। ये बच्चे भी खुली जेल के बंदी बनकर माँ-बाप से कोई ज्यादा खुश नहीं रह पाते। इंतजार में केवल अपना दिन तोड़ते रहते हैं। अतः इस स्थिति में यदि बच्चों को घर पर शतरंज खेलने का अवसर दिया जाए, तो बच्चे खुशी-खुशी खेल भी खेलते रहेंगे और मन ही मन माँ-बाप को भी नहीं कुढ़ेंगे। इसकी शुरूआत स्कूली शिक्षा से की जा सकती है।

शतरंज का खेल अनंत संभावनाओं का खेल है। इसकी चालें और उसके तौर-तरीके असंख्य है पता नहीं, कब किसकी बाजी पलट जाए? कोई नहीं कह सकता। एक सही चाल और एक गलत चाल खेल का पासा पलट सकती है। यह खेल जितनी बार खेला जाता है, उतनी बार ही नई-नई चालें सामने आती हैं। इस खेल में माहिर से माहिर खिलाड़ी भी दावे से यह नहीं कह सकता है कि इसमें इतनी सौ हज़ार या लाख चालें है। वह भी अगले ही खेल में नई चाल तलाश लेता है। इस तरह यह खेल असीमित आयामों में बिखरा हुआ है। सीखना भी कुछ ऐसा ही है। सीखने के बारे में मनोविज्ञानी, शिक्षा शास्त्री, न्यूरो के ज्ञाता अपने शोध तर्क से सीखने को परिभाषित करते हैं। उनकी परिभाषाएँ सदैव बदलती रही हैं। उनकी परिभाषाओं से सीखने का कोई सम्यक् स्वरूप हमारे सामने नहीं आ रहा। वे सीखना-कैसे? कब? क्यों? कितना आदि के जवाब भी ठीक-ठीक से नहीं दे पा रहे। वे अपनी-अपनी बुद्धि और समझ से केवल कुछ प्रयोग या अनुभव हमारे साथ साझा कर रहे हैं।

एक समय था। जब कहा जाता था कि बच्चा कच्ची मिट्टी का लौंदा है। शिक्षक जब चाहे जैसे चाहे उसे आकार दे सकता है, अर्थात् वह बच्चे को शिक्षक, व्यापारी, डॉक्टर, नेता आदि कुछ भी बना सकते हैं। कबीर जी कहते हैं-

गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है
गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट
अंतर हाथ सहारि दै
बाहर बाहै चोट

शिक्षक प्रशिक्षण स्कूलों और महाविद्यालयों में यह ज्ञान बरसों तक दिया गया। ज्ञान प्राप्ता को यह ज्ञान पचे या न पचे, पर उनको डिग्री इसी ज्ञान के आधार पर मिलनी थी, सो वे रटते गए और पास होते गए। शिक्षक बनते गए। शिक्षा अधिकारी भी बनते गए। अब शिक्षक या

शिक्षा अधिकारी कैसे बने या कैसे बनने चाहिए थे, यह दीगर बात है. परंतु बन गए।

दूसरा जमाना आया। कहा गया, बच्चा कोरा कागज या मिट्टी का लौंदा नहीं है, बल्कि वह तो जन्म के साथ ही अन्तर्निहित ज्ञान लेकर पैदा होता है। शिक्षक केवल बच्चे के उस अन्तर्निहित ज्ञान को प्रकाश में लाने का काम करता है। शिक्षक अपनी ओर से ज्ञान नहीं देता बल्कि केवल उस बच्चे को सीखने के मौके प्रदान करता है। वह जामवंत की भाँति हनुमान बने बच्चों को मात्र अपनी शक्ति पहिचानने के मौके मुहैया करवाता है। सभी शिक्षक-प्रशिक्षण स्कूल और महाविद्यालय इसी तर्ज़ पर शिक्षक-विद्यार्थियों को तैयार करते रहे। विभिन्न शॉर्ट टाइम प्रशिक्षण शिविरों में यथा सर्वशिक्षा अभियान/ डी. पी. ई. पी/ लोक जुम्बिश आदि में इसी शिक्षा प्रणाली को लागू करने पर बल दिया गया। शिक्षण सामग्री और गतिविधियाँ इसी अवधारणा पर केन्द्रित रखकर संचालित की गई। शिक्षा के सभी सोपानों में शिक्षक, शिक्षक न रहकर मात्र सुविधा प्रदाता बनकर अपने दायरे में सिमट सा गया था।

तीसरा दौर आया, वर्तमान का। कहा गया प्रत्येक बच्चा महत्त्वपूर्ण है। वह ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है। वह माहौल से सीखता है। यहाँ शिक्षक की भूमिका मददगार की है। वह तीनों बातों पर नजर रखते हुए बच्चे को सीखने का माहौल करवाएगा। वह इन तीन बातों में से किसी का अतिक्रमण नहीं करेगा। आज के दौर में ऊपर की सीखने की दोनों प्रक्रियाओं का समाहार कर दिया गया। इसमें बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता पर भी भरोसा किया गया और माहौल की महत्ता को भी स्वीकार किया गया।

सीखने के इस संक्षिप्त विकास क्रम में हमने देखा कि सीखने का कोई एक नियत क्रम नहीं है। इसके इधर-उधर के कई ओर-छोर हैं। शतरंज की तरह यहाँ भी कई तरह के आयाम हैं। इस खेल के जरिये हम सीखने की पारंगता को हासिल कर सकते हैं। 'प्रत्येक बच्चा अपने तरीके से सीखता है' की प्रक्रिया में बच्चा विविध सीखने के आयामों से रूबरू हो सकता है। वह मुहरों की कई आड़ी-तिरछी-सीधी चालों की उलझन को सुलझाने का प्रयास करता है। इस प्रयास की प्रक्रिया में उसका सीखना स्वाभाविक रूप से परिपक्व होता जाता है। वह समझने लगता है कि सीखने के विविध रूप हैं। उसके किसी एक रूप पर ठहर कर न तो हमें रुकना है, न विचलित (सीख/सिखा न पाने के कारण) होना है, बल्कि आगे बढ़ते जाना है। सीखने की और लगातार प्रयत्नशील बने रहना है। सीखने के किसी न किसी रूप पर ठहर कर हम जरूर अधिगम्य हो पाएँगे और उस अधिगम के आनंद में सराबोर हो पाएँगे। जब सीखना और आनंद का समागम हो जाए तब सीखने का उच्चतम स्तर सहज ही प्राप्त हो जाता है। यही हमारा या शिक्षार्थी का अंतिम लक्ष्य है। शतरंज का खेल इस लक्ष्यपूर्ति में बच्चे की बराबर मदद करता है।

सीखने-सिखाने में आकलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हम आकलन शब्द में सीखने की पूरी प्रक्रिया समाहित है। इस शब्द में 'आ' उपसर्ग का अर्थ है, तक या पर्यन्त तथा कलन का अर्थ गिनना या गणना करना है। बच्चा सीखने की प्रक्रिया में इसी गणना प्रक्रिया से गुजरता है। वह संबंधित विषय/ समस्या, विभिन्न तथ्यों तर्कों, बिन्दुओं तथा संक्रियाओं में बार-बार अनुमान लगाता है, साथ ही उसके संभाव्य निष्कर्ष निकालता है। इसी तरह वह बार-बार सीखने के उपकरणों, सामग्री आदि के संभाव्य रूप का आकलन करता है और फिर उसको तर्क की कसौटी पर परखता है। कभी उसके निष्कर्ष ठीक दिशा में जाते हैं और कभी नहीं परन्तु उसकी आकलन की प्रक्रिया चलती रहती है। इस लिहाज से शतरंज का खेल उसकी आकलन प्रक्रिया में मददगार बनता है और उसके सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाता है।

बच्चा सीखने की प्रक्रिया में बार-बार अपने सीखे ज्ञान से आगे बढ़ने का प्रयास करता है। उसी तरह, जैसे एक सधा हुआ खिलाड़ी अपने मुहरों को सही प्रकार से नियत करता है, ताकि प्रतिद्वन्द्वी खिलाड़ी उस पर आक्रमण न कर सके और आक्रमण हो, तो भी अधिक नुकसान सामने वाले का हो। इस खेल में वह कभी सफल होता है, कभी नहीं। इसमें आकलन प्रक्रिया की तरह सफल/असफल का खेल अनवरत चलता रहता है। इस खेल के माध्यम से बच्चा आकलन के विविध पहलुओं से परिचित होता जाता है। बचाव, आक्रमण, स्पोर्ट, चैक, मेट करता-करता वह आकलन के बहुआयामी स्वरूप में महारथ हासिल कर लेता है। जब वह आकलन के सही रूप में दक्ष हो जाता है तो उसकी सीखने की क्षमता बढ़ने लगती है।

सीखना एक सतत चलने वाली प्रक्रिया हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे को धीरज के साथ सीखने की ओर आगे बढ़ना पड़ता है। वह इस प्रक्रिया में बार-बार एक ही संक्रिया करते हुए भी नवीनता का आस्वाद करता है। शतरंज की तरह सीखने में निष्णात होने के लिए उसके मुहरों उपकरणों के साथ लगातार जूझना पड़ता है। इस जूझ में वह सदैव खेल सीखने की नई-नई चालें ईजाद करता है। वही खेल वही मुहरे, वही चाल, फिर भी हर नई बाजी में नई चालें, नए पैंतरें। इस तरह खिलाड़ी हर बाजी में कुछ न कुछ नया सीखता रहता है। यही बात सीखने पर लागू होती है। शतरंज के खेल की भाँति बच्चा हर पल नये अनुभव से गुजरते हुए कुछ न कुछ नया सीखता है। बच्चा शतरंज से साम्य बनाते हुए सीखने में भी पर्याप्त धीरज और नवोन्मुखता का अभ्यस्त होने लगता है। उसे खेल की तरह पठन-पाठन में भी आनंद आने लगता है।

संस्कृत में कहा भी गया हैः-

शनैः पंथाः शनैः कंथाः
शनैः पर्वतारोहणम्
शनैः विद्याः शनैः वित्तम्
पंचैतानि शनैः शनैः।

शतरंज के खेल में महारथ हासिल करने के लिए खिलाड़ी को उसके एक-एक अंग हाथी घोड़ा, ऊँट, वजीर आदि की विविधगामी चालों को जानना जरूरी होता है। उसी प्रकार किसी विषय, तथ्य, विचार, भाव अथवा प्रस्तुत की समझ बनाने के लिए संबंधित के विविध पहलुओं से अवगत होना पड़ता है। इसके एक-एक चरण की सिलसिलेवार जानकारी रखनी जरूरी होती है। उदाहरण के तौर पर व्याकरण की पक्की समझ बनाने के लिए उसके विविध घटकों संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि की ठीक समझ होना जरूरी है। इन सभी घटकों उप घटकों की सम्यक् समझ होने पर व्याकरण की सम्यक् समझ बन जाती है। यही बात ज्ञान के अन्य विषयों पर भी लागू होती है। यहाँ घटकों के एक एक बिन्दु की समझ को विश्लेषण और उन सभी की समग्र समझ को संश्लेषण के तौर पर समझा जा सकता है। किसी विषय के अधिगम के इन तौर तरीकों को हम शतरंज के जरिए बखूबी

शेष पृष्ठ 36 पर...

आदेश-परिपत्र : जुलाई, 2018

● 1. विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को इन्टरनेट के जरिए खेले जाने वाले गेम्स के प्रति सतर्कता बरतने एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरुकता बाबत्। ● 2. राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षकों द्वारा वैयक्तिक अध्यापन (ट्यूशन) एवं कोचिंग संस्थाओं में अध्यापन/संचालन की प्रवृत्ति पर नियंत्रण बाबत। ● 3. माध्यमिक शिक्षा के समस्त कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों का विवरण शालादर्पण पोर्टल पर फीड करने का प्रमाण-पत्र भिजवाने बाबत। ● 4. शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों को शाला दर्पण पर इंटीग्रेट करने के सम्बन्ध में। ● 5. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अंतर्गत ज़ारी दिशानिर्देशों में वर्ष 2018-19 की बजट घोषणा 74 के अनुसार एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में। ● 6. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ' योजना के जारी दिशा-निर्देशों में वर्ष 2018-19 की बजट घोषणा संख्या 74 के अनुसार एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में। ● 7. पुस्तकालयों के बेहतर उपयोग एवं संचालन के संबंध में दिशा-निर्देश।

1. विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को इन्टरनेट के जरिए खेले जाने वाले गेम्स के प्रति सतर्कता बरतने एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरुकता बाबत्।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/विविध/2016/212 दिनांक 30.4.2018 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक/प्रारम्भिक-प्रथम/द्वितीय। ● विषय : विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को इन्टरनेट के जरिए खेले जाने वाले गेम्स के प्रति सतर्कता बरतने एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरुकता बाबत्। ● प्रसंगः- **1.** रिट याचिका(सिविल) संख्या-943/17 सह रि.या. (सि.) संख्या-872/17 स्नेहा कालिता व अन्य बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया में पारित निर्णय दिनांकः 20.11.2017 **2.** रिट याचिका (सिविल) संख्या 728/15 अर्जुन गोपाल व अन्य बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया व अन्य में माननीय न्यायालय नई दिल्ली द्वारा पारित आदेश दिनांकः 12.09.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक रिट याचिकाओं के निर्णयों के अनुसार विद्यालयों में अध्ययनरंत विद्यार्थियों को इन्टरनेट के जरिए खेले जाने वाले खेलों (गेम्स) के प्रति सतर्कता बरतने एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरुकता बाबत आप अपने क्षेत्राधीन विद्यालयों में निम्नानुसार कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करावें :-

विद्यालय में इंटरनेट और डिजिटल तकनीकियों के सुरक्षित एवं प्रभावी उपयोग हेतु दिशा निर्देश :-

1. सूचना तकनीकी अधिगम का महत्त्वपूर्ण स्रोत है तथापि यदि विद्यार्थी इंटरनेट का उपयोग बिना जागरुकता के उपयोग करते है तो वे अवैध गतिविधियों यथा साइबर धमकियाँ, फ्रॉड अथवा और गंभीर स्थितियों के शिकार हो सकते है। अतः इंटरनेट सुरक्षा मानकों के प्रति जागरुकता अपरिहार्य है, ताकि बच्चे निर्भय होकर ज्ञान का अन्वेषण कर सकें। विभिन्न इलेक्ट्रोनिक युक्तियों को बढ़ते प्रसार के कारण विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा इनके उपयोग का समुचित प्रबोधन एवं नियंत्रण आवश्यक हो गया है।
2. विद्यालयों में प्रभावी शिक्षण-अधिगम सुनिश्चित करने एवं विद्यार्थियों को स्वयं सहपाठियों एवं मूल्य प्रणाली के लिए हानिकारक कार्यों में लिप्तता रोकने के लिए सुरक्षित शैक्षिक वातावरण का निर्माण आवश्यक है। एतदर्थ विद्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी युक्तियों के माध्यम से किसी अनुचित और अवैधानिक गतिविधियों की रोकथाम के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देश जारी किये जाते हैं-

- विद्यार्थियों को इंटरनेट के सुरक्षित एवं प्रभावी उपयोग के लिए शिक्षित किया जाए।
- इंटरनेट के स्वीकार्य सीमा तक उपयोग के सम्बन्ध में नियमों से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाए एवं इस सम्बन्ध में विशिष्ट नियमों को प्रदर्शित किया जाए।
- सभी कम्प्यूटरों में फॉयरवॉल्ज फिल्टरिंग और मॉनिटरिंग के लिए उचित सॉफ्टवेरय इंस्टॉल किए जाए तथा फिल्टरिंग और ब्लॉकिंग प्रणालियों की निरन्तर समीक्षा की जाए। इंटरनेट पर उपलब्ध अवांछित सामग्री ब्लॉक किया जाए।
- अन्य स्कूल नेटवर्क से इंटरनेट के उपयोग को पृथक रखा जाए।
- समुचित मानकों के अनुसार एन्टीवायरस अथवा पैरेन्टल कण्ट्रोल फिल्टर्स युक्त कम्प्यूटर्स का उपयोग किया जाए।
- डिजिटल निगरानी प्रणाली का उपयोग किया जाए।
- बच्चों के इंटरनेट उपयोग की सुविधा विद्यालय में इस प्रकार रखी जाए जिससे इंटरनेट के उपयोग के दौरान बच्चे अच्छी तरह दिखाई देते रहे।
- शैक्षिक उद्देश्यों के आलोक में समस्त ऑनलाइन गतिविधियों का परिवीक्षण और प्रबोधन किया जाए।
- विद्यार्थियों को उनके आयु समूह अनुसार पूर्व निर्धारित चुनिंदा वेबसाइट्स का उपयोग ही अनुमत किया जाए।
- अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य स्कूल स्टाफ को इंटरनेट सुरक्षा मानकों के प्रति जागरुक किया जाए।
- फिल्टरिंग प्रणाली को भेदकर अथवा अनुचित तरीके से या अवैध सामग्री देखते पाए जाने पर सख्त अनुशासनिक कार्यवाही की जाए।
- विद्यालय छोड़ देने पर सम्बन्धित का यूजरनेम और पासवर्ड तत्काल बंद किए जाएँ।
- काल्पनिक नामों से बच्चों अथवा समूहों के अकाउंट बनाने की अनुमति नहीं दी जाए।
- सभी सू. प्रौ. युक्तियों पर कॉपीराइट, संपदा चोरी, फ्रॉड, अश्लीलता आदि को रोकने से सम्बन्धित कानूनों की पालना की जाए, जो उनकी निजता को प्रभावित करे।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा के लिए विद्यालय की वेबसाइट्स पर विद्यार्थियों शिक्षकों आदि का व्यक्तिगत फोटो, वीडियो आदि प्रदर्शित नहीं की जाएँ।

- सॉफ्टवेयर के केवल अनुज्ञप्त संस्करण (Licensed Vertion) ही उपयोग किए जाएं।
- इलेक्ट्रॉनिक युक्तियों के सुरक्षित उपयोग के लिए विद्यालय की एक नीति बनाई जाए।

3. स्कूल बस में बच्चों की सुरक्षा के लिए यह सुझाव है कि प्रत्येक स्कूल बस में आपातकालीन स्थिति में उपयोग हेतु बेसिक मॉडल का फोन (बिना इंटरनेट और डाटा स्टोरेज सुविधा) का उपलब्ध कराया जाए।
4. मोबाइल फोन के विद्यालय में उपयोग हेतु इस कार्यालय के पत्र क्रमांकः शिविरा-माध्य/मा-स/22444/विविध/2015-16 दिनांकः 31.03.2016 की सख्ती से पालना की जाए।
5. इलेक्ट्रॉनिक संप्रेषण युक्तियाँ एवं वे सभी युक्तियाँ जो दृश्य-श्रव्य सामग्री को चला सकती है अथवा रिकॉर्ड/स्टोर कर सकती हैं, फोटो प्रेषित अथवा प्राप्त कर सकती हैं अथवा इंटरनेट का असुरक्षित (Unfiltured) उपयोग कर सकती हैं यथा- आईपैड्स, डीवीडी/सीडी/प्लेयर्स, गेम कन्सोल्ज, हैण्डहेल्ड पीसी, स्मार्टफोन, लैपटॉप, टेबलैट अथवा समान प्रकृति और क्षमता वाला और कोई गैजेट विद्यालय और स्कूल बस में बिना पूर्वानुमति और विद्यालय प्रशासन से पुष्टि किए अनुमत नहीं किया जाए। संस्थाप्रधान और यातायात प्रभारी बस चालक और अटेण्डेंट के मोबाइल फोन की आवश्यकत रूप से जाँच करें।
6. इलेक्ट्रॉनिक संप्रेषण युक्ति का अनियंत्रित उपयोग विद्यालयों और स्कूल बस में सख्त प्रतिबंधित है। इसके उल्लंघन की शिकायत मिलने पर सख्त अनुशासनिक कार्यवाही की जाएगी।
7. विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रणाली प्रशासकों के लिए सूचना-सुरक्षा की जागरुकता सामग्री http://infosecawareness.in पर उपलब्ध है।
8. विद्यार्थियों के अवांछित गतिविधियों में लिप्त होने के कारण शोषण से रोकथाम के लिए उपर्युक्त निर्देशों की सख्ती से पालना के लिए संस्थाप्रधानों को निर्देशित किया जाता है।

विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरुकता बाबत दिशा-निर्देशः-

1. वन क्षेत्र एवं पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में वन एवं पर्यावरण क्लब के गठन हेतु विभाग के परिपत्र क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/स/नीतिगत दस्तावेज/2013-14 दिनांक : 12.06.2014 द्वारा निर्देश जारी किए गए। अतः समस्त राजकीय विद्यालयों में पर्यावरण क्लब की स्थापना किया जाना सुनिश्चित करावें।
2. संस्था में व इसके इर्द-गिर्द प्रतिबंधित पॉलीथिन नजर नहीं आये व प्रतिबंधित पॉलीथिन बैग का प्रयोग विद्यालय, विद्यालय प्रांगण एवं स्कूल बस में न हो।
3. विद्यालय परिसर साफ-सुथरा रहें एवं उसमें पेड़-पौधे लगाये जाकर विद्यालय परिसर को सुन्दर बनाए रखा जावे।
4. विद्यालय परिसर में नये प्रवेश एवं अन्य विद्यार्थियों से अधिकतम छायादार एवं फलदार पेड़ लगवाया जावे व सूचना पट्टिका पर विद्यार्थी का नाम अंकित कर पेड़ पर टांगी जावे।
5. पेड़ की सुरक्षा हेतु लोहे की जाली/ कांटेदार बाड़ रक्षा कवच के रूप में लगाई जाए।
6. लगाए गए पौधे की सुरक्षा व रखरखाव की जिम्मेवारी विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से दी जावें।
7. इसके लिए संस्थाप्रधान एवं समस्त स्टाफ भी सक्रिय रूप से कार्य करें।

● **(मूलचंद मीना),** उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

2. राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षकों द्वारा वैयक्तिक अध्यापन (ट्यूशन) एवं कोचिंग संस्थाओं में अध्यापन/संचालन की प्रवृत्ति पर नियंत्रण बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● विषयः- राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षकों द्वारा वैयक्तिक अध्यापन (ट्यूशन) एवं कोचिंग संस्थाओं में अध्यापन/संचालन की प्रवृत्ति पर नियंत्रण बाबत।

विभाग वैयक्तिक अध्यापन (प्राईवेट ट्यशून) को शिक्षण व्यवस्था में एक बुराई मानता है। प्रयत्न यह किया जाना चाहिए कि वैयक्तिक अध्यापन की आवश्यकता न रहे। प्रायः यह देखा गया है कि वैयक्तिक अध्यापन विद्यार्थियों की संख्या के अधिक होने के कारण या अध्यापकों द्वारा अपने दायित्वों को न समझने के कारण अधिक पनपता है। उक्त प्रवत्ति पर अंकुश लगाने हेतु रचनात्मक एवं अनुशासनात्मक, दोनों प्रकार के उपाय किए जाने आवश्यक है। इस क्रम में प्रदत्त निर्देशों के अनुवर्तन में अग्रांकित बिन्दुओं की पालना समस्त सम्बन्धितों द्वारा सुनिश्चित की जाएः-

1. संस्था प्रधान को शैक्षिक कार्य का परिवीक्षण वर्ष भर लगातार करते रहना चाहिए ताकि कक्षाओं में अध्यापन सुचारू रूप से वर्ष भर नियमित चलता रहे तथा पाठ्यक्रम के यथोचित समयावधि में पूर्णता के साथ ही आवश्यकतानुसार पुनरावृत्ति कार्य भी सम्पन्न किया जा सके।
2. कमजोर अधिगम स्तर वाले विद्यार्थियों के लिए जहाँ भी आवश्यकता हो, अतिरिक्त रूप से रेमेडियल कक्षाएँ लगाई जानी चाहिए। उनके शैक्षिक स्तर में सुधार का कार्य सिद्धान्ततः विद्यालय का नियमित कार्य होना चाहिए।
3. परख व अर्द्धवार्षिक परीक्षा के प्रगतिपत्र परीक्षाएँ समाप्त होते ही पंचांग में वर्णित तिथियों के अनुसार छात्रों को वितरित कर दिए जाने चाहिए ताकि अभिभावकों को भी वस्तुस्थिति की अवगति समय पर मिलती रहे।
4. विद्यालय में नियमित रूप से पंचांगानुसार सभी कालांश में अध्यापन कार्य किया जावे। विद्यार्थियों की उपस्थिति पर विशेष ध्यान दिया जावे। आठों कालांशों में विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए मध्यान्तर से पूर्व एवं पश्चात् न्यूनतम दो बार उपस्थिति दर्ज की जाए तथा संस्थाप्रधान द्वारा कक्षा परिवीक्षण कार्य भी नियमित

रूप से कालांश परिवर्तन करते हुए किया जाए।

5. सामान्यतः उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, लेखा शास्त्र व अंग्रेजी तथा माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में अंग्रेजी, गणित व विज्ञान विषयों में ट्यूशन की प्रवृत्ति रहती है। अतः इन विषयों के उचित समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने एवं अध्यापक डायरी संधारण पर सतत् नजर रखते हुए विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से संस्था प्रधान द्वारा समय-समय पर संपर्क एवं पूछताछ अपेक्षित है ताकि विद्यार्थियों में विद्यालय/कक्षा शिक्षण से पलायन की प्रवृत्ति को रोका जा सके।
6. सभी विषयों का पाठ्यक्रम समय पर पूर्ण हो, इसके लिए संस्था प्रधान सभी अध्यापकों से प्रतिमाह पढ़ाए गए पाठ्यक्रम की प्रगति सूचना लिखित में प्राप्त करें तथा जो अध्यापक इस बाबत किसी भी किस्म की कोताही बरते, उनके विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रस्ताव सक्षम प्राधिकारी को तत्काल प्रस्तुत किए जाने की कार्यवाही तत्परता से अमल में लाई जाए।
7. शिक्षक- अभिभावक परिषद (PTA) की प्रत्येक बैठक में विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के बारे में अभिभावकों से सार्थक विमर्श किया जाए तथा उन्हें प्रेरित किया जाए कि वे विद्यार्थी को विद्यालय में पूरे समय उपस्थित रहने के लिए पाबन्द करें।
8. प्रायोगिक कक्षाओं के लिए विषयवार चार्ट बनाकर प्रदर्शित किया जावे तथा उसी अनुरूप प्रायोगिक कार्य सम्पन्न करवाया जावे।
9. अध्यापकों को वैयक्तित्व ट्यूशन करने की अनुज्ञा देने का अधिकार सम्बन्धित संस्थाप्रधान को है। उक्तानुसार बिना अनुमति प्राप्त किए कोई भी अध्यापक ट्यूशन नहीं कर सकता हैं उक्त क्रम में यह ध्यान रहे कि विभागीय नियमानुसार उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के लिए दो तथा उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए तीन विद्यार्थियों से अधिक ट्यूशन करने की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी। यहाँ उल्लेखनीय है कि संस्थाप्रधान अनुमति देने से पूर्व गुणावगुण के आधार पर परीक्षण करें तथा नियमित प्रबोधन करें। ट्यूशन के कारण अध्यापक के विद्यालय में नियमित कार्य में व्यवधान आने पर संस्थाप्रधान द्वारा ट्यूशन की अनुज्ञा निरस्त की जा सकेगी। वैयक्तिक अध्यापन की स्वीकृति के लिए संस्थाप्रधान को प्रस्तुत किए जाने वाले प्रार्थना पत्र का प्रारूप (परिशिष्ट-1) संलग्न है।
10. इसी प्रकार गैर सरकारी तौर पर संचालित कोचिंग केन्द्रों में अथवा बिना अनुमति के घर पर अनाधिकृत रूप से अध्यापन करवाने वाले शिक्षकों के विरुद्ध शिकायत प्राप्त होते ही सम्बन्धित नियंत्रण अधिकारी द्वारा तत्काल प्रसंज्ञान लिया जाकर शिकायत के सत्यापन की कार्यवाही सम्पादित की जानी चाहिए। जाँच कार्यवाही में शिकायत में वर्णित तथ्यों के प्रथम दृष्ट्या पुष्टि की स्थिति में सम्बन्धित अपचारी कार्मिक के विरुद्ध तत्काल 'राजस्थान सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम-1958' तथा 'राजस्थान सिविल सेवा (आचरण) नियम-1971' के प्रावधानान्तर्गत अविलम्ब अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रारम्भ की जानी चाहिए अथवा सक्षम प्राधिकारी को समुचित प्रस्ताव भिजवाया जाना सुनिश्चित किया जाए। शिकायत प्राप्त होने तथा जाँच पश्चात् चिह्नित किए गए अपचारी कार्मिकों के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही में जिस स्तर पर विलम्ब कारित होने के तथ्य प्रकाश में आएँगे, तत्सम्बन्धी अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध कठोर विभागीय कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।
11. यहाँ यह ध्यान रखा जाए कि उपर्युक्तानुसार वर्णित विभागीय व्यवस्था के विपरीत ट्यूशन करने/व्यक्तिगत लाभ हेतु बिना अनुमति अन्यत्र शिक्षण करने वाले वाले अध्यापकों को सम्बन्धित संस्थाप्रधान द्वारा प्रारम्भ में एक बार लिखित चेतावनी देकर पाबन्द करने की कार्यवाही सम्पादित की जाए। इसके पश्चात भी सम्बन्धित अध्यापक द्वारा नहीं मानने की स्थिति में 'राजस्थान सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम- 1958' तथा 'राजस्थान सिविल सेवा (आचरण) नियम-1971' के प्रावधानान्तर्गत अविलम्ब अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रारम्भ कर दी जाए।
12. सभी विषयाध्यापकों से ट्यूशन नहीं करने के सम्बन्ध में शपथ पत्र सत्रारम्भ में ही प्राप्त कर लेवें तथा प्रतिमाह ट्यूशन के बारे में लिखित जानकारी प्राप्त कर अग्रांकित प्रारूप में रजिस्टर संधारण की कार्यवाही सुनिश्चित करें।

समस्त विभागीय परिवीक्षण अधिकारी विद्यालय परिवीक्षण के दौरान विद्यार्थियों तथा संस्थाप्रधान से परिपत्र में वर्णित निर्देशों की पालना के सम्बन्ध में वस्तुस्थिति का आकलन कर निरीक्षण रिपोर्ट में उक्तानुसार अंकन किया जाना सुनिश्चित करेंगे। विभागीय निर्देशों की पालना/अवहेलना की स्थिति में संस्थाप्रधान को यथोचित निर्देश एवं सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी को तत्काल सूचित किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

●संलग्नः- परिशिष्ट-1

क्रमांकः शिविरा-माध्य/मा-स/22459/2013-18/211 दिनांकः 6.6.2018

● **(नथमल डिडेल),** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

वैयक्तिक अध्यापन हेतु संधारित किए जाने वाले रजिस्टर का प्रारूप

क्र. सं.	नाम अध्यापक	पद	वैयक्तिक अध्यापन करने वाले विद्यार्थियों का विवरण			कक्षा तथा विषय जिसमें अध्यापक द्वारा कक्षा शिक्षण करवाया जाता है	वैयक्तिक अध्यापन को दिया जाने वाला प्रतिदिन कुल समय	पारिश्रमिक जो प्राप्त करेंगे	संस्थाप्रधान द्वारा प्रदत्त अनुज्ञा क्रमांक व दिनांक	विशिष्ट विवरण
			क्र.सं.	कक्षा	विषय					
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

परिशिष्ट–1

–:: वैयक्तिक अध्यापन के लिए प्रार्थना पत्र::–

1. प्रार्थी का नाम (अध्यापक)
2. पद मय विषय
3. विद्यालय का नाम
4. विद्यार्थी का नाम व कक्षा (वर्ग सहित)
5. क्या विद्यार्थी अध्यापक द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षा में पढ़ता है?
6. वैयक्तिक अध्यापन का विषय
7. इसी सत्र में इससे पूर्व वैयक्तिक अध्यापन का विवरण
8. विद्यार्थी द्वारा अध्यापक को दिया जाने वाला पारिश्रमिक
9. इस वैयक्तिक अध्यापन के लिए खर्च होने वाला समय
   (घंटे प्रतिदिन) – (सप्ताह में कुल घंटे) –
10. अध्यापक द्वारा घोषणा :–

I. मैं घोषणा करता/ करती हूँ की वैयक्तिक अध्यापन से मेरे विद्यालय के कार्य में कोई बाधा नहीं पहुँचेगी।

II. मैं वैयक्तिक अध्यापन हेतु विभाग द्वारा जारी नियमों एवं निर्देशों का पूर्णरूपेण पालन करूँगा/ करूँगी।

तिथि हस्ताक्षर अध्यापक

पिता/संरक्षक द्वारा घोषणा

मैं.....पिता/संरक्षक..... घोषित करता हूँ कि मैं.....को श्री/श्रीमती/ सुश्री.....पद..... के पास पढ़ाना चाहता हूँ और रूपये.....नियमित मासिक पारिश्रमिक देता रहूँगा।

तिथि हस्ताक्षर पिता/संरक्षक

स्वीकृति देने वाले सक्षम अधिकारी द्वारा आज्ञा

हस्ताक्षर स्वीकृति अधिकारी मय मुहर

3. माध्यमिक शिक्षा के समस्त कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों का विवरण शालादर्पण पोर्टल पर फीड करने का प्रमाण–पत्र भिजवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः–शिविरा–मा/ शालादर्पण/ 60304/ 2018/ 40 दिनांकः–27.4.18 ● समस्त उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा, ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा ● समस्त एडीपीसी. रमसा ● आई.ए.एस.ई. बीकानेर/अजमेर। गुरुनानक भवन संस्थान जयपुर ● **विषय**:माध्यमिक शिक्षा के समस्त कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों का विवरण शाला दर्पण पोर्टल पर फीड करने का प्रमाण–पत्र भिजवाने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि निदेशालय, उपनिदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी, आई.ए.एस.ई. बीकानेर तथा अजमेर एवं गुरुनानक भवन संस्थान सहित माध्यमिक शिक्षा के समस्त कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों का विवरण शाला दर्पण पर फीड किया जाना था। इस हेतु पूर्व में निर्देश जारी किए जा चुके हैं। अपने कार्यालय में कार्यरत समस्त कार्मिकों का विवरण शाला दर्पण पर फीड किया जाना सुनिश्चित कर तीन दिवस में संलग्न प्रारूप में प्रमाण–पत्र ईमेल/पत्र से भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

● संलग्न – प्रमाण–पत्र का प्रारूप

● ई मेल– ad.shaladarpan.dse@rajasthan.gov.in

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

कार्यालय का नाम .....

क्रमांक :– दिनांकः

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि इस कार्यालय में कार्यरत समस्त कार्मिकों का कार्यग्रहण शालादर्पण पर करवा दिया गया है तथा समस्त कार्मिकों का विस्तृत विवरण प्रपत्र–10 एवं फोटो अपलोड आदिनांक तक पूर्ण कर दिए गए है। कोई कार्मिक शालादर्पण पर उपरोक्त प्रविष्टियों से वंचित नहीं है व मेरे कार्यालय में किसी भी कार्मिक को ऑफलाईन कार्यग्रहण व कार्यमुक्त नहीं किया जाता है। उपरोक्त विषय में कोई भी असत्यता पाई जाती है तो इसकी समस्त जिम्मेदारी मेरी स्वयं की होगी। इस आशय का यह प्रमाण पत्र मैं सादर आपको प्रस्तुत करता हूँ।

हस्ताक्षर एवं मोहर

4. शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों को शाला दर्पण पर इंटीग्रेट करने के सम्बन्ध में।

● **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्** ● क्रमांक : रामाशिअ/ जय/ शालादर्पण/ 2018/227 दिनांकः12/06/2018 ● 1. निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर (राजस्थान)● 2. निदेशक सीमेट गोनेर, जयपुर। ● 3. सचिव राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, राजस्थान। ● 4. समस्त उपनिदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी मा. शि. कार्यालय राजस्थान। ● 5. समस्त उपनिदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी, ब्लाक प्रा. शिक्षा अधिकारी, कार्यालय निदेशक प्रा. शि. राजस्थान। ● 6. अति. जिला परियोजना समन्वयक रामाशिप. समस्त जिले। ● 7. अति. जिला परियोजना समन्वयक राप्राशिप. समस्त जिले। ● विषयः– शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों को शाला दर्पण पर इंटीग्रेट करने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि शाला दर्पण पर शिक्षा विभाग के प्रत्येक कार्यालय के स्वीकृत पदों की मैपिंग की जा चुकी है, इस सम्बन्ध में उपर्युक्त समस्त कार्यालय निम्न बिंदुओं की अक्षरशः पालना सुनिश्चित करें:–

A. उपर्युक्त कार्यालयों में कोई भी कार्मिक शाला दर्पण पर कार्य ग्रहण एवं अन्य प्रविष्टयों से शेष न रहे। इस हेतु दिनांक 20 जून 2018 तक समस्त प्रविष्टयों को शाला दर्पण पर पूर्ण कर लेवें।
B. समस्त कार्मिकों का प्रपत्र–10 (विशेष रूप से कार्मिक का पूर्ण सेवा विवरण) की प्रविष्टियों का इन्द्राज कर, कार्मिक फोटो अपलोड कार्य शाला दर्पण पोर्टल पर अनिवार्य रूप से पूर्ण हो।
C. कार्यालय के समस्त कार्मिकों की ऑनलाइन कार्यमुक्ति एवं कार्यग्रहण ही मान्य होगी। इसे अनिवार्यतः सुनिश्चित किया जावे,

मार्च, 2019 तक स्थानीय वार्षिक परीक्षा आरम्भ होने के पूर्व तक दोपहर 2:40 बजे से 3:00 बजे तक कार्यक्रमानुसार प्रत्येक विद्यालयी कार्य दिवस को प्रसारित किया जाएगा। **5.** राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा प्रत्येक कक्षा हेतु पुस्तकालय कालांश का निर्धारण किया गया है। यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक विद्यार्थी पुस्तकालय की सुविधा से लाभान्वित हो, अत: रोटेशन के आधार पर प्रति सप्ताह प्रत्येक कक्षा हेतु पुस्तकालय कालांश का निर्धारण किया जाए। **6.** राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के भवनों में संचालित राजकीय माध्यमिक विद्यालय/माध्यमिक कक्षाएँ एवं राजकीय प्राथमिक विद्यालय/प्राथमिक कक्षाएँ निम्नांकित व्यवस्थानुसार संचालित की जाए :-

1.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 1 से 8
2.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 6 से 8
3.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 9 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 11 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 9 से 10
4.	माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 10)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 6 से 10 द्वितीय पारी कक्षा 1 से 5
5.	माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 10)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 10 द्वितीय पारी कक्षा 6 से 8

यदि एक ही शाला परिसर में दो विद्यालय संचालित हो तथा दो पारी में संचालन की स्वीकृति प्राप्त हो, तो माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रथम पारी में तथा प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय द्वितीय पारी में संचालित होंगे। जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक/माध्यमिक अपने स्तर पर इस व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। समन्वित विद्यालय, जो दो या दो अधिक परिसर में संचालित हैं, में समान स्तर की समस्त कक्षाएँ एक ही समय में (समान पारी में) संचालित की जाएगी।

सह-शैक्षिक गतिविधियाँ : **1.** समस्त सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन विभागीय निर्देशों के अनुरूप किया जाए। **2.** सभी राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'चाईल्ड राईट्स क्लब, वन एवं पर्यावरण क्लब, विज्ञान क्लब एवं रोड सेफ्टी क्लब' की स्थापना अनिवार्य रूप से की जाए तथा इनसे संबंधित गतिविधियों का संचालन आवश्यक रूप से किया जाए। **3.** विद्यालय में प्रत्येक शनिवार को बाल सभा का आयोजन किया जाए। बाल सभा में बच्चों को बाल संरक्षण से संबंधित मुद्दों पर बाल चलचित्र, चित्रकला प्रतियोगिता, प्रस्तुतिकरण आदि के माध्यम से उनमें बाल अधिकार एवं बाल संरक्षण के संबंध में जागरुकता उत्पन्न की जाए। इसी प्रकार बाल सभा एवं उत्सव आयोजन के अवसर पर स्कूल द्वारा स्थानीय क्षेत्र के सम्मानित व्यक्तियों, जो उसी विद्यालय से पढ़कर महत्वपूर्ण पदों पर पदस्थापित है, को बुलाकर उनसे संबोधन कराया जाए। विद्यालय में बाल सभाओं व उत्सवों के आयोजन का रिकॉर्ड भी अनिवार्य रूप से संधारित किया जाए। विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को सहशैक्षिक गतिविधियों मे सम्मिलित किया जाए। **4.** माह के अंतिम शनिवार को समस्त राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा एक कालांश में स्वैच्छिक श्रमदान किया जाएगा। **5.** शनिवारीय कार्यक्रम के अन्तर्गत उपर्युक्तानुसार बाल सभा आयोजन हेतु प्रत्येक शनिवार को समस्त आठ कालांश में से पाँच-पाँच मिनट कम करते हुए अन्तिम कालांश पश्चात् बाल सभा का आयोजन किया जाना चाहिये, जिसमें निम्नांकित विवरणानुसार कार्यक्रम को भी सम्मिलित किया जाना सुनिश्चित किया जाए :-

प्रथम शनिवार	किसी महापुरुष के जीवन पर प्रेरक प्रसंग की जानकारी
द्वितीय शनिवार	शिक्षाप्रद प्रेरक कहानियों का वाचन, विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करने के लिए 'संस्कार सभा' के अन्तर्गत दादी/नानी को सानुरोध आमंत्रित कर परम्परागत प्रेरक कहानियों का वाचन करवाना।
तृतीय शनिवार	राष्ट्रीय महत्त्व के समसामयिक समाचारों एवं घटनाओं की समीक्षा तथा प्रबुद्धजन का उद्बोधन
चतुर्थ शनिवार	सद् साहित्य, महाकाव्यों पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन
पंचम शनिवार	प्रेरक नाट्य का मंचन और विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्र भक्ति गीत गायन (माह में पाँचवा शनिवार होने पर)

उपर्युक्त निर्देशित कार्यक्रम को आवश्यकतानुसार बाल सभा से पृथक रूप से प्रार्थना सभा पश्चात् शून्य कालांश में आयोजित किए जाने के विकल्प पर भी विचार किया जा सकता है। **6.** सभी विद्यालय वार्षिक उत्सव 30 नवम्बर, 2018 तक मनाएँगे। विद्यालयों को अपनी प्रतियोगिताएँ/एस.यू.पी.डब्ल्यू. शिविर/वार्षिक उत्सव सहित अन्य गतिविधियाँ यथा-उत्कृष्ट उपलब्धि प्रदान करने वाले संस्थाप्रधान/शिक्षक एवं विद्यार्थियों को पुरस्कार इत्यादि इससे पूर्व समयावधि में समाप्त करनी होगी। यदि अपरिहार्य परिस्थितियों में 30 नवम्बर, 2018 तक वार्षिक उत्सव नहीं मनाया जा सके, तो सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी से अनुमति प्राप्त कर बाद में भी मनाया जा सकता है। इसके बाद उच्चतम कक्षाओं के संक्षिप्त विदाई समारोह (आशीर्वाद एवं अभिवादन समारोह) एवं 'सखा-संगम' जैसे कार्यक्रम ही आयोजित किए जा सकते हैं। **7.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा संचालित विद्यालय आधारित मूल्यांकन योजना के अन्तर्गत कक्षा 9 एवं 10 के लिए विद्यालय में संचालित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति में प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेना अनिवार्य होगा तथा स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास हेतु सुविधानुसार आयोजित प्रवृत्तियों में से प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम दो प्रवृत्तियों में भाग लेना अनिवार्य होगा। **8.** समस्त विद्यालयों में 'विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी.)' की कार्यकारिणी समिति की बैठक प्रतिमाह अमावस्या के दिन ही आयोजित की जाएगी। 'सर्व शिक्षा अभियान सामुदायिक गतिशीलता प्रकोष्ठ' के प्लान के अनुसार 'विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी.)' की उक्त बैठकों को 'समुदाय जागृति दिवस' के रूप में मनाया जाए। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित 'विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (एसडीएमसी.)' की बैठक प्रतिमाह अमावस्या के दिन ही आयोजित की जाए। यदि अमावस्या के दिन विद्यालय में अवकाश हो तो इनका आयोजन अगले कार्य दिवस पर किया जाएगा। ● विद्यालय प्रबंधन समिति हेतु गैर आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर से प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुरूप करवाया जाएगा।

प्रबोधन एवं प्रबन्धन :- **1.** एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली के अन्तर्गत 30 सितम्बर के आधार पर जिले के राजकीय/केन्द्रीय/निजी आदि समस्त विद्यालयों, जिनमें कक्षा 1-12 तक के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, शैक्षिक नियोजन की दृष्टि से उनकी विभिन्न सूचनाएँ, यथा विद्यार्थियों/शिक्षकों/विद्यालयों की श्रेणीवार संख्या आदि संकलित की जाए। सभी शिक्षक/संस्था प्रधान यू-डाईस सूचना संकलन प्रपत्र की समय पर पूर्ति सुनिश्चित करें। **2.** कल्प कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित विद्यालयों में कम्प्यूटर लैब का रखरखाव विद्यालय को सर्व शिक्षा अभियान से उपलब्ध कराई जा रही स्कूल फेसिलेटी ग्राण्ट/मैन्टीनेन्स ग्राण्ट से विद्यालय द्वारा करवाया जाए एवं लैब को सुरक्षित रखते हुए विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों हेतु प्रति सप्ताह अधिकतम दो-दो कालांश प्रति कक्षा लगवाए जाएँ एवं विद्यालय में उपलब्ध ई-कन्टेन्ट (विज्ञान, गणित एवं अंग्रेजी) द्वारा सम्बलन प्रदान किया जाए। **3.** राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (SIERT) उदयपुर के विज्ञान एवं गणित विभाग द्वारा सत्र के प्रत्येक माह के अन्तिम सप्ताह में निर्धारित समयानुसार विज्ञान मेला, जनसंख्या शिक्षा आधारित प्रशिक्षण, विज्ञान, गणित एवं एन.एम.एम.एस. से सम्बन्धित कुल 8 वी.सी. (वर्ष भर में) आयोजित की जाएगी।

RMSA द्वारा निर्देशित कार्यक्रम एवं गतिविधियों का आयोजन :- **1.** जुलाई-18 के प्रथम सप्ताह से सितम्बर-18 के प्रथम सप्ताह तक आदर्श विद्यालय अवलोकन कार्यक्रम के प्रथम चरण का आयोजन। **2.** स्कूल परफोरमेन्स अवार्ड हेतु शाला के समस्त मॉड्यूल में नियमित अपडेशन। ● स्वाधीनता दिवस (15 अगस्त-18) अवार्ड हेतु 31 जुलाई- 18 तक अपडेशन कार्य पूर्ण करना। ● गणतंत्र दिवस (26 जनवरी-19) अवार्ड हेतु 31 दिसम्बर- 18 तक अपडेशन कार्य पूर्ण करना। **3.** ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना (कक्षा 1 से 8 हेतु): जुलाई, अगस्त-18 माह में:- ● छात्र/छात्राओं का शाला में प्रवेश के समय ही प्रपत्र-9 में विद्यार्थी की वासस्थान से स्कूल की दूरी अंकित करने के पश्चात् कक्षा 1-8 ट्रांसपोर्ट वाउचर में पात्र/अपात्र का चयन कर सेव करें। **4.** ट्रॉंसपोर्ट वाउचर योजना (कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं के लिए): चारों तिमाहियों में अग्रांकित विवरणानुसार डिमाण्ड भरी जानी है :- ● 1 जुलाई से 30 सितम्बर-18 (15 जुलाई-18 तक) ● 1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर-18 (15 अक्टूबर-18 तक) ● 1 जनवरी से 31 मार्च-19 (15 जनवरी-19 तक) ● 1 अप्रेल से 30 जून-19 (15 अप्रेल-19 तक) **5.** सितम्बर-18 के प्रथम सप्ताह से अक्टूबर-18 के अन्तिम सप्ताह तक कक्षा-09 हेतु रेमेडियल कक्षाओं का आयोजन। **6.** अक्टूबर-18 में आत्मरक्षा शिविरों का आयोजन। **7.** वरिष्ठ अध्यापक (विषय आधारित) प्रशिक्षण: दिनांक: 16 मई से 20 जून-19 तक।

SSA सम्बन्धी दिशा निर्देश: -1. सत्र 2018-19 में ड्रॉपआउट एवं अनामांकित बच्चों के लिए संचालित आवासीय/गैर आवासीय विशेष प्रशिक्षण शिविरों के बालक-बालिकाओं को मुख्य धारा में जोड़ना सुनिश्चित करें। संस्थाप्रधान प्रतिमाह इनकी ट्रेकिंग कर सूचना प्रेषित करेंगे। **2.** शिक्षा से वंचित बालक-बालिकाएँ जो अनामांकित श्रेणी के हैं तथा जिन्हें कक्षा 1 से विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना है, उनके लिए विद्यालय में एक पृथक् कक्षा का गठन कर उसे समय विभाग चक्र में प्रदर्शित कर कालांशवार शिक्षकों को उस कक्षा में भिजवाकर उनके संघनित पाठ्यक्रम के माध्यम से अध्ययन करवाया जाए। **3.** विद्यालयों में अध्ययनरत ऐसे विद्यार्थी, जिनके अभिभावक आजीविका कमाने हेतु पलायन करते हैं, इनकी पलायन अवधि के लिए माइग्रेटरी छात्रावास का संचालन किया जाए। **4.** वर्ष पर्यन्त आयोज्य क्रियाकलाप- **i.** संदर्भ कक्षों पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को थैरेपिक एवं शैक्षिक सम्बलन। **ii.** ट्रांसपोर्ट, एस्कॉर्ट एवं रीडर अलाउंस।

उत्सव एवं अवकाश :- **1.** प्रत्येक माह में अंकित उत्सव अनिवार्यत: मनाए जाए। **2.** उत्सव के दिन रविवार/स्वीकृत अवकाश हो, तो उसे एक दिन पहिले/बाद में मनाया जाए। उत्सव के दिन आठों कालांश में शिक्षण कार्य करवाया जाए। उत्सव आयोजन हेतु प्रत्येक कालांश में से 5-5 मिनट अवधि घटाकर आठवें कालांश के पश्चात् शेष रहे समय में उत्सव मनाया जाए। **3.** 15 अगस्त तथा 26 जनवरी को पूर्ण अवकाश होते हुए भी उत्सव मनाया जाना अनिवार्य है। शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की स्वयं के विद्यालय में उपस्थिति अनिवार्य है। **4.** मध्यावधि अवकाश, शीतकालीन अवकाश तथा ग्रीष्मावकाश में विद्यालयों के मंत्रालयिक कर्मचारी केवल राजपत्रित अवकाश का ही उपभोग करेंगे। **5.** प्रत्येक संस्थाप्रधान इस पंचांग में निर्दिष्ट अवकाशों के अतिरिक्त सत्र में दो दिवसों का अवकाश घोषित कर सकते हैं, जिनमें से एक मध्यावधि अवकाश से पहले एवं दूसरा मध्यावधि अवकाश के बाद किया जाए। संस्थाप्रधान इसकी सूचना 31 जुलाई, 2018 से पूर्व नियन्त्रण अधिकारी को भेजें। अवकाश हेतु दिवसों का चयन करते समय यह ध्यान रखा जावे कि महत्त्वपूर्ण विद्यालयी कार्यक्रम अप्रभावित रहें। **6.** जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश सम्बन्धित जिले के विद्यालय में मान्य होंगे।

मूल्यांकन एवं परीक्षा :- **1.** कक्षा - 6 से 12 की परख, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षा एवं पूरक परीक्षाएँ (कक्षा-8 में डाईट तथा कक्षा-10 एवं 12 में वार्षिक परीक्षा के स्थान पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा परीक्षा ली जाएगी) इस पंचांग के अनुसार सम्पन्न की जाए तथा परीक्षा परिणामों की घोषणा तथा विद्यार्थियों को प्रगति पत्रों का वितरण 30 अप्रेल, 2019 को अनिवार्य रूप से कर दिया जाए। **2.** कक्षा-1 से 5 में SIQE के अन्तर्गत CCE के तहत तीन योगात्मक आकलन अग्रांकित विवरणानुसार सम्पादित किए जाएँगे:-

टर्म	पाठ्यक्रम विभाजन	योगात्मक आकलन आयोजन माह
प्रथम	लगभग 45%	सितम्बर - 2018
द्वितीय	लगभग 40%	जनवरी - 2019
तृतीय	लगभग 15%	बोर्ड परीक्षा से पूर्व

कक्षा - 5 हेतु तृतीय योगात्मक आकलन के स्थान पर 'प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन' का आयोजन किया जाएगा, जिसके लिए तिथियाँ पृथक से निर्धारित की जाएगी। **3.** परख अवधि में शाला समय से पूर्व विद्यार्थियों को अगले दिवस परख की तैयारी हेतु छोड़ा जा सकता है, लेकिन कर्मचारी पूरे समय तक उपस्थित रहेंगे। **4.** सभी स्तर के विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा के लिए क्रमश: एक एवं दो दिवसों का परीक्षा तैयारी अवकाश रहेगा। इन दिनों में विद्यालय खुलेंगे और अध्यापक एवं मंत्रालयिक कर्मचारी परीक्षा के अभिलेख तथा व्यवस्था संबंधित कार्य पूर्ण करेंगे। इस प्रकार का अवकाश रविवार एवं अन्य राजपत्रित अवकाश छोड़कर किया जाएगा। **5.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों हेतु आवश्यकतानुसार विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाए। **6.** एसआईक्यूई/सीसीई संचालित विद्यालयों में पारम्परिक प्रक्रिया से मूल्यांकन न होकर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया से ही मूल्यांकन किया जाएगा। **7.** विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं के नियमित मूल्यांकन प्रक्रिया के संबंध में राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग, प्रारंभिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग के परिपत्र क्रमांक: प.14 (3) प्राशि/आयो/2014, जयपुर, दिनांक: 27.10.2014 की पालना की जाए।

पूरक परीक्षा :- माध्यमिक शिक्षा के अधीन कक्षा 9 एवं 11 की पूरक परीक्षाओं का आयोजन 6 से 8 मई, 2019 तक किया जाए। परीक्षा परिणाम 9 मई, 2019 को घोषित कर प्रगति पत्र वितरण कर दिए जाएँ।

शिक्षा विभाग, राजस्थान
पञ्चाङ्ग 2018-19

राजस्थान की प्रारम्भिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के समस्त राजकीय, मान्यता प्राप्त गैर सरकारी/CBSE/CISCE से सम्बद्ध विद्यालयों/अनाथ बच्चों हेतु संचालित आवासीय विद्यालयों/विशेष प्रशिक्षण शिविरों एवं शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों के लिए सत्र 2018-2019 का यह शिविरा पंचांग प्रस्तुत है। इसके अनुसार ही सत्रपर्यन्त विद्यालयी कार्यक्रम, अवकाश, परीक्षा, खेलकूद प्रतियोगिता आदि का आयोजन अनिवार्य है। किसी विशेष अवसर अथवा कार्यक्रम पर यदि किसी संस्थाप्रधान को कोई परिवर्तन करने की आवश्यकता हो, तो वह परिवर्तन सम्बन्धी निवेदन अपने क्षेत्र के जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) को प्रस्तुत करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) मांग के औचित्य की जाँच करेंगे तथा उनकी अनुशंसा पर निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की स्वीकृति के बाद ही संस्थाप्रधान द्वारा परिवर्तन किया जा सकेगा।

सामान्य निर्देश : **1.** शिक्षण सत्र: 2018-19 दिनांक 01 मई, 2018 से आरम्भ है तथा सामान्य प्रवेश प्रक्रिया स्थानीय परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात दिनांक 26 अप्रेल, 2018 से आरम्भ हो चुकी है। कक्षा 5 के जिला स्तरीय प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन, कक्षा-8 हेतु प्रारंभिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण पत्र परीक्षा व कक्षा-10 की बोर्ड परीक्षाओं में प्रविष्ट हुए विद्यार्थियों का अस्थाई प्रवेश बोर्ड परीक्षा के समाप्त होने के तत्काल पश्चात दिया जाकर आगामी कक्षाओं का शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। ग्रीष्मावकाश उपरांत पुन: नियमित शिक्षण कार्य 19 जून, 2018 से आरम्भ हो चुका है। **2.** प्रवेश की अंतिम तिथि 15 जुलाई, 2018 रहेगी। (माध्यमिक कक्षाओं हेतु) **3.** मध्यावधि अवकाश 29 अक्टूबर से 09 नवम्बर, 2018 तक रहेगा। **4.** शीतकालीन अवकाश 25 दिसम्बर, 2018 से 07 जनवरी, 2019 तक रहेगा। **5.** ग्रीष्मावकाश 10 मई, 2019 से 18 जून, 2019 तक रहेगा। **6.** केन्द्र सरकार द्वारा समस्त राष्ट्र के लिए रेडियो/दूरदर्शन/समाचार पत्रों में घोषित अवकाश विद्यालयों में भी मान्य होंगे। **7.** यदि किसी कारणवश रेडियो/दूरदर्शन/लिखित आदेश द्वारा राज्य में कोई सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाए, तो वह भी विद्यालयों में मान्य होगा। **8.** यदि किसी वर्ग/कारण विशेष को आधार बनाकर या किसी विशेष दिन का सेक्शनल/रीजनल अवकाश/स्थानीय अवकाश सरकार द्वारा घोषित किया जाए तो वह अवकाश सभी विद्यालयों में लागू नहीं होगा। **9.** शिविरा पंचांग एवं राजस्थान सरकार के पंचांग में उल्लेखित समान अवकाश की तिथि में कोई विसंगति हो तो ऐसी स्थिति में राजस्थान सरकार के पंचांग की तिथि को सही मानते हुए इस पंचांग में वैसा ही संशोधन माना जाए। **10.** सत्रारम्भ एवं सत्रान्त की संस्थाप्रधान वाक्पीठ का आयोजन शिविरा पंचांग में निर्धारित अवधि में ही करवाया जाना आवश्यक होगा। उक्त आयोजन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा की अनुमति बिना नहीं किया जा सकेगा। **11.** साप्ताहिक रूप से कक्षा 1 से 5 तक आइरन की पिंक गोली तथा कक्षा 6 से 12 के छात्र-छात्राओं को आयरन फोलिक एसिड की नीली गोली (ब्ल्यू) मध्याह्न भोजन उपरान्त दी जाए।

प्रवेश :- **1.** कक्षा-1 में प्रवेश के समय राज्य सरकार द्वारा संशोधित प्रावधानानुसार विद्यार्थियों की आयु 5 वर्ष निर्धारित की गई है। **2.** राज्य सरकार प्रवेश प्रक्रिया हेतु कोई निश्चित तिथि का निर्धारण कर सकती है। फिर भी आर.टी.ई. अधिनियम- 2009 के अनुसार बालक-बालिकाओं का विद्यालय में प्रवेश वर्षपर्यन्त हो सकेगा। **3.** राज्य कर्मचारी/माता-पिता/अभिभावक के स्थान परिवर्तन की स्थिति में स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र के आधार पर विद्यार्थी को मध्य सत्र में प्रवेश दिया जा सकेगा। **4.** यदि किसी परिस्थितिवश बोर्ड द्वारा रोके गए परीक्षा परिणाम विलम्ब से घोषित किए जाते हैं तो विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम की घोषणा के सात दिवस के भीतर प्रवेश दिया जाए। प्रवेश के समय ही विद्यार्थियो को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करवाना सुनिश्चित किया जाए। **5.** हाउस हॉल्ड सर्वे में आउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन (OoSC) के रूप में चिह्नित बालक-बालिकाओं की मैनस्ट्रीमिंग हेतु अनामांकित बालक-बालिकाओं के माता-पिता/अभिभावकों से सम्पर्क कर उनका आयु अनुरूप कक्षा में प्रवेश कराना, उनके विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता का आकलन करना एवं आवश्यकतानुसार संघनित पाठ्यक्रम के माध्यम से विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था करना सुनिश्चित किया जाए। **6.** ड्रॉपआउट एवं अनामांकित विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को उनकी आयु के अनुरूप कक्षा में नामांकन पश्चात, विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं का फंक्शनल असेसमेन्ट करवाया जाकर, पात्र बच्चों को सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत नि:शुल्क अंग-उपकरण उपलब्ध कराए जाएँगे एवं होमबेस्ड एज्युकेशन से जोड़े गए बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप कक्षा में प्रवेश सुनिश्चित किया जाएगा। **7.** कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय एवं मेवात बालिका आवासीय/वैकल्पिक शिक्षा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत संचालित आवासीय विद्यालयों मे अनामांकित एवं ड्रापआउट बालिकाओं को प्रवेश दिलवाया जाएगा। पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारियों (PEEO) की बैठक में चर्चा कर उनके सहयोग से परिक्षेत्र की पात्र बालिकाओं का उक्त विद्यालयों में प्रवेश करवाया जाए। **8.** कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय हेतु राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद कार्यालय के दिशा-निर्देशों के अनुरूप विद्यालय की कुल सीटों की 5 प्रतिशत सीटों पर विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को प्रवेशित किए जाने हेतु विशिष्ट प्रयास किए जाएँ। **9.** ग्रीष्मावकाश एवं शीतकालीन अवकाश के दौरान विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा।

प्रार्थना सभा :- प्रार्थना सभा कार्यक्रम हेतु 30 मिनट का समय निर्धारित है, जिसमें की जाने वाली गतिविधियाँ-राष्ट्रगीत, प्रार्थना, योगाभ्यास, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, समाचार वाचन, प्रतिज्ञा, राष्ट्रगान आदि हैं।

विद्यालय प्रबन्धन :- विद्यालय की व्यवस्था एवं प्रबन्धन, विद्यालय प्रबन्धन समिति (SMC/SDMC) द्वारा किया जाएगा। विद्यालय के सुचारु संचालन के लिए सर्व शिक्षा अभियान द्वारा निम्न सुविधाएँ प्रदान की जाएगी:-1. एक मुश्त स्कूल ग्रान्ट, जिसमें दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ जैसे चॉक, डस्टर, स्टेशनरी, परीक्षा संबधित कार्य, दरी पट्टी आदि क्रय की जा सकती है। इस राशि में से शौचालय/मूत्रालयों की साफ-सफाई हेतु प्रतिमाह 150 रु. का उपयोग कर इनका उपयुक्त रख-रखाव सुनिश्चित किया जाए (केवल शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के लिए)। जिला परियोजना समन्वयक (SSA एवं RMSA) द्वारा समस्त ग्रामीण विद्यालयों को 500 रु. प्रतिमाह की दर से 5000 रुपये वार्षिक (10 माह हेतु) शौचालय/मूत्रालय, पेयजल सुविधा के रख-रखाव तथा मध्याह्न भोजन से पूर्व साबुन से हाथ धोने की व्यवस्था एवं स्वच्छता हेतु स्वच्छता अनुदान राशि का वितरण प्रतिवर्ष किया जा रहा है।

2. प्रत्येक विद्यार्थी की 'शाला स्वास्थ्य कार्यक्रम' के अन्तर्गत स्वास्थ्य जाँच की जाए तथा रिकॉर्ड संधारित किया जाए।

कालांशवार समय विभाजन- प्रतिदिन 8 कालांश में से कालांशवार समय विभाजन चक्र में 6 कालांश 40 मिनट एवं अंतिम 2 कालांश 35 मिनट के होंगे। प्रार्थना सभा एवं योगाभ्यास हेतु 30 मिनट का समय निर्धारित है। मध्यान्तर अवकाश 25 मिनट का होगा। विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु कुल शाला समय 6 घंटे 5 मिनट होगा।

समय सारिणी : एक पारी विद्यालयों हेतु समय सारिणी निम्नानुसार होगी :

क्र. सं.	विवरण	ग्रीष्मकाल में विद्यालय संचालन हेतु कालांश विभाजन	शीतकाल में विद्यालय संचालन हेतु कालांश विभाजन
1	समयावधि	1 अप्रैल से 30 सितम्बर	1 अक्टूबर से 31 मार्च
2	विद्यालय समय (संस्थाप्रधान हेतु)	7:50 बजे से 2:10 बजे तक (कुल 6:20 घंटे)	9:20 बजे से 3:40 बजे तक (कुल 6:20 घंटे)
3	विद्यालय समय (शिक्षकों हेतु)	8:00 बजे से 2:10 बजे तक (कुल 6:10 घंटे)	9:30 बजे से 3:40 बजे तक (कुल 6:10 घंटे)
4	विद्यालय समय (विद्यार्थियों हेतु)	8:05 बजे से 2:10 बजे तक (कुल 6:05 घंटे)	9:35 बजे से 3:40 बजे तक (कुल 6:05 घंटे)
5	प्रार्थना सभा एवं योगाभ्यास	8:05 बजे से 8:35 बजे तक (30 मिनट)	9:35 बजे से 10:05 बजे तक (30 मिनट)
6	प्रथम कालांश	8:35 बजे से 9:15 बजे तक (40 मिनट)	10:05 बजे से 10:45 बजे तक (40 मिनट)
7	द्वितीय कालांश	9:15 बजे से 9:55 बजे तक (40 मिनट)	10:45 बजे से 11:25 बजे तक (40 मिनट)
8	तृतीय कालांश	9:55 बजे से 10:35 बजे तक (40 मिनट)	11:25 बजे से 12:05 बजे तक (40 मिनट)
9	चतुर्थ कालांश	10:35 बजे से 11:15 बजे तक (40 मिनट)	12:05 बजे से 12:45 बजे तक (40 मिनट)
10	मध्यान्तर	11:15 बजे से 11:40 बजे तक (25 मिनट)	12:45 बजे से 01:10 बजे तक (25 मिनट)
11	पंचम कालांश	11:40 बजे से 12:20 बजे तक (40 मिनट)	01:10 बजे से 01:50 बजे तक (40 मिनट)
12	षष्ठम कालांश	12:20 बजे से 01:00 बजे तक (40 मिनट)	01:50 बजे से 02:30 बजे तक (40 मिनट)
13	सप्तम कालांश	01:00 बजे से 01:35 बजे तक (35 मिनट)	02:30 बजे से 03:05 बजे तक (35 मिनट)
14	अष्टम कालांश	01:35 बजे से 02:10 बजे तक (35 मिनट)	03:05 बजे से 03: 40 बजे तक (35 मिनट)

नोट: शैक्षिक गुणवत्ता के लिए मुख्य विषयों के लिए शिक्षण का कार्य यथासंभव प्रथम छ: कालांश में निर्धारित किया जाए। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सहशैक्षिक गतिविधियों यथा-खेलकूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण, निबन्ध-लेखन इत्यादि पर विशेष ध्यान दिया जाए।

1. जहाँ तक संभव हो, समस्त विद्यालय एक पारी में चलाए जाएँगे। जो विद्यालय वर्तमान में दो पारी में चल रहे हैं तथा विद्यालय की परिस्थितिवश आगामी सत्र में भी दो पारी/आंशिक दो पारी में संचालन आवश्यक है, उनके संस्थाप्रधान औचित्यपूर्ण प्रस्ताव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) को प्रस्तुत करेंगे तथा जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) परीक्षणोपरांत स्पष्ट अनुशंसा सहित जिले के समेकित प्रस्ताव मंडल उपनिदेशक को 15 जुलाई, 2018 तक प्रस्तुत करेंगे तथा मंडल उपनिदेशक सम्पूर्ण परिक्षेत्र के प्राप्त प्रस्तावों पर विभागीय निर्देशों के अनुरूप गुणावगुण के आधार पर 31 जुलाई, 2018 तक सकारण आदेश जारी कर निदेशालय (प्रारम्भिक/माध्यमिक) को अवगति प्रदान करेंगे। 2. दो पारी में संचालित विद्यालयों का समय :-

क्र.सं.	अवधि	विद्यालय संचालन का समय
1.	1 अप्रैल से 30 सितम्बर तक	प्रात: 7: 00 से सायं 6: 00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5: 30 घंटे)
2.	1 अक्टूबर से 31 मार्च तक	प्रात: 7: 30 से सायं 5: 30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5: 00 घंटे)

3. दो पारी विद्यालय (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) के संस्थाप्रधान का समय प्रात: 10:00 से सायं 5:00 बजे तक रहेगा। वे अपने स्तर पर स्वैच्छा से इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं करेंगे। **4.** समस्त संस्था प्रधान विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम के अनुसार छात्र/छात्राओं को शिक्षण का लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से अनिवार्यत: विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम सुनवाने की व्यवस्था करेंगे। यह कार्यक्रम 1 जुलाई, 2018 से

शिक्षा पञ्चाङ्ग 2018-19

जुलाई-2018

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

अगस्त-2018

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

सितम्बर-2018

रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

अक्टूबर-2018

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

नवम्बर-2018

रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	

दिसम्बर-2018

रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	29	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

जुलाई 2018 ● **कार्य दिवस-26, रविवार-05, अवकाश-00, उत्सव-03** ● **02 जुलाई-** 'अन्नपूर्णा दूध योजना' के शुभारंभ के अवसर पर प्रत्येक विद्यालय में 'अभिभावक-अध्यापक परिषद्' की विशेष बैठक (PTM) का आयोजन। **2-9 जुलाई-** प्रत्येक विद्यालय में 'अन्नपूर्णा दूध योजना' सप्ताह का आयोजन, **08 जुलाई** 'मीना मंच' का गठन- SSA, **11 जुलाई-** विश्व जनसंख्या दिवस (उत्सव) (SIERT), **13 जुलाई-** समुदाय जागृति दिवस- SSA, **15 जुलाई-**SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से सत्रपर्यन्त किए जाने वाले कार्यों हेतु आवश्यक लेखांकन प्रक्रिया पूर्ण करवाना। **23 जुलाई-** लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयन्ती (उत्सव), **27 जुलाई-** गुरु पूर्णिमा (उत्सव)। जुलाई के चतुर्थ सप्ताह में सत्रारम्भ की संस्थाप्रधान वाकपीठ (प्रा./उ.प्रा./मा./उ.मा.विद्यालय) का आयोजन (23 से 28 जुलाई की अवधि में दो दिवस के लिए) **नोट :-** विद्यालयों द्वारा वर्ष आरम्भ होते ही वृक्षारोपण का कार्य करना। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम: 1.** 'आपणी लाडो' बालिका शिक्षा हेतु समुदाय जागृति कार्यक्रम, **2.** 'शाला दर्शन पोर्टल' पर प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों की प्रोफाईल, **3.** केजीबीवी. शिक्षिकाओं हेतु ऑनलाईन कोर्स सामग्री निर्माण **4.** 'शाला दर्शन पोर्टल' पर नव प्रवेशित विद्यार्थियों की प्रविष्टि- जुलाई से अगस्त 2018, **5.** जुलाई-2018 से दिसम्बर-2018 के मध्य आयोज्य प्रशिक्षण कार्यक्रम :- **i.** सामान्य शिक्षकों, संदर्भ शिक्षकों एवं केजीबीवी. शिक्षिकाओं हेतु 10 दिवसीय आवासीय आईसीटी. प्रशिक्षण। **ii.** दृष्टिबाधित एवं श्रवण बाधित बच्चें के समावेशन हेतु 10 दिवसीय आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण। **iii.** सामान्य शिक्षकों हेतु 5 दिवसीय पाठ्यक्रम अनुकूलन सम्बन्धी प्रशिक्षण। (ब्लॉकस्तरीय) **iv.** विशेष शिक्षकों हेतु 10 दिवसीय आवासीय मल्टी कैटेगरी प्रशिक्षण।

अगस्त 2018 ● **कार्य दिवस-26, रविवार-04, अवकाश-01, उत्सव-02** ● **10 से 25 अगस्त-** विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं हेतु फंक्शनल असेसमेन्ट कैम्प-SSA, **13 अगस्त-** जिला स्तरीय विज्ञान सेमिनार (SIERT), **15 अगस्त से पूर्व-** केजीबीवी. बालिकाओं को समस्त प्रकार की आधारभूत सामग्री का वितरण-SSA, **15 अगस्त-1.** स्वतन्त्रता दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य) **2.** SDMC. की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से सत्रपर्यन्त किए जाने वाले कार्यों हेतु आवश्यक निविदा कार्यवाही सम्पन्न करना। **16 अगस्त से पूर्व** विद्यालय स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय समूह की विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **16-18 अगस्त-** प्रथम परख का आयोजन, **21 अगस्त-** 'अध्यापिका मंच' संचालन समिति का गठन एवं बैठक SSA, **22 अगस्त-** ईदुल्हा (अवकाश चन्द्रदर्शनानुसार), **23 से 24 अगस्त-** जिला स्तरीय नेहरू हॉकी सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता का आयोजन। **26 अगस्त-** रक्षा बन्धन (अवकाश) एवं संस्कृत दिवस (उत्सव), **27 से 29 अगस्त-** राज्य स्तरीय नेहरू हॉकी सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता का आयोजन। **28 अगस्त-** राज्य स्तरीय विज्ञान सेमिनार (SIERT), **29 अगस्त-** ध्यानचन्द जयन्ती पर विद्यालयों द्वारा खेलकूद गतिविधियों का आयोजन करना, **29-30 अगस्त-** जिला स्तरीय केजीबीवी. खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन-SSA, **31 अगस्त-1.** SDMC. की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से सत्रपर्यन्त किए जाने वाले कार्यों हेतु निविदा कार्यवाही उपरांत क्रयादेश/कार्यादेश जारी करना। **2.** सर्व श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2018 के लिए राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) को आवेदन करना। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम 1.** आत्मरक्षा पर एम.टी. प्रशिक्षण, **2.** केजीबीवी. संस्थाप्रधानों एवं वार्डन की कार्यशाला, **3.** समस्त नव प्रवेशित व शेष विद्यार्थियों व शिक्षकों के आधार की प्रविष्टि, **4.** विद्यालय विकास एवं प्रबन्ध समिति विवरण की शाला दर्शन पर प्रविष्टि, **5.** पेरेन्ट काउंसलिंग (प्रत्येक ब्लॉक पर): अगस्त से दिसम्बर-2018 **6.** एस.एम.सी. प्रशिक्षण: अगस्त से अक्टूबर-2018

सितम्बर 2018 ● **कार्य दिवस-22, रविवार-05, अवकाश-03, उत्सव-05** ● **1 से 5 सितम्बर-** प्रथम समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन), **1 से 7 सितम्बर-** ब्लॉकस्तरीय पं. दीन दयाल उपाध्याय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी (दो दिवसीय) (SIERT), **3 सितम्बर-** जन्माष्टमी (अवकाश-उत्सव), **5 सितम्बर-** शिक्षक दिवस (उत्सव), राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झण्डियों की बिक्री का शुभारम्भ, **5 से 9 सितम्बर-** द्वितीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन), **10 सितम्बर-** 'अध्यापिका मंच' की प्रथम बैठक-SSA, समुदाय जागृति दिवस-SSA, **8 सितम्बर-** विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव), सत्र : 2018-19 हेतु प्रथम अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM) का आयोजन। **10 से 12 सितम्बर-** जिला स्तरीय पं. दीन दयाल उपाध्याय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी (SIERT), **13 से 18 सितम्बर-** प्रथम समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **14 सितम्बर-** हिन्दी दिवस (उत्सव), **17 से 18 सितम्बर-** जिला स्तरीय रोल प्ले एवं फॉक डान्स प्रतियोगिता (SIERT), **19 सितम्बर-** रामदेव जयन्ती/तेजादशमी (अवकाश-उत्सव), **21 सितम्बर-** मोहर्रम (अवकाश-चन्द्रदर्शनानुसार), **22 से 24 सितम्बर-** प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (ब्लॉकस्तरीय), **22 से 27 सितम्बर-** द्वितीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **23 सितम्बर-** किशोर जागृति दिवस (SIERT), **24 सितम्बर-** बालिका शिक्षा के अन्तर्गत समस्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 'मीना दिवस'-SSA, **25 से 27 सितम्बर-** प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (जिला स्तरीय), **28 से 29 सितम्बर-** जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश), **30 सितम्बर-1.** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना एवं श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2018 के प्रस्तावों का मूल्यांकन कर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) द्वारा मण्डल अधिकारी को प्रेषित करना। **2.** SDMC. की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से किए जाने वाले कार्य/क्रय कार्यवाही पूर्ण करना। **नोट- 1.** प्रथम योगात्मक आकलन का आयोजन - CCE /SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। **2. 24 सितम्बर-** राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है), **3.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का ब्लॉकस्तर पर आयोजन। **4.** डाईस व शाला दर्शन पर प्रविष्ट विद्यार्थी व शिक्षकों की सूचनाओं का मिलान कर अपडेशन करना। **5.** समस्त शिक्षकों के कार्मिक व्यक्तिगत विवरण प्रपत्र-10 का अपडेशन-SSA (सितम्बर से अक्टूबर-2018)

अक्टूबर 2018 ● **कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-06, उत्सव-03** ● **1 अक्टूबर-विद्यालय समय परिवर्तन - 1. एक पारी विद्यालय-** विद्यार्थियों हेतु प्रात: 09:35 से 3:40 बजे तक। (शिक्षकों हेतु प्रात: 9:30 से 3:40 बजे तक, संस्थाप्रधान हेतु प्रात: 9:20 से 3:40 बजे तक), **2. दो पारी विद्यालय-** प्रात: 07:30 से सायं 05:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे), **2 अक्टूबर-** गाँधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव), **3 से 4 अक्टूबर-** जिला स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (SIERT), **3 से 5 अक्टूबर-** संभाग स्तरीय केजीबीवी. खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन-SSA, **3 से 7 अक्टूबर-** तृतीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 04 दिवस), **5 से 25 अक्टूबर-** विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं हेतु अंग-उपकरण वितरण कैम्प-SSA, **8 से 9 अक्टूबर-** राज्य स्तरीय रोल प्ले एवं लोकनृत्य प्रतियोगिता (SIERT), **10 अक्टूबर-** नवरात्र स्थापना (अवकाश), **11 से 13 अक्टूबर-** द्वितीय परख, **17 अक्टूबर-** दुर्गाष्टमी (अवकाश), **19 अक्टूबर-** विजयादशमी (अवकाश), **20 से 25 अक्टूबर-** तृतीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **24 अक्टूबर-** संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव), **26 से 27 अक्टूबर-** राज्यस्तरीय शैक्षिक सम्मेलन, **29 अक्टूबर से 09 नवम्बर-** मध्यावधि अवकाश, **31 अक्टूबर 1.** इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस-उत्सव), **2.** श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार- 2018 के प्रस्तावों की समीक्षा कर मण्डल अधिकारी द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को भेजना। **नोट-** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम-अक्टूबर से नवम्बर: 1.** 10 दिवसीय एच.एम. लीडरशिप एस.आर.जी. प्रशिक्षण, **2.** कक्षा 5 मूल्यांकन परीक्षा आवेदन पत्र ऑनलाईन।

नवम्बर 2018 ● **कार्य दिवस-16 , रविवार-04, अवकाश-10, उत्सव-05** ● **1 से 9 नवम्बर-** मध्यावधि अवकाश, **7 नवम्बर-** दीपावली (अवकाश), **8 नवम्बर-** गोवर्धन पूजा (अवकाश), **9 नवम्बर-** भैया दूज (अवकाश), **11 नवम्बर-** राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव), **12 नवम्बर-** समुदाय जागृति दिवस-SSA, **12 से 13 नवम्बर-** तहसील स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन, **14 नवम्बर-** बाल दिवस (उत्सव), **16 से 17 नवम्बर-** जिला स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता, **17 नवम्बर-** नेशनल मीन्स कम मेरिट परीक्षा (SIERT), **19 नवम्बर-** कालिदास जयन्ती (उत्सव), **21 नवम्बर-** बारावफ़ात (अवकाश-चन्द्र दर्शानानुसार), **23 नवम्बर-** गुरु नानक जयन्ती (अवकाश-उत्सव), **26 नवम्बर-** संविधान दिवस (उत्सव), **28-30 नवम्बर-** राज्य स्तरीय केजीबीवी. खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन, (अ) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, (ब) राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, (स) राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम:** केजीबीवी. नवचयनित शिक्षिकाओं हेतु रिव्यू कार्यशाला।

दिसम्बर 2018 ● **कार्य दिवस-20, रविवार-05, अवकाश-06, उत्सव-02,** ● **01 दिसम्बर-** विश्व एकता दिवस (उत्सव), विश्व एड्स दिवस (SIERT)। **02 एवं 03 दिसम्बर-** विश्व विकलांग दिवस-SSA; **06-07 दिसम्बर-** राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन, **07 दिसम्बर-** सत्र : 2018-19 हेतु माँ-शिक्षक बैठक (MTM) का आयोजन, **10 दिसम्बर-** मानव अधिकार दिवस (उत्सव), **11-24 दिसम्बर** अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन, **13 से 14 दिसम्बर-** राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। **17-22 दिसम्बर-** राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **25 दिसम्बर-** क्रिसमस डे (अवकाश), **25 दिसम्बर से 07 जनवरी-** शीतकालीन अवकाश (राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना), **26 से 28 दिसम्बर-** राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, **27 से 30 दिसम्बर-** राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **29 से 31 दिसम्बर-** राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **नोट-** जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम:** दिसम्बर-2018 से जनवरी-2019 : 10 दिवसीय एच.एम. लीडरशिप प्रशिक्षण, **शीतकालीन अवकाश के दौरान आयोज्य प्रशिक्षण कार्यक्रम : 1.** कक्षा 6 से 8 के शिक्षकों हेतु छ: दिवसीय विषय आधारित शिक्षक प्रशिक्षण, **2.** नवनियुक्त शिक्षक प्रशिक्षण।

जनवरी 2019 ● **कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-06, उत्सव-05** ● **01 से 07 जनवरी-** शीतकालीन अवकाश, **05 जनवरी-** समुदाय जागृति दिवस-SSA, **12 जनवरी-1.** स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), कैरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय), **13 जनवरी-** गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश-उत्सव), **14 से 17 जनवरी-** राज्य स्तरीय पं. दीन दयाल उपाध्याय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी-2018 (SIERT), **15 जनवरी-** मकर सक्रान्ति (उत्सव), **15 से 21 जनवरी-** केजीबीवी. में शैक्षिक किशोरी मेलों का आयोजन-SSA; **23 जनवरी-** सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव), **24 जनवरी-** 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' का आयोजन-SSA, **26 जनवरी-** गणतंत्र दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य)। **29 से 31 जनवरी-** राज्य स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (SIERT), **30 जनवरी-** शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन) 'अध्यापिका मंच' की द्वितीय बैठक का आयोजन-SSA। **नोट- 1.** द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन- CCE/SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम:** केजीबीवी. शिक्षिकाओं हेतु कार्यशाला-SSA

फरवरी 2019 ● **कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-00, उत्सव-04** ● **04 फरवरी-** समुदाय जागृति दिवस-SSA। **09 फरवरी-** बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। **11 से 13 फरवरी-** तृतीय परख का आयोजन, **14 फरवरी-** मातृ-पितृ पूजन दिवस (उत्सव), **फरवरी के तृतीय सप्ताह में-** सत्रान्त की संस्थाप्रधान वाकपीठ (प्रा.वि./उ.प्रा.वि./मा.वि./उ.मा.वि.) का आयोजन (18 से 23 फरवरी की अवधि में), **28 फरवरी-** स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव), राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव) (SIERT), **नोट :- 1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा।

मार्च 2019 ● **कार्य दिवस-23, रविवार-05, अवकाश-03, उत्सव-03** ● **04 मार्च-** महाशिवरात्रि (अवकाश-उत्सव), **06 मार्च-** सत्र : 2018-19 हेतु तृतीय अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM) का आयोजन, समुदाय जागृति दिवस-SSA, **15 मार्च-** विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव), **20 मार्च-** होलिका दहन (अवकाश), **21 मार्च-** धुलण्डी (अवकाश), **30 मार्च-** राजस्थान दिवस (उत्सव)।

अप्रैल 2019 ● **कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-02, उत्सव-04** ● **01 अप्रैल-** विद्यालय समय परिवर्तन- **1.** एक पारी विद्यालय-विद्यार्थियों हेतु प्रात: 08:05 से 02:10 बजे तक। (शिक्षकों हेतु प्रात: 8:00 बजे से 2:10 बजे तक, संस्थाप्रधान हेतु प्रात: 7:50 से 2:10 बजे तक)। **2.** दो पारी विद्यालय-प्रात: 07:00 से सायं 06:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:30 घंटे), **07 अप्रैल-** चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव), **10 से 25 अप्रैल-** वार्षिक परीक्षा का आयोजन, **14 अप्रैल-** रामनवमी (अवकाश-उत्सव), डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जयन्ती (अवकाश-उत्सव), **17 अप्रैल-** महावीर जयन्ती, अहिंसा दिवस (अवकाश-उत्सव), **19 अप्रैल-** गुड-फ्राइडे (अवकाश), **26 अप्रैल-** विद्यालय में आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रक्रिया का आरम्भ एवं नामांकन हेतु विद्यार्थियों के चिह्नीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ। **30 अप्रैल-** वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा परीक्षा परिणामों की प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को समीक्षा हेतु प्रेषित करना। संस्थाप्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर सत्रपर्यन्त हुए कार्यों की समीक्षा करना एवं आगामी सत्र की विद्यालय योजना हेतु विचार-विमर्श कर निर्णय लेना तथा योजना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना। अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM) एवं SDMC. की साधारण सभा का संयुक्त रूप से आयोजन एवं करणीय कार्यों के संबंध में प्रस्ताव पारित करना। **नोट:-** SIQE संचालित विद्यालयों में कक्षा 5 हेतु सम्बन्धित जिले की DIET द्वारा तृतीय योगात्मक आकलन के स्थान पर 'प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन' किया जाएगा, जिसकी तिथियाँ पृथक से घोषित की जाएगी। कक्षा-1 से 4 में तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन उक्त मूल्यांकन से पूर्व किया जाएगा।

मई 2019 ● **कार्य दिवस-08, रविवार-04, अवकाश-19, उत्सव-01** ● **01 मई-** नवीन सत्र : 2019-20 प्रारम्भ, **01 से 09 मई-** प्रवेशोत्सव-(प्रथम चरण का आयोजन), **06 से 08 मई-** पूरक परीक्षा का आयोजन, **07 मई-** रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती (उत्सव), **09 मई-** पूरक परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं प्रगति-पत्र का वितरण। **10 मई से 18 जून-** ग्रीष्मावकाश, **नोट :- 1.** संस्थाप्रधान ग्रीष्मावकाश में मुख्यालय से बाहर हों, तो वह विद्यार्थियों को टी.सी. जारी करने हेतु मुख्यालय पर रहने वाले वरिष्ठतम शिक्षक को टी.सी. पर हस्ताक्षर करने हेतु अधिकृत करावें तथा इसका अनुमोदन संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी से कराकर संबंधित को पाबन्द करें, ताकि विद्यार्थियों को टी.सी. प्राप्त करने में कोई असुविधा न हों। **2.** 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा-द्वितीय स्तर' (कक्षा-8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु) का आयोजन। **3.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन।

जून 2019 ● **कार्य दिवस-10, रविवार- 05, अवकाश-15, उत्सव-03** ● **01 से 18 जून-** ग्रीष्मावकाश, **05 जून-** ईदुल फितर (अवकाश-चन्द्र दर्शानानुसार), **06 जून-** महाराणा प्रताप जयन्ती (अवकाश-उत्सव), **19 जून- 1.** ग्रीष्मावकाश उपरांत शिक्षण कार्य पुन: प्रारम्भ। **2.** SDMC. की कार्यकारिणी समिति की बैठक का आयोजन एवं सत्रपर्यन्त कार्य योजना का अनुमोदन। **19 से 30 जून-** प्रवेशोत्सव-(द्वितीयचरण का आयोजन), **21 जून-** अन्तर्राष्ट्रीययोग दिवस (उत्सव), **28 जून-** भामाशाह जयन्ती-उत्सव (राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह), **30 जून-** SDMC. की कार्यकारिणी समिति की बैठक में अनुमोदित कार्य योजना को अन्तिम रूप दिया जाना। **नोट :** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन।

जनवरी-2019

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

फरवरी-2019

रवि		3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	
शनि	2	9	16	23	

मार्च-2019

रवि	31	3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

अप्रैल-2019

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

मई-2019

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

जून-2019

रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

© सर्वाधिकार निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के पास सुरक्षित हैं।

इस हेतु अपने कोष कार्यालय से संपर्क कर वेतन बिल प्रपत्र-3A की प्रति के आधार पर पारित करवाए जावे एवं आपके कार्यालय में किसी भी कार्मिक की बिना शाला दर्पण पर प्रविष्टी के वेतन बनाये जाने की स्थिति में आपके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित की जाएगी।

D. विद्यालयों से एपीओ. (आदेशों की प्रतीक्षा) अथवा निलम्बन होने वाले कार्मिको को शाला दर्पण द्वारा कार्यमुक्त किया जा कर नियुक्ति अधिकारी कार्यालय के शाला दर्पण पर कार्य ग्रहण करवाया जाये तत्पश्चात ऐसे कार्मिकों के पुनः पदस्थापन आदेश जारी होने पर नियुक्ति अधिकारी स्वयं के शाला दर्पण से ही अन्य विद्यालय/कार्यालय के लिए कार्य मुक्त करे, जिससे कि एपीओ. एवं निलम्बन अवधि का रिकॉर्ड भी कार्मिक के प्रपत्र 10 में स्पष्ट दर्ज हो सके।

E. विद्यालयों द्वारा कार्मिकों को एपीओ. की स्थिति में कार्यालयों हेतु कार्यमुक्त किया जाता है लेकिन आपके कार्यालयों द्वारा उन्हें विद्यालयों से ही कार्यमुक्ति में अपडेट करवाकर सीधे ही नवीन विद्यालय/कार्यालय के लिए कार्यमुक्त करने को कहा जाता है जो कि मान्य नहीं है।

F. किसी भी कार्मिक को ऑफलाइन कार्यमुक्ति एवं कार्यग्रहण करवाया जाना अमान्य होगा। इस आशय का प्रमाण पत्र पूर्व में आपसे चाहा गया है, उसे अवलिम्ब उपलब्ध करवाया जाना सुनिश्चित करवाएँ।

उपर्युक्त बिन्दुओं की अनुपालना की समस्त जिम्मेदारी कार्यालयाध्यक्ष एवं आपके कार्यालय में नियुक्त कार्यालय शाला दर्पण प्रभारी की होगी। अतः आपसे अपेक्षित है कि आप अपने कार्यालयों में उपर्युक्त कार्यवाही सुनिश्चित करवाएँ अन्यथा आपके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लायी जाएगी।

● **(नरेश पाल गंगवार),** प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग, जयपुर

5. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ' योजना के जारी दिशा-निर्देशों में वर्ष 2018-19 की बजट घोषणा संख्या 74 के अनुसार एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में।

● राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग ● क्रमांक प. 17 (11) शिक्षा-1/2015 जयपुर दिनांकः 11.6.2018 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषयः मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना के जारी दिशा-निर्देशों में वर्ष 2018-19 की बजट घोषणा संख्या 74 के अनुसार एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में। ● सन्दर्भः इस विभाग के समसंख्यक पत्र दिनांक 16-10-2015 एवं 05-05-2016।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत संदर्भित पत्र द्वारा **'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना'** के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकेण्डरी परीक्षा के आधार पर प्रत्येक जिले की दो मेधावी Meritorious छात्राओं एवं सैकेण्डरी बोर्ड परीक्षा में एक बी.पी.एल. परिवार की प्रत्येक जिले में प्रथम स्थान प्राप्त मेधावी छात्रा को वित्तीय सहायता प्रतिवर्ष उपलब्ध कराये जाने के सम्बन्ध में पत्र में दिशा-निर्देश जारी किए गए थे। इस योजना के अन्तर्गत पूर्व में जारी निर्देशों के अनुसार जिले की तीन मेधावी Meritorious छात्राओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के अतिरिक्त माननीय मुख्यमंत्री महोदया की बजट घोषणा 2018-19 के अनुसार **'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना'** का विस्तार करते हुए 10वीं बोर्ड परीक्षा में प्रत्येक जिले में प्रथम स्थान प्राप्त एक **अनाथ बालिका (छात्रा)** को भी सम्मिलित किये जाने की स्वीकृति प्रदान की जाती है। इस छात्रा को भी उसी प्रकार से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाये जिस प्रकार जिले की अन्य तीन मेधावी छात्राओं को उपलब्ध कराई जा रही है। उक्त राशि का वहन बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, जयपुर के द्वारा किया जायेगा।

इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन एवं मॉनिटरिंग के लिए शाला दर्पण ऑनलाईन वेब पोर्टल में प्रावधान करवाया जाना सुनिश्चित किया जाए।

शेष शर्तें पूर्व में जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार रहेंगी।

● **(कमलेश आबूसरिया)** शासन उप सचिव-प्रथम

6. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अंतर्गत ज़ारी दिशानिर्देशों में वर्ष 2018-19 की बजट घोषणा 74 के अनुसार एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा-माध्य/छात्रवृत्ति/स्कॉलर-E/ मु.ह.बे.यो/2017-18 दिनांकः26.06.2018 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा (प्रथम)● **विषयः** 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अंतर्गत ज़ारी दिशानिर्देशों में वर्ष 2018-19 की बजट घोषणा 74 के अनुसार एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में। ● **प्रसंगः** राज्य सरकार के पत्रांक दिनांक 16.10.2015, 05.05.2016 व 11.06.2018 एवं इस कार्यालय के समसंख्यक पत्रांक 19.10.2015 व 24.05.2016 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शासन के पूर्व के पत्रांक क्रमांक- प. 17 (11) शिक्षा- 1/2015 जयपुर दिनांक 16.10.2015, 05.05.2016 के द्वारा **मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना** के अंतर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा के आधार पर प्रत्येक जिले की प्रथम दो मेधावी (Meritorious) छात्रा एवं एक BPL परिवार की प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली मेधावी छात्रा को वित्तीय सहायता प्रतिवर्ष उपलब्ध कराये जाने के सम्बन्ध में पत्र एवं दिशा-निर्देश प्राप्त हुए थे। इसी क्रम में योजना का विस्तार करते हुए शासन के पत्रांक क्रमांक- प. 17 (11) शिक्षा-1/2015 जयपुर दिनांक 11.06.2018 के द्वारा बजट घोषणा 74 के अनुसार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा के आधार पर **प्रत्येक जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली एक अनाथ छात्रा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में स्वीकृति प्रदान की गयी है** (प्रतिलिपि संलग्न)। इस छात्रा को भी उसी प्रकार वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी जिस प्रकार जिले की अन्य तीन मेधावी छात्राओं को सहायता उपलब्ध करवायी जा रही है। **शेष शर्तें पूर्व में ज़ारी दिशानिर्देशानुसार ही रहेगी।** उक्त राशि का वहन बालिका शिक्षा फाउंडेशन, जयपुर द्वारा ही किया जायेगा।

उक्त योजना राज्य सरकार की अत्यंत महत्वपूर्ण फ्लैगशिप योजना है। अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि आप अपने जिले की माध्यमिक परीक्षा 2018 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली एक अनाथ छात्रा का चयन करते हुए इस कार्यालय की ईमेल deo.scholar.dse@rajasthan.gov.in पर तत्काल सूचित करें। उक्त योजना को शाला दर्पण पोर्टल पर भी अपडेट किया जाना है तथा योजना का पर्याप्त प्रचार-प्रसार कर वास्तविक पात्र छात्राओं को चिह्नित करने की जिम्मेदारी आपकी होगी।

इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए शीघ्र ही सम्पादित किया जावे।

● संलग्नः उपर्युक्तानुसार

● **(नथमल डिडेल)**, (आई.ए.एस) निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

7. पुस्तकालयों के बेहतर उपयोग एवं संचालन के संबंध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः उनि/सशि/पुस्तकालय/2018-19/04-06 दिनांकः 27.06.2018 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा-प्रथम/द्वितीय। ● समस्त संस्थाप्रधान, राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय। ● विषयः पुस्तकालयों के बेहतर उपयोग एवं संचालन के संबंध में दिशा-निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विद्यालयों में पुस्तकालय का समुचित उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करता है। विद्यालय के समस्त मानवीय संसाधन यथा संस्थाप्रधान, पुस्तकालयाध्यक्ष, समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका आवश्यक है। पुस्तकालय का उद्देश्य विद्यालय के प्रत्येक सदस्य को ज्ञान कौशल प्रदान करना है। इससे जिज्ञासा एवं समस्या समाधान की प्रवृत्ति बढ़ती है।

विद्यालय पुस्तकालय सभी प्रकार के अध्ययन, सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी हासिल करने, ज्ञान निर्माण एवं गहन चिंतन का केन्द्र बिन्दु है। विद्यालयों में पुस्तकालय का समुचित उपयोग, रखरखाव एवं संचालन के क्रम में अग्रांकित बिन्दुओं की पालना सुनिश्चित की जाएः-

पुस्तकालय व्यवस्था

1. पुस्तकालयाध्यक्ष/प्रभारी साफ-सफाई का ध्यान रखें। पुस्तकों को धूल, सीलन आदि से बचाएँ। पुस्तकों की सुरक्षा एवं संरक्षण करना पुस्तकालयाध्यक्ष का दायित्व है।
2. पुस्तकालय में पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं को व्यवस्थित रखना, उनकी नियमित सार संभाल करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार फटी हुई पुस्तकों की मरम्मत एवं सहज बाईंडिंग करवाएँ। पुस्तकें सदैव व्यवस्थित रखें इससे पाठक पुस्तकालय की ओर आकर्षित होते हैं एवं पुस्तकों को आसानी से ढूँढ़ लेते हैं।
3. विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकों का संग्रह रखा जाए।
4. पाठकों को उनकी रुचि एवं आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध करवायी जानी चाहिए। अनुपयोगी पुस्तकें धन का अपव्यय है। ऐसी पुस्तकें पुस्तकालय सेवा की गुणवत्ता में कमी लाती है। पुस्तकालय के लिए पुस्तकों के चयन में विशेष ध्यान रखा जाए।
5. यथा संभव मुक्त द्वार प्रणाली को अपनाएँ, इससे पाठक इच्छित पुस्तकों का अवलोकन कर सकते है, उन्हें पुस्तक विशेष के साथ उससे संबंधित/संदर्भित अन्य पुस्तकों की जानकारी मिलती है। इससे पुस्तकों के अधिकतम उपयोग की संभावना रहती है।
6. निधानी/शैल्फ पर पुस्तकों को व्यवस्थित रखें। ऐसा करने में एक विषय और उससे संबंधित पुस्तकों को व्यवस्थित रखें।
7. संदर्भ पुस्तकें, नक्शे, नॉन बुक मैटिरीयल, माइक्रोफिल्म्स आदि को अलग से रखें।
8. पुस्तकालय में संदर्भ पुस्तकें यथा शब्द कोश, एटलस बुक, दुर्लभ पुस्तकें आदि को इश्यू नहीं किया जाए।
9. विद्यालय में स्टाफ में किसी भी कार्मिक का स्थानान्तरण, सेवानिवृत्ति होने पर पुस्तकालयाध्यक्ष से अदेय प्रमाण-पत्र (नो ड्यूज) दिए जाने के बाद ही संस्थाप्रधान अन्तिम वेतन प्रमाण पत्र (एल.पी.सी.) जारी करें।
10. विद्यार्थियों को टी.सी. जारी करने से पूर्व भी पुस्तकालयाध्यक्ष से अदेय प्रमाण-पत्र (नो ड्यूज) लिया जाए।
11. पुस्तकालय में ऐसी व्यवस्था की जाए कि प्रत्येक पाठक अपना निजी सामान यथा पुस्तकें, बैग आदि अन्दर नहीं ले जाएँ।
12. पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की पूर्ण जानकारी देने के लिए एक सूची बनाएँ। सूची पूर्ण एवं अद्यतन तथा विभिन्न अभिनव यथा लेखक, विषय, संपादक, व्याख्या, चित्रकार आदि के अनुरूप बनाई जाए।
13. संदर्भ सेवा कक्ष/भाग में अवस्थित संदर्भ पुस्तकों से पाठकों को परिचित करवाएँ।
14. पाठकों को पुस्तकों से संबंधित सूचनाएँ एवं जानकारी उपलब्ध करवाएँ। ऐसे प्रश्न जो लगातार पूछे जाते है, सम सामयिक विषयों की पत्र-पत्रिकाएँ मेज पर होनी चाहिए। पाठकों को जिन प्रश्नों का उत्तर, सूचनाएँ उपलब्ध संदर्भ पुस्तकों में नहीं मिलती है उन्हें अन्य स्रोत से ढूँढ़कर उपलब्ध करवाने का प्रयास करें। इन सब के लिए रजिस्टर भी बनाया जा सकता है। जिससे पाठकों द्वारा चाही गई सूचनाएँ एवं प्रश्नों के जवाब दर्ज हो।
15. प्रत्येक पुस्तक पर पुस्तक पत्रक एवं तिथि पढ़नी लगाई जाए।
16. पुस्तकालय में समय-समय पर नई पुस्तकों की जगह बनाने के लिए, कम प्रयोग में आने वाली पुस्तकों को हटाकर उन्हें स्टॉक रूम में संग्रहित करें।

पुस्तकालय का उपयोग

1. किसी भी भेदभाव के बिना शाला के प्रत्येक सदस्य को वांछित पाठ्य सामग्री शीघ्र उपलब्ध करवाकर उनका समय बचाएँ।
2. पाठकों को उनके कर्त्तव्य, अधिकार, पुस्तकालय नियम, पुस्तकालय में पुस्तकों को कैसे ढूँढ़ा जाए आदि की जानकारी दी जाए।
3. ज्ञानपूरक साहित्य को पढ़ने के लिए शाला के प्रत्येक सदस्य को प्रेरित करें।

4. पुस्तकों के महत्त्व को देखते हुए यह सूत्र ध्यान में रखें कि प्रत्येक पाठक को पुस्तक मिले एवं प्रत्येक पुस्तक को पाठक मिले।
5. नवीन पुस्तकों को अधिग्रहण रजिस्टर में दर्ज करने के उपरान्त उपयुक्त स्थान पर प्रदर्शन के लिए रखें जिससे पाठकों की नजर उस पर अनायास ही पड़े एवं वे उसका उपयोग कर सकें।

पुस्तकालय का अनुशासन

पाठकों को सलाह/निर्देश देवें कि पुस्तकों के उपयोग में पुस्तकालयों के सभी नियमों का पालन करें। निर्धारित समयावधि में पुस्तकों को लौटाएँ। पुस्तकों में पृष्ठ, चित्रों को फाड़ें नहीं उसमें पैन से कोई चिह्न आदि न लगाएँ।

पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं की क्रय प्रक्रिया

1. पुस्तक चयन समिति का गठन कर पुस्तकों का चयन एवं क्रय किया जाए। पाठकों की माँग, रुचि, विषय एवं उपलब्ध वित्तीय संसाधनों के अनुरूप पुस्तकों का क्रय करें। रोजगार परक सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के लिए संबंधित समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ प्राथमिकता से क्रय की जाए।
2. पुस्तकालयाध्यक्ष क्रय की जाने वाली पत्र–पत्रिकाओं की विवरण सूची तैयार करें। पत्र–पत्रिकाओं के चयन में पाठकों के सुझाव शामिल करें।
3. वे पुस्तकें जिनकी आवश्यकता अधिक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को पड़ती है। उनकी पर्याप्त प्रतियाँ पुस्तकालय में होनी चाहिए।

पुस्तकों का वर्गीकरण एवं सूचीकरण

1. पुस्तकों का वर्गीकरण एवं सूचीकरण करें। पाठकों को इनके उपयोग की जानकारी दी जाए। पुस्तकों के अध्ययन के लिए आने वाले शिक्षार्थियों को उनकी इच्छित पुस्तक ढूंढ़ने में सहयोग करें। जिससे पाठकों का समय बचेगा।
2. पुस्तकों को वैज्ञानिक पद्धति से वर्गीकृत करें। सूची में पुस्तकालय से निष्कासित पुस्तकें, खो जाने वाली पुस्तकों की प्रविष्टियों को निरन्तर निकालते रहना चाहिए इससे सूची उद्यतन रहेगी।

पुस्तकालय प्रभारी से अपेक्षाएँ

1. पुस्तकालयध्यक्ष/कर्मचारी व्यवहार कुशल, मृदुभाषी एवं कर्मठता से कार्य करें। पुस्तकालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी/शिक्षकों को आवश्यकता अनुसार पुस्तकें उपलब्ध करवाएं। कभी कभी पाठक की आवश्यकता वाली सामग्री/प्रकरण किसी पुस्तक के अध्याय अथवा पृष्ठों में होते है संभवतः पाठक उससे अनभिज्ञ हो, ऐसी स्थिति में पुस्तकालय प्रसूची में प्रचुर मात्रा में विषय विश्लेषण अथवा वर्ग निर्देशी सलेखों का उपयोग कर पाठकों की मदद करें।
2. पुस्कालय व्यवस्था, उपयोग, अनुशासन, पुस्तक क्रय समिति, पुस्तकों के वर्गीकरण एवं सूचीकरण से संबंधित उपर्युक्त बिंदुओं की पालना सुनिश्चित करें।

संस्था प्रधान से अपेक्षाएँ

1. संस्थाप्रधान प्रत्येक शैक्षिक वर्ष में एक बार पुस्तकों का भौतिक सत्यापन अवश्य करवाएँ एवं इसका शाला स्तर पर रिकॉर्ड संधारित एवं सुरक्षित रखे और इसकी रिपोर्ट जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) कार्यालय को प्रेषित करें।
2. प्रत्येक वित्तीय वर्ष में आवश्यकता अनुरूप सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियमों को ध्यान में रखते हुए जीर्ण–शीर्ण एवं अनुपयोगी पुस्तकों की नीलामी करवाएँ।

उपर्युक्त समस्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित करवाएँ।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

जुलाई-2018					
रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

शिविरा पञ्चाङ्ग

जुलाई 2018 ● कार्य दिवस–26, रविवार–05, अवकाश–00, उत्सव–03 ● 02 जुलाई– 'अन्नपूर्णा दूध योजना' के शुभारंभ के अवसर पर प्रत्येक विद्यालय में 'अभिभावक–अध्यापक परिषद्' की विशेष बैठक (PTM) का आयोजन। **2–9 जुलाई–** प्रत्येक विद्यालय में 'अन्नपूर्णा दूध योजना' सप्ताह का आयोजन, **08 जुलाई** 'मीना मंच' का गठन-SSA, **11 जुलाई–**विश्व जनसंख्या दिवस (उत्सव) (SIERT), **13 जुलाई–** समुदाय जागृति दिवस- SSA, **15 जुलाई–**SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से सत्रपर्यन्त किए जाने वाले कार्यों हेतु आवश्यक लेखांकन प्रक्रिया पूर्ण करवाना। **23 जुलाई–**लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयन्ती (उत्सव), **27 जुलाई–**गुरु पूर्णिमा (उत्सव)। जुलाई के चतुर्थ सप्ताह में सत्रारम्भ की संस्थाप्रधान वाक्पीठ (प्रा./उ.प्रा./मा./उ.मा.विद्यालय) का आयोजन (23 से 28 जुलाई की अवधि में दो दिवस के लिए) **नोट :–** विद्यालयों द्वारा वर्षा आरम्भ होते ही वृक्षारोपण का कार्य करना। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम: 1.** 'आपणी लाडो' बालिका शिक्षा हेतु समुदाय जागृति कार्यक्रम, **2.** 'शाला दर्शन पोर्टल' पर प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों की प्रोफाईल, **3.** केजीबीवी. शिक्षिकाओं हेतु ऑनलाईन कोर्स सामग्री निर्माण **4.** 'शाला दर्शन पोर्टल' पर नव प्रवेशित विद्यार्थियों की प्रविष्टि- जुलाई से अगस्त 2018, **5.** जुलाई–2018 से दिसम्बर–2018 के मध्य आयोज्य प्रशिक्षण कार्यक्रम :- **i.** सामान्य शिक्षकों, संदर्भ शिक्षकों एवं केजीबीवी. शिक्षिकाओं हेतु 10 दिवसीय आवासीय आईसीटी. प्रशिक्षण। **ii.** दृष्टिबाधित एवं श्रवण बाधित बच्चों के समावेशन हेतु 10 दिवसीय आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण। **iii.** सामान्य शिक्षकों हेतु 5 दिवसीय पाठ्यक्रम अनुकूलन सम्बन्धी प्रशिक्षण। (ब्लॉक स्तरीय) **iv.** विशेष शिक्षकों हेतु 10 दिवसीय आवासीय मल्टी कैटेगरी प्रशिक्षण ।

माह : जुलाई, 2018	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्यक्रमांक	पाठ का नाम
2.7.2018	सोमवार	जयपुर		शिक्षा मंत्री/शिक्षा सचिव का संदेश		
3.7.2018	मंगलवार	जयपुर		विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 2018-19 एक नजर		
4.7.2018	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
5.7.2018	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
6.7.2018	शुक्रवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
7.7.2018	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
9.7.2018	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
10.7.2018	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
11.7.2018	बुधवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व जनसंख्या दिवस (उत्सव)
12.7.2018	गुरुवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
13.7.2018	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
14.7.2018	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
16.7.2018	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
17.7.2018	मंगलवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
18.7.2018	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
19.7.2018	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
20.7.2018	शुक्रवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
21.7.2018	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
23.7.2018	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		बाल गंगाधर तिलक जयन्ती (उत्सव)
24.7.2018	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
25.7.2018	बुधवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
26.7.2018	गुरुवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
27.7.2018	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		गुरुपूर्णिमा (उत्सव)
28.7.2018	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
30.7.2018	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
31.7.2018	मंगलवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		

निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

मनुष्य केवल मनुष्य भर रहना चाहिए। बाकी सब कुछ अपने आप हो जाएगा। आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी और दृढ़विश्वासी, निष्कपट नवयुवकों की, ऐसे सौ युवक मिल जाएँ, तो संसार का कायाकल्प हो जाए। आप लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति महान् उत्तराधिकार लेकर जन्मा है, जो आपके महिमामय राष्ट्र के अनन्त अतीत जीवन का सर्वस्व है। सावधान! आपके लाखों पुरखे प्रत्येक कार्य को बड़े ध्यान से देख रहे हैं।

-स्वामी विवेकानन्द

स्वच्छता विशेष

विद्यार्थी दिनचर्या में स्वच्छता का महत्त्व

❒ भूरमल सोनी

'पहला सुख निरोगी काया' वाकई इस पंक्ति में दम है। जी हाँ, स्वस्थ शरीर होना जरूरी है। निरोगी के लिए संसार के सभी सुखों का मायना है, रोगी के लिए सात सुख बेकार है।

स्वस्थ शरीर का सफाई से बड़ा नाता है। शारीरिक स्वच्छता, वातावरणीय स्वच्छता एवं मानसिक स्वच्छता मनुष्य जीवन की अति महत्त्वपूर्ण कड़ी है। प्रधानमंत्री के 'स्वच्छ भारत अभियान' का उद्देश्य भी भारत देश के नागरिकों को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखना है। इसे सफल बनाने के लिए हमें स्वयं तथा बालकों को भी साफ-सफाई की आदतें डालनी होगी।

स्कूलों में स्वच्छता को लेकर पाठ्यक्रम में कई अध्याय भी है वहीं स्वास्थ्य शिक्षा के नियमित कालांश भी लगाए जाते हैं।

बचपन से साफ-सुथरा रहने की आदत डालें: साफ-सफाई की आदत समझ के साथ डालनी बेहतर होगी क्योंकि बड़े होने के साथ-साथ सफाई का महत्त्व जानने लगेंगे। स्कूल हो या घर, छोटे बच्चे अपने आसपास कई प्रकार की वस्तुएँ फैलाकर बैठते हैं। एक जगह से दूसरी जगह कागज, पेंसिल के छिलके, धागे, चाक के टुकड़े, कपड़े की कतरन, खाने-पीने की वस्तुएँ, पीने के पानी के बर्तन, चाय-दूध व अन्य वस्तुएँ अक्सर जगह-जगह अव्यवस्थित तरीके से फैला देते हैं। अतः स्कूल हो या घर, बच्चों को सफाई के लिए व्यवस्थित बनाने की शुरूआत करनी होगी। स्कूल, क्लास-रूम व घर की सफाई के साथ स्वयं को स्वच्छ बनाने के लिए प्रेरित किया जाना जरूरी है।

कक्षा कक्ष एवं स्कूल परिसर : विद्यालयों में कक्षा कक्ष साफ-सुथरा रखने की आदत डालें। ब्लेक बोर्ड पर अनायास लेखन न हो। दरी पट्टिकाओं, दरियों को नियमित झड़काकर साफ करवाएँ। दरियों के नीचे अक्सर बच्चे कागज या अन्य कचरा डाल देते हैं। इस आदत पर रोक लगाएँ। उनके धागे नहीं निकालने व उन्हें गंदा न करने की सीख दें। टेबल-मेज पर नुकीली चीज से अपना नाम न लिखने, उन्हें कुरेदने, रंग-पेन्ट खराब न करने के लिए बार-बार समझाएँ। आधी छुट्टी में खाना खाने की जूठन व टिफिन उचित स्थान पर साफ करें, धोएँ। सभी कक्षाओं में हो सके तो कचरा पात्र रखवाएँ। कचरा पात्र में ही कचरा डाला जावे तथा उस कचरे को उचित स्थान पर डलवाएँ। स्कूल परिसर में भी सफाई का महत्त्व समझाएँ। विद्यार्थी परिसर में गंदगी न फैलाएँ। स्कूल परिसर में फैले कचरे को टीम बनाकर उठवाएँ। ताकि स्कूल परिसर का वातावरण साफ-सुथरा लगे। सप्ताह में एक दिन कक्षा-कक्ष व परिसर की विशेष सफाई करें।

पोषाहार स्थल व कक्ष : विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए पोषाहार स्थल साफ-सुथरा होना जरूरी है। पोषाहार करने से पूर्व वहाँ की सफाई अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों को पंक्तिबद्ध बैठाकर खाना दिया जावें। उन्हें जूठन न फैलाने की विशेष हिदायत दी जानी चाहिए। दरियों व पट्टिकाओं पर सब्जी, दाल, कडी खिचड़ी आदि गिरा देते हैं जिससे वे गन्दी हो जाती है। इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने का प्रयास करें। खाना खाने के बाद बिखरे खाने को विद्यार्थी स्वयं तुरंत साफ करें। बर्तनों को यथास्थान धोए व रखे। पानी का ध्यान रख पंक्तिबद्ध बर्तन धुलाई व पानी पीना सिखाएँ। पोषाहार बनाने का कमरा भी साफ-सुथरा होना जरूरी है। पोषाहार बनाने से पूर्व अनाज व अन्य सामग्री की गुणवत्ता व सफाई का विशेष ख्याल रखें। धोने वाली सामग्री को अच्छी प्रकार से धोकर ही काम में लें। पोषाहार कक्ष में मच्छर, मक्खी, छिपकली व अन्य कीड़े-मकौड़ों का ध्यान रख अच्छी तरह से सफाई करें ताकि खाना स्वच्छ व शुद्ध बनाया जा सके। खाना बनाने वाले व्यक्ति को भी हाथ धोकर व सफाई का विशेष ध्यान रख पोषाहार निर्माण में लगाएँ। बर्तनों को भी भली-भाँति साफ कर ही खाना बनाएँ।

पुस्तक, कॉपी, बस्ता : विद्यार्थी जीवन में जितना महत्त्व स्वयं व विद्यालय की स्वच्छता का है उतना ही पुस्तक, कॉपी व बस्ते की सफाई का। विद्यार्थियों को पुस्तक व कॉपी को साफ-सुथरा रखने की जानकारी देना जरूरी है। पुस्तकों पर जगह-जगह पृष्ठों पर अनावश्यक नाम आदि न लिखना समझाएँ। उन्हें फाड़ने व गंदी होने से बचाएँ। उन पर समय-समय पर कवर लगवाने की सीख दें। कॉपी में सुलेख का पूर्ण ध्यान रख उन्हें अच्छे तरीके से लिखने का प्रयास करना चाहिए। कॉपी, पुस्तकों को स्कूल बैग में व्यवस्थित तरीके से रखें।

स्कूल पोशाक : पोशाक पेशे की पहचान के साथ व्यक्तित्व को निखारती है। पोशाक से विद्यार्थी की पहचान है अतः इसे साफ-सुथरा रखने के लिए प्रार्थना सभा में जानकारी दी जा सकती है। सप्ताह में एक दिन बुधवार को पोशाक धुलाई के लिए निर्धारित किया गया है। विद्यार्थियों को जानकारी दें। धुलाई, प्रेस के साथ टूटे बटन को लगाना, फटी होने पर उसे टाँकना। अधिकतर बच्चों की स्कूल ड्रेस में बटन टूटी, चैन टूटी या बगल से फटी होती है। जेब का एक कोना भी उखड़ा होता है छोटे बच्चों के अभिभावकों को इसकी जानकारी देकर ठीक करवाने का प्रयास किया जाए। छोटे बच्चों को कक्षा में उठने, बैठने बस्ता रखने आदि बातों को सुधारने के लिए बताएँ।

हाथ, दाँत, नाखून की सफाई: कीटाणु सबसे अधिक गन्दे हाथों के कारण ही फैलते हैं। अतः खाना खाने से पूर्व तो हाथ धोना जरूरी है ही परन्तु दिन में कई बार हाथों का उपयोग अन्य कार्यों के लिए भी किया जाता है। इसलिए हाथों को बार-बार साफ करने की जानकारी दें। दाँत चेहरे की शोभा होते हैं इन्हें साफ रखना जरूरी है। अतः छात्रों को नियमित दांतुन करने को कहा जाए। नाखूनों के द्वारा भी पेट में गंदगी जाती है क्योंकि इनमें मेल जमा होता है अतः इन्हें बढ़ने न दें। कई छोटे-छोटे बच्चे आपस में नाखून से एक दूसरे को खरोंच देते है। सप्ताह में एक दिन नाखूनों की जाँच अवश्य करें।

जूते-चप्पल की सफाई व पॉलिश: जूते व चप्पल की देखभाल विद्यार्थियों को नियमित करना चाहिए। जूते-चप्पल में गोबर या अन्य प्रकार की गंदगी को धोकर साफ करवाएँ। सम्भवतया जूते, चप्पल कक्षा-कक्ष के बाहर पंक्तिबद्ध तरीके से रखना सिखाएँ। जूते-चप्पल को गीले कपड़े से पौंछकर या पॉलिश लगाकर साफ करके पहनने को कहें। जूते-चप्पल, स्कूल नियमों के अनुरूप ही पहनें, फटे हो तो उन्हें शीघ्र दुरस्त करवाएँ। छोटी कक्षा के विद्यार्थियों को सही गलत के बारे में बताकर उन्हें अच्छा करने के लिए टिप्स देकर प्रोत्साहन दें।

रूमाल, पॉकेट कंघा व बेल्ट : विद्यार्थियों को कमर में बेल्ट बाँधना बताएँ। बेल्ट से विद्यार्थी फुर्ती महसूस करेगा।

खुले में शौच निषेध: भारत सरकार के अभियान खुले में शौच न जाने की जानकारी प्रार्थना सभा में समय-समय पर दी जाए। खुले में

शौच के कारण होने वाली गम्भीर बीमारियों की जानकारी विद्यार्थियों को होनी आवश्यक है। अधिकतर संक्रमण से फैलने वाली बीमारियों का मूल कारण ही खुले में शौच करना है। गाँवों में अशिक्षा, अनभिज्ञता के कारण लोग आज भी खुले में शौच करने जाते हैं। हालांकि सरकार ने गाँव, ढाणी-ढाणी, शहर-शहर खुले में शौच करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए प्रचार-प्रसार में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। सरकार का हर सम्भव प्रयास है कि हर गाँव खुले में शौच मुक्त हो, घर-घर शौचालय हो। खुले में शौच हो तो उस पर मक्खियाँ या अन्य कीटाणु बैठेंगे, वे ही मक्खियाँ घर में खाद्य पदार्थों पर बैठकर उसे संक्रमित करेगी, नतीजा शौच के माध्यम से कीटाणु एक-दूसरे के पेट में भोजन द्वारा जाएँगे। उससे उल्टी, दस्त, बुखार, टी.बी., कैंसर और संक्रामक रोग फैलने लगते हैं। कई गंभीर व जटिल रोगों का कारण खुले में शौच पर बैठने वाली मक्खियाँ व मच्छर है। अतः इसकी रोकथाम के लिए विद्यार्थियों को जोड़ें।

गाँव में हर घर में शौचालय हो, उसके लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें। सरकार व ग्राम पंचायत से सहायता योजना, आर्थिक सहयोग आदि की विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को करवाई जावे। गाँव स्वस्थ, विद्यार्थी स्वस्थ, सब स्वस्थ तो दिमाग भी स्वस्थ होकर पढ़ाई में लगेगा। साथ ही कमर में बेल्ट से कसक रहती है। स्कूल यूनिफार्म में चार चाँद लग जाते हैं। छात्रों को पॉकेट में कंघा भी रखना चाहिए ताकि कक्षा के बाहर जब भी जाए अपने बिखरे बालों को पुनः संवार सकें। विद्यार्थियों के पास रूमाल भी आवश्यक रूप से रखने को कहें। स्याही या अन्य गन्दे हाथ चेहरे पर लग जाए तो वह उसे धोकर पोंछ सकें। छोटी-मोटी चोट आदि में भी रूमाल को काम में लिया जा सकता है। विद्यार्थियों को व्यवस्थित रखने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसके पूरे दिन की दिनचर्या, स्कूल हो या घर, निश्चित कर दी जाए। उसे बताएँ कि पढ़ाई, खेलकूद, खाने, आराम करने के अलावा स्टडी रूम व स्कूल में सफाई का समय तय करें और इस आदत को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। अक्सर देखा जाता है कि आलस्य व अव्यवस्थित रहने की आदत बचपन से उत्पन्न होने के कारण आगे चलकर उनके स्वभाव और मनोवृत्ति पर हावी हो सकती है; इसलिए बचपन से ही व्यवस्थित व साफ-सुथरा रहने की आदत डालनी चाहिए।

कला शिक्षक
रा.आ.उ.मा.वि. पलाना, बीकानेर
मो: 9252176253

...पृष्ठ 22 का शेष भाग

समझ सकते हैं। इस खेल में छः मुहरों का अपना चाल चलन है पर स्थान विशेष होने पर इनकी चालों में बदलाव भी आता है। पैदल के सामने वजीर बैठा हो, तो पैदल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, परन्तु यदि पैदल के तिर्यक में वजीर बैठा है, तो वजीर की मौत निश्चित है, उसे कोई नहीं बचा सकता। इस तरह एक सधे हुए खिलाड़ी को इन मुहरों की चाल और मार दोनों का ध्यान रखना पड़ता है। वह मात्र मार काट से बाजी नहीं जीत सकता। उसे बचाव और मार दोनों पर नज़र रखनी पड़ती है। अतः वह खुद के और प्रतिस्पर्द्धी दोनों के मुहरों को नज़र में रखकर खेल आगे बढ़ाता है। जो इस तरह की सावधानी नहीं रखता, उसे हार की मार झेलनी पड़ती है।

इस प्रकार जीत की इच्छा रखने वाला खिलाड़ी एक-एक मुहरे की चाल का विश्लेषण करता हुआ खेल के संश्लेषित रूप की ओर बढ़ता है। इस प्रकार वह खेल ही खेल में विश्लेषण-संश्लेषण के आयाम से सहज भाव से परिचित होता जाता है। वह मात्र एक विषय में नहीं, अन्य विषयों की समझ में भी प्रक्रिया से मदद ले सकता है। वह एक विषय का अन्य विषयों के साथ अंतर तथा संबंध स्थापित करना भी सीख जाता है। धीरे-धीरे ज्ञान के सभी उपक्रम उसके लिए खेल के हिस्से बन जाते है।

सीखने की परिपक्वता के सन्दर्भ में एक शब्द प्रयुक्त होता है, सिंहावलोकन। इस शब्द के माध्यम से हम शतरंज और सीखना दोनों को समझ सकते हैं। सीखने में अवलोकन एक शुरूआती एवं जरूरी घटक है। अवलोकन जितना सघन, व्यापक एवं सूक्ष्म होगा, सीखना उतना ही परिपुष्ट होगा। सिंहावलोकन में दो शब्द है, सिंह+अवलोकन। सिंह जब चलता है, तो बार-बार पीछे मुड़कर देखता है, उसे डर रहता है कि कहीं कोई पीछे से हमला न कर दे। इससे वह सदैव आसन्न संकट से बचता हुआ आगे की ओर बढ़ता रहता हैं, सिंह की तरह बच्चे द्वारा बार-बार पीछे के कार्य को देखना, गत अनुभव से रूबरू होना, गत सीखे को उचितानुचित की तराजू पर तौलना और इस तरह उक्त प्रक्रिया को बार-बार दोहराते हुए आगे की ओर बढ़ना सिंहावलोकन कहलाता है। सीखने में इस प्रक्रिया को अपनाने से सीखना मजबूत होता है। इससे सीखे हुए ज्ञान/कौशल का बार-बार अभ्यास होता रहता है। शतरंज में भी यही प्रक्रिया अपनाकर करता है। वह अपने प्रतिद्वन्द्वी की एक-एक चाल का जवाब अपने पीछे की चालों को देखकर देता है। अगर वह भूलवश गत चाल को नज़रअंदाज़ कर देता है, तो उसकी शह और मात चुटकी में हो जाती है। बच्चा इस खेल को खेलता-खेलता सहजभाव से सिंहावलोकन की प्रक्रिया को अपनाने लगता है, जिससे उसका सीखना बहुत सहज और सरल हो जाता है।

एक बात और है, जो इस खेल की नकारात्मकता को दर्शाता है, वह समय की बर्बादी। इस खेल में दोनों खिलाड़ी अगर बराबर के हों, तो खेल कब खत्म होगा? इसका कोई ठीक-ठीक अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकता। अर्थात पूरा-पूरा दिन इसी में व्यतीत हो जाता है। हालांकि इस खेल में समयबद्ध अलग-अलग प्रतियोगिताएँ होती हैं, पर आमतौर पर फ्री स्टाइल खेलते समय बहुत अधिक समय लग जाता है। अतः बच्चे खाना-पीना भूलकर उसी में लगे रहते हैं। यह स्थिति बहुत चिंताजनक है। खेल भी खेला जाए और समय भी बर्बाद न हो, इसके लिए अभिभावकों, बच्चों और शिक्षकों तीनों को सावधान रहना होगा, उन्हें इस शतरंज के खेल को सीखने में मददगार बनाना है, न कि खललगार।

यह खेल हमारे दिमाग की सोच को खोलता है। उसे नए-नए मार्ग दिखाता है। सीखना यही तो है, सदैव सोचते रहना, सदैव कुछ नया सोचना, नया करना पुरा तथ्यों, तर्कों, विचारों आदि को नवीन मानकों पर परखना यही सब करते-करते अधिगमित के नित नये सोपानों को छूना, सीखना यह नहीं तो और क्या है? शतरंज भी हमें यही सब कुछ सिखाता है। अंत में सीखने के संदर्भ में महाकवि कालिदास की कही एक बात स्मरित हो रही है, जो सीखने और शतरंज दोनों पर लागू होती है। इसमें कहा गया है कि कोई नई बात इसलिए ग्राह्य नहीं है कि वह नई है और कोई पुरानी बात इसलिए त्याज्य नहीं है कि वह पुरानी है-

पुराणमित्येव न साधुसर्व
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यं।

उपनिदेशक, आरटीई.
2- ए 34, मुरलीधर व्यास नगर विस्तार
बीकानेर-334004 (राजस्थान)
मो. 8003801094

प्रवेशोत्सव

इसे कहते हैं बालक

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

लीजिए, एक नया शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो गया है। मानव संसाधन एवं विकास के अनन्त क्षितिज पर एक और नया अध्याय लिखा जाना है। विद्यालय सजाए-सँवारे जा रहे हैं। उनमें विद्या की साधना करने आने वाले जिज्ञासु बालक-बालिकाओं के स्वागत के लिए तैयारियाँ की जा रही है। तोरणद्वार एवं वंदन मालाएँ सुशोभित हो रही हैं। विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती से अरदास की जा रही है। बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया जा रहा है। पाठशाला की ओर जाने वाला मार्ग गाँव गुवाड़ जैसे राजमार्ग बन गया है। महान राजनयिक, मगर उससे पहले एक सहज शिक्षक भारत गणतंत्र के तीसरे राष्ट्रपति डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन साहब ने ऐसी भावभूमि में अपनी प्रसिद्ध रचना 'नन्हा चला मदरसे' लिखी होगी।

इन नन्हें-मुन्नों के स्वागत के लिए स्कूल तो क्या, पूरा गाँव खड़ा है। शिक्षक और हमारे प्रतिनिधि ही नहीं, अपितु हर इंसान खड़ा है। दसों दिशाएँ प्रफुल्लित है कि ज्ञान का पिपासु एक बालक कंधे पर एक छोटा सा झोला लटकाए गाँव के ज्ञानागार की ओर अपने कदम बढ़ा रहा है। अभी उसके ये डगमगाते कदम राष्ट्र के भविष्य तथा भविष्य का राष्ट्र रचने वाले हैं। अभी तो उसका निर्माण होना है लेकिन सच्चाई यह है कि वह भावी राष्ट्र का निर्माता है। यह महान कार्य गुरुजन करेंगे। इस निर्मिति की कार्यशाला गाँव की यह अदनी सी लगने वाली पाठशाला बनेगी, जिसके गर्भ से अनेक महापुरुषों एवं समाजसेवकों ने योग्यता हासिल की है। ज्ञान एवं संसाधनों के सभी दरवाजे एवं समस्त खिड़कियाँ खुली हैं। शीतल बयार मंद-मंद बह रही है। न जाने किन-किन से वह क्या बयां कर रही है।

बाबू जयशंकर प्रसाद ने बालकों के लक्ष्य को कोमल उपवन की संज्ञा देते हुए कहा था कि इस उपवन में सुरभियुक्त मखमली फूल अथवा कंटीली झाड़ी, जो आप चाहे लगा सकते हैं। नहीं जी नहीं। हमें विकल्प नहीं चाहिए। हम तो उनमें सुन्दर खुशबूदार कोमल पुष्प ही लगाएँगे। ये बालक पीयूष हैं। इनमें अमृत तत्त्व है। इन बालकों की आँखों में झाँककर तो देखिए। उनके निर्मल विमल भोलेपन को निरखिए। आपका अपना खोट खपास विदा होता दिखाई देगा।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने बालकों की उपमा आसमान में चमकते सितारों से करते हुए

उन्हें हमारे लिए भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर गिरे उपहार बताया है। बालक कूड़-कपट से परे शुद्ध व पवित्र हैं। बालक ब्रह्म रूप हैं। बालक मानव के जनक हैं। वे निर्धन के धन हैं। वे तनाव, तंगहाली एवं मुफलिसी में इनके उपाय हैं। वे सत्यनिष्ठ हैं। वे कर्म एवं धर्म के अभिभाषक हैं। वे तो ईश्वर के साक्षात् स्वरूप हैं। वे हमारी अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के कारक हैं। यदि बालक नहीं हो, तो व्यक्ति निराश एवं महत्त्वाकांक्षाविहीन होगा। नमक विहीन सब्जी उसमें अन्य सब-कुछ होते हुए भी अच्छी नहीं लगती, वैसे ही बालक विहीन घर-परिवार रसहीन प्रतीत होता है। इन्हीं विशेषताओं को देखकर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कदाचित कहा होगा-**'जीवन की महत्त्वाकांक्षाएँ बालकों के रूप में आती है। प्रत्येक बालक यह संदेश लेकर संसार में आता है कि ईश्वर अभी तक मनुष्यों पर मेहरबान हैं। परमात्मा की परम कृपा के गवाह हमारे बच्चे हैं।'**

बच्चा जब डगमगाता, लड़खड़ाता, बार-बार गिरता उठता चलता है तो उसे देखकर बड़ों को अपार प्रसन्नता होती है। उसके नन्हें-नन्हें कोमल पैरों में बँधी पैजनियों के घुंघरू की रुनक-झुनक स्वर लहरी बीमारी एवं निराशा को पल भर में हर लेने वाली होती है। गोस्वामी तुलसीदासजी का एक प्रसिद्ध भजन है-**'ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ।'** महाराजा दशरथ के विशाल प्रासाद के विस्तृत आँगन में बालक रामचन्द्र के ठुमक-ठुमक कर चलने के दृश्य की कल्पना कर लीजिए। गुरु वशिष्ठ, स्वयं महाराज एवं तीनों रानियों के संग क्षण भर के लिए आप भी साक्षी बन जाइए। जिस अतुलित आनन्द की प्राप्ति होगी, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। बालक का चरित्र कुछ होता ही ऐसा है। जिसकी महज कल्पना आनन्द बरसाने वाली हो सकती है तो साक्षात्कार के आनन्द की क्या कहे। बालक खुशियों का खजाना होता है।

तुतला कर बोलते बालक के बोल समझ में नहीं आते। न जाने वे क्या-क्या कह जाते हैं; लेकिन इतना जरूर है कि ऐसा करके वे सुनने वालों को अपार आनन्द में भिगो जाते हैं। बालक रामचन्द्र के बाल बोल का वर्णन करते हुए गोस्वामी महाराज मानस में लिखते हैं, **'बाल बोल बिनु अरथ के सुनि देते पदारथ चारी'** अर्थात् बालक के वचन अर्थहीन हैं; परन्तु सुनने पर सुनने वालों को धर्मादि चारों फल देने वाले हैं। ऐसे ठुमुक-ठुमुक कर चलने वाले, तुतलाकर अपनी ही भाषा में बोलने वाले, क्षणभर में रोने एवं क्षण भर में हँसने वाले बालकों का भण्डार हमारे विद्यालयों के आँगन में हिलोरें ले रहा होता है। सहज प्रतिक्रिया और सहज प्रेम के प्रतिनिधि बालकों के साथ कार्य करने का अवसर शिक्षकों को मिलता है। अतः यह निश्चित मानिए कि इस सौभाग्य के भागीदार बनने वाले शिक्षकों पर ईश्वर की अतिरिक्त मेहरबानी होती है।

बालक की शरारतें भी आनन्द बरसाती हैं। उनके नन्हें हाथों से मार खाकर भी अभिभावक खुश होते हैं। छोटे-छोटे हाथों से माता-पिता, दादा-दादी पर अपने बाल अंदाज़ में वार कर अपनी बहादुरी पर नाज़ करने वाले बच्चों की यह क्रीड़ा कितनी अच्छी लगती है। कहते हैं कि मुगल बादशाह अकबर बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। अपनी आत्मकथा 'आइना-ए-अकबरी' में उन्होंने बालक को जीवनरूपी उद्यान की कोयल बताया है। अकबर ने एक दिन अपने दरबारियों से पूछा कि यदि कोई बादशाह की दाढ़ी खींचे-नोंचे तो उसे क्या सज़ा दी जाए? सबने अपने-अपने हिसाब से सज़ा बताई। मगर बीरबल ने कहा कि उसे माखन-मिश्री का भोग लगाना चाहिए। समझ गए ना आप! बादशाह की दाढ़ी तक तो उनकी गोद में

खेल रहे नाती-पोते की ही पहुँच हो सकती है। और यह भी निश्चित है कि बालक को दाढ़ी एक अजूबा लगेगी और वो इसके हाथ लगाएगा, खींच भी सकता है। उसको क्या सज़ा दी जाएगी? अब आप ही फैसला कर लीजिए। ऐसा हमारे जीवन में भी होता है। बालक के सामने घोड़ी बनकर चलना, जानवरों (जैसे बिल्ली) की आवाजें निकालना, उसके कहे अनुसार आँखें बंद करना, आँखें खोलना, उठना-बैठना, रोना, हँसना सब हम बड़े आनन्द के साथ करते हैं।

बालक यदि रो रहा है, मचल रहा है तो उसे डांटिए मत, बल्कि आप भी साथ में रोने का उपक्रम कीजिए। मेह जब बरसता है तो उस समय सामान्यतः धूप (तावड़ा) नहीं होती लेकिन कभी-कभी दोनों साथ होते हैं। समझदार व्यक्ति यदि रो रहा होता है तो वह हँस नहीं रहा होता। मगर यह हमारा बालक ही है जो दोनों विरोधी क्रियाएँ एक साथ कर सकता है। एक रोते हुए बच्चे के सामने उसकी पसन्द का कोई दृश्य आते ही वह रोता-रोता हँसना शुरू हो जाता है। यह अद्भुत दृश्य देखकर बड़ों का मन मयूर नाचने लगता है। ये विशेष और होठों पर मुस्कान का नज़ारा आपने जरूर देखा होगा। इसे कहते हैं बालक!

ईश्वरीय विधान के अनुसार प्रत्येक इंसान अपने आप में अद्वितीय-अनुपम होता है। अरबों लोगों में किन्हीं दो के समरूप एक जैसे होने का दावा कोई नहीं कर सकता। ऊपर वाले के कारखाने का दस्तूर ही कुछ ऐसा है। विख्यात पश्चिमी चिन्तक चार्ल्स डिकिन्स ने एक जगह लिखा है, 'Every baby born in the world is a finer than the previous' विश्व में जन्म लेने वाला प्रत्येक बच्चा उससे पहिले जन्में बच्चे से बेहतर होता है। हम शिक्षकों को यह सिद्धान्त ध्यान में रखकर बच्चों के साथ बर्ताव करना चाहिए। बच्चों को संवारना राष्ट्र को संवारना है।

छोटे बच्चों का हृदय साफ सुथरे केनवास जैसा होता है। उस पर तिल भर भी कालिमा नहीं होती, कहीं कोई धब्बा नहीं होता। उसे वैसा ही बनाए रखने का उत्तम काम मूल्यपरक नैतिक शिक्षा कर सकती है जिसकी भावभूमि हमारी स्कूलें तथा उस रंगमंच के पात्र गुरुजन हैं। यह हम शिक्षकों का उत्तरदायित्व है। वुड्सबर्थ की एक कविता में आता है-

Heaven lies around us in our infancy,
shades of the prison- house begin to close upon the growing child.

अर्थात् शैशवावस्था में हमारे चारों ओर स्वर्ग ही स्वर्ग होता है मगर, विकासमान बालक को बंदी गृह की छायाएँ कसना प्रारम्भ कर देती है। लाँग फेलों ने तो कमाल ही कर दिया। वे कवि हैं। बालक को जीवन्त कविता बताते हुए वे लिखते हैं-

Ye are better than all the ballads,
That ever were sung or said,
For ye are living poems,
and all the rest are dead,

अर्थात् तुम बालक उन सभी गाथा-गीतों से बेहतर हो जो कभी गाए अथवा कहे गए क्योंकि तुम 'जीवन्त कविताएँ हो और शेष सभी मृत निष्प्राण हैं। बालक हमारी कविताएँ ही नहीं, वे गीत और संगीत भी है। बाल स्तर किसी मोहक वीणा स्वरों से कमतर नहीं होते।

नए शिक्षा सत्र का श्री गणेश हुआ ही है। यह पुण्य परिक्रमा एक वर्ष में पूर्ण होगी। पाठशालाओं की आबो हवा बहुत सुहावनी एवं मंगलकारी है। एक बहुत ही निराला सकारात्मक वातावरण बना हुआ है। राजस्थान की गति एवं प्रगति की ओर शेष राष्ट्र टकटकी लगाए निहार रहा है। पाठशालाओं के साथ आँगनबाड़ियों का विलय जैसे घर के पूजाघर में नटखट बाल कृष्ण लड्डू गोपाल का आ जाना है। विद्यालय एक मंदिर है और बालक उसके देव। हम अध्यापक तो पुजारी हैं। मंदिर के देवों में महादेव तो आँगनबाड़ी के छोटे-छोटे बालक हैं जो लड्डू गोपाल हैं। लड्डू गोपाल की पूजा कितनी मन भावन होती है। इसका आनन्द आनन्द नहीं परमानंद होता है। आँगनबाड़ियों के इन 'लड्डू गोपालों' के साथ बिताए क्षण अनमोल सिद्ध होंगे। वे साक्षात् सत्य है। 'सत्य और अहिंसा का पाठ मैंने बालकों से सीखा है' ऐसा महात्मा गाँधी कहते थे। बापू को ये सत्य का पाठ सिखाने वाले बालक निसंदेह आँगनबाड़ियों के बालक ही होंगे। बालक सर्व समाज की साझी सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति का कोई मोल नहीं है। यह तो अनमोल है। इन्हें तराशने में ही राष्ट्र और समाज सबका भला निहित है। इन सबका दारोमदार हमारे गुरुजन और हमारी पाठशालाओं पर निर्भर है।

ए- विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड
गंगाशहर-334401 (बीकानेर)
मो. 9414060038

सरला यादव को अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक

मलेशिया के कुआलालम्पुर में इंटरनेशनल स्पोर्टस् डवलपमेंट बोर्ड द्वारा आयोजित प्रथम एशियन गेम्स-2018, दिनांक 9 से 11 जून-2018 में जैसलमेर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सरदार सिंह की ढाणी (पोकरण) में कार्यरत शारीरिक शिक्षिका सरला यादव ने 400 मीटर बाधा दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्वर्ण पदक जीतकर देश व प्रदेश का नाम रोशन किया। सरला यादव इससे पूर्व भी कई राज्य व राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिताओं में खिताब जीत चुकी है तथा फरवरी-2018 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय इंडो बांग्लादेश की दौड़ प्रतियोगिता में गोल्ड व सिल्वर मैडल प्राप्त किया था। **-वरिष्ठ संपादक**

बुद्धि विवेक

आई. क्यू. बनाम ई. क्यू.

❒ डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली

आई.क्यू. अर्थात् बुद्धिलब्धि, बालक की योग्यता या प्रतिभा की मात्रा है। किसी व्यक्ति के पास बुद्धि की कितनी मात्रा है उसका माप करना ही उस व्यक्ति की बुद्धिलब्धि जानना है जो वास्तविक आयु और मानसिक आयु के पारस्परिक संबंध से ज्ञात होती है। अच्छी आई.क्यू. से बालक चिकित्सक, अभियंता, एडवोकेट, वैज्ञानिक अथवा प्रशासनिक अधिकारी तो बन जाता है परन्तु अपने इन पेशे में सफलता प्राप्त करने के लिए बुद्धिलब्धि (आई.क्यू.) के साथ भावनात्मक लब्धि (ई.क्यू.) का होना भी आवश्यक है। मनोवैज्ञानिक आई.क्यू. के साथ ई.क्यू. को भी महत्त्व देने लगे हैं, उनका मानना है कि एक बालक को जीवन की सफलता के लिए मेहनत करके तकनीकी कौशल सीखना और जानकारियाँ हासिल करना ही पर्याप्त नहीं अपितु बालक को अपनी भावना एवं संवेग के बीच संतुलन स्थापित करना भी आना चाहिए ताकि बालक अर्जित ज्ञान का सही उपयोग कर सके। बौद्धिक रूप से कोई भी बालक चाहे कितना भी सक्षम क्यों न हो लेकिन भावनात्मक परिपक्वता के अभाव में वह असफल हो सकता है।

बुद्धिलब्धि बालक को केवल शैक्षणिक स्तर की परीक्षा में अच्छे अंक दिलवाता है परन्तु भावनात्मक लब्धि उसे अपने जीवन की परीक्षा में अच्छे अंक दिलवाता है क्योंकि उच्च भावनात्मक लब्धि वाले बालक केवल तथ्य से ही काम नहीं लेते वरन् तथ्य के साथ-साथ जीवन से जुड़े व्यावहारिक पहलुओं पर भी ध्यान देते हैं। भावनात्मक लब्धि से जुड़े बालक 'क्या' पर अधिक बल देने के स्थान पर 'क्यों' और 'कैसे' पर अधिक बल देते हैं। आज के वातावरण में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि बालक के अन्दर अच्छे सम्प्रेषण एवं अच्छी संगठनात्मक कुशलता हो ताकि घर और विद्यालय में सामंजस्य स्थापित किया जा सके। बालक कितना भी बुद्धिमान एवं साधन सम्पन्न हो यदि वह अपनी छोटी-छोटी परेशानियों से

विचलित होता है तो यह भावनात्मक अपरिपक्वता से ग्रस्त माना जाता हैं। इस हेतु आवश्यक है कि ऐसे बालकों को समस्याओं से दुःखी होने के बजाय उन्हें हल करने की आदत डलवानी चाहिए। ऐसे बालकों को कठिन परिस्थितियों में हिम्मत के साथ मुकाबला करने का अभ्यास करवाना चाहिए क्योंकि जीवन में सफलता और सच्ची प्रसन्नता हासिल करने के लिए बालक का भावनात्मक रूप से परिपक्व होना बहुत जरूरी है और यह तभी संभव है जब बालक अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के प्रति सचेत हो।

किसी बालक के भावनात्मक लब्धि स्तर को इस आधार पर भी आंका जाता है कि वह घर, समाज और विद्यालय के साथ अपनी जीवन स्थितियों के साथ कितनी अच्छी तरह सामंजस्य स्थापित कर सकता है। ऐसा करने के लिए बालक को दृढ़ निश्चय, स्थितियों को समझ पाने की क्षमता और सतत् अभ्यास की आवश्यकता होती है। कुछ बालक अक्सर यह शिकायत करते हुए सुने और देखे जाते हैं कि हमारे आसपास के लोग अच्छे नहीं हैं या विद्यालय की स्थितियाँ अनुकूल नहीं है, प्रश्नपत्र कठिन आ गया जिससे बालक घबरा जाते हैं, बीमार हो जाते हैं। बालक की ऐसी स्थिति जिसमें बालक परिस्थिति पर दोषारोपण कर स्वयं को बचाने का प्रयास करता है। इसमें हमें समझ जाना चाहिए कि बालक का भावनात्मक स्तर विचलित हो रहा है।

हम विद्यार्थी द्वारा प्राप्त अच्छे अंक से विद्यार्थी को सफल मान लें तो यह हमारी सबसे बड़ी भूल है क्योंकि परीक्षा में प्राप्त अंक केवल कुछ प्रश्नों का एक सेट होता है जिनके आधार पर हम परीक्षा में तो सफल हो जाते हैं परन्तु जीवन में नहीं। जिन बालकों की केवल बुद्धिलब्धि अच्छी हो परन्तु भावनात्मक लब्धि न्यून हो उनका जीवन अपनी परेशानियों को गिनने में ही कट जाता है और ऐसे बालक बहुत जल्दी समाज विरोधी गतिविधियों का शिकार बन जाते हैं जिससे लोगों से संबंध बिगड़ने लगते हैं और परिणामस्वरूप जीवन तनाव और कुण्ठा से ग्रस्त हो जाता है ऐसे बालकों पर अभिभावक और शिक्षक दोनों द्वारा ध्यान रखना चाहिए कि बालक किस बात से चिंतित और परेशान है। बालक के असामान्य व्यवहार की जानकारी प्राप्त कर भावनात्मक संतुलन स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

हार्वर्ड बिजनेस रिसर्च की रिपोर्ट की माने तो तकनीकी और वैज्ञानिक योग्यता हासिल करने वाले बालक सामाजिक सरोकारों से बहुत तेजी से कटते जा रहे हैं। ऐसे बालकों ने मानवीय सरोकार पर चिंतन करना छोड़ दिया है और स्वयं को केवल तकनीकी एवं वैज्ञानिक उपयोगिता के दायरे में सीमित कर लिया है। आम जीवन को लेकर उनकी व्यावहारिक समझ कमजोर हो रही है तथा वे समाज से कटते जा रहे हैं। ऐसे बालक अपने पेशे में तो दक्ष हैं परन्तु अपने परिवार में भावनात्मक संतुलन के प्रति अदक्ष हो रहे हैं अतः आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे बालक की आई.क्यू. के साथ ई.क्यू. को भी प्रबल बनाया जाए।

भावनात्मक लब्धि से ही बालक अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकता है। इसके निम्नलिखित लाभ है-

- यह हमें परिवेशीय तौर पर पूरी तरह जागरुक रखता है।

- यह व्यक्ति को आत्मनियंत्रित बने रहने में मदद करता है।
- दूसरों से तालमेल व संबंधों को बनाए रखता है।
- दूसरों की भावनाओं को समझने के काबिल बनाता है।
- ई.क्यू. के धनी व्यक्तियों का मनोबल हमेशा ऊँचा रहता है।
- ऐसे बालकों में सामाजिक रूप से सोचने एवं समझने की क्षमता होती है।
- ऐसे बालक विषम परिस्थितियों में भी निराश नहीं होते।
- बालक में टकराव एवं संदेह के स्थान पर सहयोगी एवं दयालुता का भाव जाग्रत होता है।
- घर-परिवार और समाज में ऐसे बालक सामंजस्य बनाकर चलते हैं।
- बालक आशावादिता, सकारात्मक ऊर्जा, मुखरता, बहिर्मुखता के स्तर को प्राप्त करता है।

इस प्रकार भावनात्मक लब्धि के उक्त लाभों को दृष्टिगत रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि ई.क्यू. से बालक अपने जीवन में अच्छी तरह सामंजस्य स्थापित कर सकता है। मनोवैज्ञानिक डॉ. जयन्ती दत्ता का इस विषय पर कहना है कि घर में अभिभावकों एवं विद्यालय में शिक्षकों को चाहिए कि वे बालक की भावनाओं की अभिव्यक्ति को रोके नहीं वरन् बालक द्वारा की गयी अभिव्यक्ति को समझने का प्रयास कर बालक के विकास एवं परिवर्तन पर पूरा ध्यान देवें। बालक को उसकी भावनाओं को संतुलित और नियंत्रित करना सिखाएँ क्योंकि जीवन में सफलता और सुकून पाने के लिए भावनात्मक परिपक्वता बहुत जरूरी है इससे बालक स्वयं को ऊर्जावान महसूस करेगा और अपने घर, परिवार, विद्यालय, समाज से संबंधित समस्या को स्वतः दूर कर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकेगा।

करणी माता मंदिर के पीछे
जस्सूसर गेट के बाहर, बीकानेर (राज.)
मो: 9414742973

बालक खिलती फुलवारी का सबसे सुन्दर पुष्प है। उसकी परवरिश करके और सुन्दर बनाने का काम शिक्षकरूपी माली के हाथ में होता है।

-

बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका

❐ डॉ. गीता दहिया

आज के इस भौतिकवादी युग में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका बदल रही है और ऐसे में शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग कैसे अछूते रह सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि एक बच्चे के सर्वांगीण विकास में शिक्षक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें वह उसका शैक्षणिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास भी करता है। यदि इतिहास के पन्ने पलट कर देखें तो हमें ऐसे पौराणिक प्रमाण प्राप्त होंगे जिसमें गुरु शिष्य परम्परा के तहत शिक्षक निःस्वार्थ रूप से शिक्षा प्रदान करते हुए परस्पर सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित करता था। उस समय में न केवल शिक्षक ही पूरी तरह कर्त्तव्यनिष्ठ होकर अपने कर्म को ही पूजा मानता था अपितु शिष्य भी गुरु को भगवान का दर्जा देता था। कुल मिलाकर दोनों का सम्बन्ध एक आदर्श उपस्थित करता था, परन्तु वर्तमान में विश्वभर में आए बदलावों से हमारा देश भी अछूता नहीं हैं।

देश का सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक परिवेश संक्रमण काल से गुजर रहा है। इस प्रकार परिवेश में हुए परिवर्तन ने हमारे शिक्षातन्त्र को भी गहरे से प्रभावित किया है, विशेष रूप से शिक्षक की भूमिका को। निःसन्देह सीखने सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक आज भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है परन्तु नित नई चुनौतियों के संदर्भ में उसकी भूमिकाएँ तेजी से बदल रही है। आज के इस आधुनिक इंटरनेट युग में शिक्षक की भूमिका भी बहुआयामी हो गई है। 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005' में भी शिक्षक की बदलती भूमिका का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि-

'शिक्षक की भूमिका में एक बड़ी तब्दीली आई है। उसे अब तक ज्ञान के स्रोत के रूप में केन्द्रीय स्थान मिलता रहा है, वह सीखने-सिखाने की समूची प्रक्रिया का संरक्षक और प्रबंधक रहा है और पाठ्यचर्या या अन्य विभागीय आदेशों के जरिए सुपुर्द

शैक्षणिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियों को पूरा करने वाला रहा है। अब उसकी भूमिका, ज्ञान के स्रोत के बदले एक सहायक की होगी जो सूचना को ज्ञानबोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से शिक्षार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करे।'

आज विद्यार्थी के पास सूचना के सभी स्रोत उपलब्ध है जो शायद शिक्षक के पास न हो। आज का शिक्षार्थी अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में न केवल शिक्षक अपितु अपने आस-पास के पर्यावरण एवं संसाधनों जैसे टी.वी., किताबों, पत्रिकाओं, इंटरनेट आदि की मदद भी ले रहा है इन सबसे जहाँ एक ओर विद्यार्थी के ज्ञान में दिन दुगुनी-रात चौगुनी वृद्धि होती जा रही हैं, वहीं कुछ गंभीर समस्याएँ खड़ी हो रही हैं जैसे कुण्ठा, धूम्रपान, मारधाड़, एकाकीपन, असहनशीलता एवं संवेदनहीनता आदि। उपर्युक्त अनौपचारिक साधन अपने शिक्षण में अधिगम के किसी भी सिद्धान्त जैसे करके सीखना, अनुभव से सीखना, सहयोग से सीखना, संघर्ष से सीखना आदि का अनुपालन नहीं करते। ऐसे में जो विद्यार्थी अभी तक अपना अच्छा-बुरा नहीं जानते उन्हें केवल मशीनों (निर्जीव) या अन्य माध्यमों के सहारे छोड़ देना

कितना उचित है? संवेदना, भावना, अनुभव आदि जो मशीनों के पास नहीं है उनके सहारे संवेदनशील, भावुक व कल्पना से भरे बच्चे को छोड़ना उचित नहीं है। यह तो ऐसा है जैसे किसी बाज़ के पंजे में गोरैया का बच्चा हो।

प्रो. कृष्ण कुमार के शब्दों में–

'बच्चा जन्म से ही स्वाभाविक क्षमताओं के साथ पैदा होता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था उन स्वाभाविक क्षमताओं का आदर कर सके और उन क्षमताओं को इस हद तक बढ़ा सके कि उस बच्चे में एक लोकतान्त्रिक समाज में सामूहिक भागीदारी के साथ काम करने की क्षमता विकसित की जा सके।'

('राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005,' एन.सी.आर.टी., नयी दिल्ली, पृ. 122)

इस व्यवस्था निर्माण में शिक्षकों की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है। किशोरावस्था को मनोविज्ञान में भी तूफान एवं दबाव का काल कहा गया है। यही समय विद्यार्थी को एक सुव्यवस्थित एवं सांस्कृतिक नागरिक बनाने का उचित समय होता है। इस दौरान उनके अन्दर अनेक परिवर्तन आते हैं। ऐसे समय में विद्यार्थियों को मशीनों से अधिक उनको समझने वाले उपयुक्त व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो मानसिक व शारीरिक बदलावों से पूर्ण परिचित हो। यह कार्य केवल शिक्षक ही कर सकता है।

सामूहिकता के साथ जुड़े हुए सद्गुणों के विकास का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है परिवार। लेकिन आज जब परिवार टूट रहे हैं, बच्चों की परवरिश एकल परिवार में हो रही है, उनका बचपन एकाकीपन में गुजर रहा है तो सामूहिकता के गुणों का विकास कैसे हो पाएगा? इस एकल पारिवारिक व्यवस्था में बच्चा न केवल दादा, ताऊ, चाचा के प्यार से वंचित रहता है वरन् कुछ हद तक तो माँ-बाप के स्नेह से भी वंचित रहने लगा है। यहाँ दोष माँ-बाप का भी नहीं हैं क्योंकि उदारीकरण के इस दौर में माँ-बाप सुबह ऑफिस के लिए निकलते हैं व सायं घर आते हैं। दोनों की अपनी-अपनी व्यावसायिक समस्याएँ हैं। बच्चों के मन में उठने वाले सवालों का उत्तर देने, उनकी भावनाओं को सहेजने वाले व्यक्ति का नहीं होना इतना नुकसानदायक नहीं जितना उनके पास संवेदनहीन साधनों का होना है, जो उन भावनाओं, प्रश्नों व विचारों की धाराओं को खुली बहने देते हैं या उनकी रफ्तार बढ़ा या घटा देते हैं जो जीवन के बाग को या तो सुखा देती है या उसका विनाश कर देती है। यह सच है कि सामाजिक सरोकारों का प्रारंभिक प्रशिक्षण बच्चों को मिल ही नहीं पा रहा है, हमारे समाज में एक बड़े तबके को लगता है कि भले बच्चे उनके है लेकिन उनको पढ़ाने की जिम्मेदारी तो शिक्षकों की है, विशेषकर सरकारी स्कूल के अध्यापकों के बारे में उपर्युक्त सच्चाई लोगों से बातचीत में सामने आती हैं। इन परिस्थितियों में शिक्षक का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ शिक्षक ही एक विकल्प है जो इन्हीं भावनाओं, प्रश्नों व विचारों की धाराओं को संस्कारों का बाँध बनाकर उचित दिशा दे, तो निश्चित ही विचारों की विद्युत पैदा होगी, जो जीवन को प्रकाशमान करेगी। जीवन के शुष्क लगने वाले रेगिस्तान को, भावना व प्यार से सींचकर जीवन को हरा-भरा बनाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि अध्यापक वर्ग अभिभावकों की तुलना में अधिक मान्य होता है। इसलिए अध्यापक का साथ विद्यार्थी को न केवल पढ़ाई पूरी करने में बल्कि अच्छी आदतों, गुणों का विकास करने में भी अति आवश्यक हैं।

शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यपुस्तकों की पढ़ाई कराना ही नहीं है बल्कि विद्यार्थी के समेकित व्यक्तित्व का विकास करना भी है, शोध से यह सिद्ध हो चुका है कि संज्ञानात्मक पक्ष व्यक्ति की सफलता में केवल 20 प्रतिशत मदद करता हैं, शेष 80 प्रतिशत अन्य पक्ष (डेनियल गोलमेन, 1995)। इन अन्य पक्षों में महत्त्वपूर्ण है उसकी सामाजिक बुद्धि योग्यता, भावों को समझने-समझाने की योग्यता एवं अपने संवेगों को नियन्त्रित करने की योग्यता। व्यक्तित्व के इन पक्षों का विकास करना भी शिक्षक की जिम्मेदारी है। आज अध्यापक का दायित्त्व विद्यार्थियों की प्रतिभा का संवर्धन करना भी है क्योंकि बढ़ती उम्र उन्हीं के संरक्षण में गुजरती है। इसका एक कारण यह भी है कि अभिभावकों की भूमिका सिमटती जा रही है। याद रखें- हरी लकड़ी को किसी भी दिशा में मोड़ा जा सकता है, गीली मिट्टी से किसी भी प्रकार के खिलौने, बर्तन बन सकते हैं, किन्तु सूखी मिट्टी या सूखी लकड़ी जैसी भी है वैसी बनी रहती हैं।

आज संस्कृतियों में तेजी से संक्रमण हो रहा है। ऐसे में शिक्षक की अपनी भूमिका और भी अधिक संवेदनशील हो जाती है। शिक्षक का कार्य वास्तव में अन्य कार्यों से अधिक महत्त्वपूर्ण एवं चुनौतिपूर्ण है क्योंकि उसे भावी नागरिकों का निमार्ण करना है, उस पीढ़ी का निर्माण करना हैं, जो संस्कृति की संवाहक होगी। कई बार शिक्षक प्रार्थना सभा में नैतिक शिक्षा के नाम पर छात्रों को लम्बा-चौड़ा भाषण देकर यह मान लेते हैं कि उनका कार्य पूर्ण हुआ। वास्तव में यह तो शुरूआत भर होती है। असली कार्य तब प्रारंभ होता है जब उस भाषण के शब्दों पर शिक्षक भी अमल करें। शिक्षक का आचरण उसकी कार्यपद्धति में परिलक्षित हो। उपदेश भर से बात नहीं बनती वरन् यह भी आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक छात्र की मनोस्थिति एवं रुझान-प्रवाह पर ध्यान रखा जाए तथा समय-समय पर उसका मार्गदर्शन किया जाए।

अंततः यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि वर्तमान युग में शिक्षक छात्र/छात्राओं के समक्ष मार्गदर्शक होने के साथ ही देश के भाग्यविधाता और भविष्य निर्माता भी हैं। अतः बदलते परिवेश में शिक्षकों को ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना चाहिए, जिनमें विद्यार्थियों को अपनी शारीरिक तथा बौद्धिक संभावनाओं के पूर्ण विकास का मौका मिले। साथ ही, जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए वांछनीय सामाजिक और मानवीय मूल्यों के विकास का भी अवसर मिले। इसके लिए शिक्षक को न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक बातें पढ़ानी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान् सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए क्योंकि शिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है, जिसके जरिए लोग जीवन की ऊँचाइयों को छूते हैं।

प्राचार्य
नेशनल टी.टी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, अलवर (राज.)
मो. 941484610

दरिया की कसम मौजों की कसम
यह ताना-बाना बदलेगा,
तू खुद को बदल, बस खुद को बदल
तब ही तो जमाना बदलेगा,

भारतीय रिज़र्व बैंक

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
Dos and DON'TS

DOS

- Take a holistic view of your financial goals and invest accordingly.
- Invest only after adequate research / analysis.
- Be aware that value of your investments is subject to ups and downs of the market. They do not offer guaranteed returns like bank deposits.
- Deal only with SEBI registered brokers / Depository Participant (DP).
  - this list is available on SEBI, Stock Exchange (SE) and Depositories websites.
- Check and satisfy yourself about the credentials and experience of the intermediary.
- Ensure you have PAN card and Bank account.
- Strike off all blank irrelevant fields / clauses in the.
  - agreement(s) executed.
  - Registration of Know Your Customer (KYC).
- Obtain Unique Client Code (UCC) from stock broker Get all your trades executed only through your UCC.
- Insist that your demat a/c number is preprinted/pre stamped on the Delivery Instruction Slips (DIS).
- Be aware that an intermediary or its staff making a recommendation, is required to disclose their interest/ position in that scrip.
- If you avail internet trading facility,
  - grant Power of Attorney (PoA) only for auto debit of funds /securities for settlement obligation for investment / subscription.
  - Opt for digital contract note.
  - Ensure adequate infrastructure and safety measures.
- Make payments only.
  - through A/c payee cheques / drafts /EFT.
  - to the stock broker and not to the sub broker, dealing persons /employees of broker / sub broker.
- Keep a record of all.
  - instructions and transactions with broker / DP.
  - correspondences of complaints against broker / DP.
- Ensure that contract note (physical or digital) is signed by an authorized person.
- Keep track of your portfolio in your Demat A/c on a regular basis.
- In case of any dispute / difference ! grievance, contact the compliance officer of broker / DP.
  - Be aware that all brokers/ DPs are required to have a dedicated Email ID for registering your complaints.
- Be aware that investor complaints against brokers/DPs are displayed on the websites of SE/Depositories.
- Approach SEBI, if your grievance is not resolved.
- Be aware that details of arbitration proceedings and penal actions against brokers/DPs are displayed on the websites of SE/Depositories.
- Freeze your demat a/c, if you are not using it regularly.

DON'TS

- Do not invest with borrowed money.
- Do not expect unrealistic / guaranteed returns.
- Do not be influenced by advertisement / advices / rumours / unauthentic news promising unrealistic gains and windfall profits in mass media.
- Do not be guided by astrological predictions on share prices and market movements.
- Do not fall prey to market rumours / 'hot tips/ 'opportunity knocks only once' kind of advice.
- Do not invest in scrips on sudden spurts in trading volumes / prices without proper research.
- Do not be swayed by market sentiments.
- Do not invest on any explicit/ implicit promises made by anyone.
- Do not indulge in impulse investing.
- Do not participate in unauthorised and illegal trades outside the stock exchange mechanism (dabba trading).
- Do not give wrong / contradictory / incomplete information in the client registration form.
- Do not execute PoA in favour of employee / representative of broker / DP.
- Do not reveal your trading / demat account passwords to any body.
- Do not allow others to trade in your account.
- Do not trade in anybody else's account.
- Do not pay money to anyone to trade on your behalf for assured returns.
- Do not entrust management of your money / securities with broker / sub broker.
- Do not sign blank forms (account opening forms/ DIS / Demat Request Form (DRF).
- Do not engage in practices that distort demand / prices artificially

Disclaimer: The aforesaid information provided as a service to investor(s) and general in nature. It is neither a legal interpretation nor a statement of SEBI policy. If you have questions concerning the meaning or application of a particular act or rule or regulation or circular, please consult your legal advisor.

सिद्धार्थ देचलवाल
सहायक महाप्रबंधक
भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
भू-तल, जीवन निधि 2, एलआईसी भवन,
अंबेडकर सर्किल जयपुर
मो: 9969941548

रपट

गुरु वंदन-सखा संगम

कार्यक्रम के विविध रूप

❒ दीप सिंह यादव

बचपन के सहपाठी-सखा, गुरु देव.. सभी का एक जगह मिलन हुआ, हर एक प्रफुल्लित हो उठा। चिर युवा शिष्य श्रद्धा से अपने गुरुजनों के चरण स्पर्श कर रहे थे। ऐसा ही दुर्लभ एवं पावन नज़ारा रविवार 6 मई 2018 को पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर जिले के सिणधरी उपखण्ड के छोटे से राजस्व ग्राम के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भाटाला के प्रांगण में देखने को मिला। ऐसा अनूठा दृश्य विद्यालय प्रधानाचार्य, समस्त कार्मिकों, विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी परिषद् के समन्वय से विद्यालय की स्थापना के स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित 'गुरु वंदन-सखा संगम' कार्यक्रम में देखने को मिला।

'गुरुवंदन एवं सखा संगम' को लेकर विद्यालय परिवार एवं ग्रामवासियों के साथ ही आसपास के गाँवों के लोग भी पूरी सक्रियता एवं उत्साह से जुटे हुए थे। भाटाला ग्राम व विद्यालय को विद्युत रोशनी व रंगोली से सजाया गया।

कार्यक्रम के **प्रथम सत्र में अध्यक्ष** - श्री पूनम चन्द सुथार (शिक्षाविद्, जोधपुर) **मुख्य अतिथि**-श्री जैतमाल सिंह राठौड़ [अ.जि.शि.अ., (मा.शि.) बाड़मेर], **विशिष्ट अतिथि** - श्री दला राम बटेसर (भारतीय किसान संघ के प्रदेश महामंत्री) पूर्व छात्र, **विशिष्ट अतिथि** - श्री अमर सिंह राठौड़ प्रथम प्रवेशांक रहे। सर्वप्रथम विद्यालय के **प्रधानाचार्य श्री दीप सिंह यादव** ने स्वागत उद्बोधन व कार्यक्रम की रूपरेखा, आयोजन का उद्देश्य, राजकीय प्रयोजन पर विस्तार से जानकारी दी तथा आए हुए सभी गुरुजनों, पूर्व विद्यार्थियों, शिक्षाविद्, गणमान्यजनों, मेहमानों का स्वागत किया।

श्री जैतमाल सिंह राठौड़ [अ.जि.शि.अ. (मा.शि.), बाड़मेर] ने अपने उद्बोधन में राष्ट्र चिंतन व शिक्षा को लेकर अभिभावक एवं समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला और बताया कि शिक्षा आदमी को अंधेरे से बाहर लाती है।

श्री अमर सिंह राठौड़ प्रथम प्रवेशांक ने गुरु शिष्य परम्परा एवं अपने अनुभव साझा किए।

श्री पूनम चन्द सुथार (शिक्षाविद्, जोधपुर) ने अपने उद्बोधन में बदलते हुए परिवेश में राष्ट्र निर्माण में हम सबकी भागीदारी तथा उच्च नैतिक मूल्यों पर जोर दिया। युवाओं को शिक्षा के साथ संस्कारवान होने पर भी जोर दिया।

प्रथम सत्रांत पर सभी मेहमानों ने विद्यालय वाटिका में पौधारोपण किया।

द्वितीय सत्र में अध्यक्ष - संस्थापक शिक्षक **श्री नथमल जोशी** एवं अतिथि-व्यवसायी, अधिकारी, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, किसान (सभी पूर्व छात्र) रहे।

द्वितीय सत्र के प्रारंभ में विद्यालय के **प्रधानाचार्य दीप सिंह यादव** ने अपने उद्बोधन में बताया कि गुरु के महत्त्व को समझने की जरूरत है। आज बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो स्कूल कॉलेज में किसी न किसी गुरु से सीखते हैं और बड़े होकर अपनी-अपनी इच्छा अनुसार कुछ न कुछ करते है। कोई लोगों की सेवा करने के लिए डॉक्टर बनता है, कोई व्यापारी, कोई वकील, कोई कलेक्टर बनता है और उनमें से कोई अपने गुरु की तरह ही एक सच्चा गुरु बनता है। दोस्तों हम अपने गुरु से सीख कर जो भी बनते हैं और हम अपने जीवन में कुछ भी बन कर जो मान सम्मान और पैसा कमाते हैं, वह सब कुछ हमारे गुरु की वजह से होता है। अतः हमें आने वाली पीढ़ी के विकास, अच्छी शिक्षा देने के लिए, विद्यालय विकास में आगे आना चाहिए। जो पूर्व विद्यार्थी अच्छे सरकारी पदों पर हैं या बिजनेसमैन बन चुके हैं, वे सभी आगे बढ़कर सहयोग करें ताकि बच्चों को अच्छा पढ़ने एवं मोटिवेट करने में सहायता मिल सके।

संस्थापक शिक्षक श्री नथमल जोशी पूर्व शिष्यों के बीच भावविभोर हो गए। उन्होंने कहा कि '50 वर्षों में क्या कुछ बदल गया पर आज भी गुरु शिष्य की परंम्परा सदियों से चली आ रही है। इस शुद्ध परंपरा का पालन करने वाला ही सच्चा गुरु व शिष्य कहलाएगा। तभी जीवन सार्थक हो सकता है, तभी जीवन गौरवशाली बन सकता है, गुरु को अपनी मर्यादा पालन करते रहना चाहिए और शिष्य गुरु के प्रति समर्पित होकर शिक्षा लेता है तो वह एक महान लक्ष्य को हासिल कर लेता है, कोई बाधाएँ, उन्हें नहीं रोक सकती है। गुरु के महत्त्व पर संत शिरोमणी तुलसीदास ने रामचरित मानस में लिखा है....

गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई।
जों बिरंचि संकर सम होई।।

कभी गाँवों में प्रशासनिक अधिकारी, प्रधानाचार्य, व्याख्याता, डॉक्टर, प्रबंधक देखना बहुत बड़ी बात होती थी, आज सभी एक मंच पर अपने अनुभव साझा कर रहे हैं। जो आने वाली पीढ़ी के लिए उत्प्रेरक बन रहे हैं।'

पूर्व छात्र **श्री गेना राम मेघवाल (RAS.)** ने कड़ी मेहनत करके आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। **श्री वाला राम नेहरा, प्रधानाचार्य** ने बताया कि लक्ष्य तय करके हम सफलता हासिल कर सकते हैं। **श्री दला राम बटेसर (बैंक प्रबंधक), श्री मेघराज सिहाग (परिवहन उपनिरीक्षक)** ने भी कमजोर वर्ग को साथ लेकर आगे बढ़ने पर जोर दिया। **श्री चौथा राम सुथार, श्री मूला राम कूकणा, श्री खूमा राम, श्री कन्हैया लाल** सहित अनेक पूर्व छात्रों ने अपने अनुभव साझा किए।

तृतीय सत्र की **अध्यक्षता** - श्री बंशीधर गुर्जर, [उपनिदेशक, (मा.शि.), जोधुपर], **मुख्य अतिथि**-श्री गोमाराम जीनगर (सहायक निदेशक, मा.शि. राजस्थान, बीकानेर), **विशिष्ट अतिथि**- पूज्य संत श्री रघुनाथ भारती (प्रदेश उपाध्यक्ष, राजस्थान गो सेवा आयोग)

विशिष्ट अतिथि– श्रीमती देवी बिजानी (प्रधानाचार्य राजकीय अंध विद्यालय, जोधपुर)

सर्व प्रथम विद्यालय के **प्रधानाचार्य श्री दीप सिंह यादव** ने विद्यालय प्रतिवेदन पेश किया जिसमें... एक वर्ष की उपलब्धि–शैक्षिक, सहशैक्षिक, भौतिक ..... के बारे में विस्तार से बताते हुए सभी भामाशाहों, स्टाफ व अन्य सहयोगकर्त्ताओं का आभार और अतिथियों का स्वागत किया।

पूज्य संत श्री रघुनाथ भारती जी (राजस्थान गो सेवा आयोग के प्रदेश उपाध्यक्ष) ने अपने आशीर्वचनों में बताया कि गुरु शिष्य परम्परा आध्यात्मिक प्रज्ञा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सोपान है। भारतीय संस्कृति में गुरु शिष्य परम्परा के अन्तर्गत गुरु अपने शिष्य को शिक्षा देता है या विद्या सिखाता है। बाद में वही शिष्य गुरु के रूप में दूसरों को शिक्षा देता है। यही क्रम चलता रहता है। यह परम्परा सनातन धर्म की सभी धाराओं में मिलती है। गुरु शिष्य की यह परम्परा ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है। साथ ही अक्षर ज्ञान से आगे बढ़कर अध्यात्म की ओर अग्रसर होकर जीवन को परमार्थ व परोपकार में लगाने की बात कही।

श्री गोमाराम जीनगर (सहायक निदेशक मा.शि. राजस्थान, बीकानेर) ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु के प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने समावेशित जीवन मूल्यों, दिव्य गुणों व अनुसंधान के अवसरों की समुपलब्धता के कारण भारतीय शिक्षा की प्राचीन पद्धति को अति सक्षम एवं संस्कारवान युवा निर्माण का आधार बताया।

श्री बंशीधर गुर्जर [उपनिदेशक (मा.शि.) जोधपुर] ने अपने उद्‌बोधन में पूर्व विद्यार्थी परिषद् से आह्वान किया कि जिन अभावों को देखा है, आने वाली पीढ़ी को उसका सामना न करना पड़े, इसके लिए विद्यालय में सहयोग देना आज के समय की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता हैं। राजकीय विद्यालयों में मिलने वाली सुविधाओं एवं शिक्षा के बारे में विस्तार से बताया।

उपनिदेशक महोदय ने बताया कि विद्यालय के भौतिक विकास में भामाशाह सबसे ज्यादा योगदान देते हैं। ये सभी विद्यालयों की प्रगति का आधार हैं। भामाशाहों के सम्मान का यह अवसर अनुकरणीय है।

विद्यालय विकास में सहयोग देने वाले भामाशाह परिवारों का अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न देकर सम्मान किया।

समारोह में जहाँ पूर्व गुरुजनों का सम्मान किया गया, वहीं विद्यालय से निकले होनहार अधिकारी, उद्योगपति, खिलाड़ी, भामाशाह, सामाजिक कार्यकर्त्ता व प्रतिभावान छात्र–छात्राओं का सम्मान किया गया। विद्यालय के संस्थापक शिक्षक **श्री नथमल जोशी (1968) से लेकर 2018 तक** विद्यालय में सेवाऐं दे चुके सभी पूर्व गुरुजनों का भी श्रीमान् उपनिदेशक महोदय सहित अतिथियों ने बहुमान किया।

विद्यालय के छात्र **जीवराज पुत्र श्री ललित किशोर** एवं **कविता पुत्री श्री रुगा राम सुथार** को राजस्थान सरकार द्वारा **लेपटॉप** प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। विद्यालय की होनहार पूर्व छात्राएँ **गीता राजपुरोहित पुत्री श्री सुजा राम** एवं **झीणी कुमारी पुत्री श्री भादा राम** को राजस्थान सरकार की बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजना में **स्कूटी** मिलने पर सम्मानित किया गया। कोई भी आयोजन भामाशाहों के सहयोग के बिना संभव नहीं है। भोजन व्यवस्था, चाय–नाश्ता, टैण्ट व्यवस्था, पेयजल, फलेक्स–बैनर, निमंत्रण पत्रिका, प्रतीक चिह्न, साफा सम्मान, पहचान पत्र में योगदान देने वाले सभी भामाशाहों का सम्मानित मंच द्वारा बहुमान किया गया....

श्री नरपतराज, श्री मेघराज सिहाग पुत्र श्री हरखा राम सिहाग ने एक कक्षा कक्ष हेतु मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजना में **5 लाख 11 हजार रुपये, श्री गौरीशंकर, श्री मोहनलाल, श्री कांतिलाल पुत्र श्री रघुनाथ खत्री** ने विद्यालय में एक कमरा, **श्री अणदा राम लूखा** ने उच्च क्वालिटी का एक कम्प्यूटर, **श्री पूनमाराम नेहरा व.अ. (स्थानीय विद्यालय)** ने विद्यालय विकास हेतु **51 हजार रुपये** देने की घोषणा की।

विद्यालय परिवार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए अतुलनीय कार्य के लिए सभी भामाशाहों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे पुनीत कार्यों से अन्य लोगों को प्रेरणा मिलती है। **भारत दर्शन गलियारा** का उद्‌घाटन **श्री बंशीधर गुर्जर,** [उपनिदेशक (मा.शि.), जोधपुर] **श्री गोमाराम जीनगर** [सहायक निदेशक (मा.शि.) राजस्थान, बीकानेर] पूज्य संत **श्री रघुनाथ भारती** (प्रदेश उपाध्यक्ष, राजस्थान गो सेवा आयोग), प्रधानाचार्य (स्थानीय विद्यालय) एवं पूर्व छात्रों के सान्निध्य में किया गया।

भारत दर्शन गलियारा जिसमें भारतीय सांस्कृतिक विरासत की मौलिकता को स्थापित करने, ऐतिहसिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक व विविध दृष्टि से नवपीढ़ी में चेतना व प्रेरणा का संचार करने के लिये इस गलियारे की दीवारों पर अमृत वचन, श्लोक एवं ध्येय वाक्य, भारत की इसी गौरवशाली संस्कृति पर आधारित है। इसमें भारतीय इतिहास, राजनीति, कानून, भूगोल, पुरासम्पदा, विरासत, अमूल्य धरोहर, सामान्य ज्ञान, विज्ञान, धरती धोरां री की कला, संस्कृति एवं गौरवशाली परम्पराओं एवं अन्य विशिष्टताओं के दिग्दर्शन कराने पर विशेष बल दिया गया है। यह विद्याथियों में देश व राज्य की बहुविध एवं सर्वांगीण जानकारी उपलब्ध कराने व उनमें संस्कृति युक्त ऐतिहासिक कार्यों के संवर्द्धन से जुड़े रहने की प्रेरणा देने, सुसंस्कृत बनने, शक्ति का संचार कराने, विद्यार्थियों में देशभक्तों के त्याग, बलिदान एवं मातृभूमि के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा का स्मरण कराने के उद्देश्य से प्रासंगिक जानकारियाँ लाभदायक व प्रेरणादायी सिद्ध होंगी। इसी उद्देश्य से गलियारे का निर्माण किया गया।

स्मार्ट वर्चुअल क्लास का उद्‌घाटन श्री बंशीधर गुर्जर, [उपनिदेशक (मा.शि.), जोधपुर] श्री गोमाराम जीनगर [सहायक निदेशक (मा.शि). राजस्थान, बीकानेर], श्री रघुनाथ भारती (प्रदेश उपाध्यक्ष, राजस्थान गो सेवा आयोग) के सानिध्य में किया गया।

वे दिन गुजर गए हैं जब कक्षा में शिक्षण पाठ्यपुस्तकों द्वारा कराया जाता, समझाने के लिए ब्लैक बोर्ड का इस्तेमाल होता था। सीखने के लिए छात्र अध्यापन आधारित और पारंपरिक रूप से कार्य तरीकों के लिए शिक्षकों पर आधारित रहते थे। आजकल डिजिटल शिक्षण जैसा पीपीटी., अभ्यास संबंधी डेमो, लर्निंग विधियों, वीडियो प्रस्तुतियों, ऑनलाइन प्रशिक्षण और अन्य डिजिटल पद्धतियों या प्लेटफॉर्म्स के उपयोग के साथ कक्षा में शिक्षण अत्यधिक संवादात्मक हो गया है। डिजिटल तकनीकी से कक्षाओं का शिक्षण अधिक मजेदार और संवादात्मक बन गया है। बच्चे इस पर अधिक ध्यान दे रहे हैं, वे न केवल सुन रहे हैं बल्कि इसे स्क्रीन पर देख रहे हैं जिससे उनके सीखने की क्षमता में काफी इजाफ़ा हो रहा है।

प्रधानाचार्य दीप सिंह यादव ने बताया कि अगले सत्र से स्मार्ट वर्चुअल क्लास शुरू हो जाएगी। चॉक, डस्टर की जगह इलेक्ट्रोनिक पेन व इंटरेक्टिव डिजिटल बोर्ड ले लेगा। नई तकनीक और इक्विपमेंट आज समय की आवश्यकता है। शिक्षा विभाग नई तकनीक, वर्चुअल क्लासरूम को बढ़ावा दे रहा है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, मोबाइल एप्लिकेशन, टेबलेट, लेपटॉप और अन्य आधुनिक उपकरणों के विकास के कारण आज की दुनिया की अधिक से अधिक चीजें डिजिटल हो रही हैं। डिजिटल शिक्षा हमारी पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में अपनी जगह बना रही है और पारंपरिक कक्षा का स्थान लेती जा रही है।

साथी शिक्षा अधिकारी जिन्होंने अमूल्य समय निकालकर सहयोग व उत्साहवर्धन किया। जिनका माननीय उपनिदेशक एवं सहायक निदेशक व पूज्य संत श्री रघुनाथ भारती जी द्वारा सम्मान किया गया। सभी अतिथियों ने विद्यालय वाटिका में पौधारोपण कर कार्यक्रम का विधिवत् समापन किया। प्रधानाचार्य श्री दीप सिंह यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गरिमामय कार्यक्रम का संचालन श्री धन्नाराम भदरु ABEEO. व श्री छैलूदान चारण अ. ने किया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भाटाला (बाड़मेर) राज.
मो. 9414647437

रपट

सखा संगम

विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन

❐ **जसाराम चौधरी**

रा.उ.मा.वि. भणियाणा (जैसलमेर) में दिनांक 06 मई, 2018 को 'सखा-संगम' (पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन) का आयोजन पूर्व विद्यार्थी **श्रीमान् सवाईसिंह गोदारा** IPS. पुलिस अधीक्षक, बीकानेर के मुख्य आतिथ्य, श्रीमती कमला चौधरी के निर्देशन तथा तकरीबन 4000 पूर्व विद्यार्थियों, गणमान्य नागरिकों, ग्रामीणों व भामाशाहों की उपस्थिति में भव्य रूप में किया गया।

समारोह के विशिष्ट/अतिविशिष्ट अतिथि पूर्व विद्यार्थी श्री नैनदान रतनू पूर्व जिला प्रमुख जैसलमेर, श्री रणवीरसिंह गोदारा समाजसेवी, श्री जेठाराम सुथार समाजसेवी दुबई, श्री सोहनसिंह गोदारा समाजसेवी, श्री विशनसिंह गोदारा अधिवक्ता-राज. हाईकोर्ट जोधपुर, श्री भगवानसिंह जाखड़ अधिवक्ता राज. हाईकोर्ट जोधपुर, श्री रेंवतसिंह गोदारा रिटायर्ड A.C.F., श्री अचलाराम पंवार रिटा. कर्नल आर्मी, श्री बुलिदानसिंह चम्पावत रिटा. केप्टन, श्री गायड़सिंह चम्पावत रिटा. केप्टन, श्री कैलाशदान रतनू अति. पुलिस अधीक्षक बालोतरा, श्री दमाराम सऊ डिप्टी चीफ इन्जीनियर उ.प.रेलवे, डॉ. सुरजाराम जाखड़ एसोसिएट प्रोफेसर J.N.V.U. जोधपुर, श्री नारायणदास राठी C.A., श्री अचलाराम बेरड़ कमाण्डेंट C.R.P.F., युवा उद्यमी एवं N.R.I. श्री नवल किशोर गोदारा, श्री अजीज खान मेहर A.D.J. बालोतरा, श्री मदनसिंह R.J.S., डॉ. रमेश जाखड़ M.D.M. जोधपुर आदि पूर्व विद्यार्थियों की उपस्थिति में आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आगाज़ माँ सरस्वती व भणियाणा के युग पुरुष एवं स्वतन्त्रता सैनानी स्व. श्री खरताराम चौधरी की प्रतिमा पर मुख्य अतिथि व संस्थाप्रधान ने माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया। अतिथियों का स्वागत राजस्थानी परम्परानुसार साफा व शॉल ओढ़ाकर किया गया। तत्पश्चात् संस्थाप्रधान श्री जसाराम चौधरी ने रा.उ.मा.वि. भणियाणा, जैसलमेर के गौरवशाली अतीत व वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला तथा विद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

उच्च पदों पर आसीन पूर्व विद्यार्थियों ने अपने विद्यार्थी जीवन व विद्यालय से जुड़े संस्मरण सुनाएँ तथा स्व. श्री खरताराम चौधरी के शिक्षा के क्षेत्र में महत्ती योगदान व छात्रावास के विशेष प्रबन्धन के संबंध में भी अपने संस्मरण व अनुभव साझा किए। 1950 में प्राथमिक विद्यालय की नींव रखने वाले स्व. श्री खरताराम चौधरी को उपस्थित जनसमूह द्वारा 2 मिनट का मौन रखकर सादर-श्रद्धांजलि दी गई।

समारोह में कुल 15 लाख रु. नगद का जनसहयोग विद्यालय को मिला। गाँव के भामाशाह श्री सोहनसिंह गोदारा की ओर से सभी पूर्व विद्यार्थियो के लिए भोजन व्यवस्था, अतिथियों को स्मृति चिह्न श्री ओमप्रकाश कडवासरा द्वारा, श्री शकूर खान मेहर व श्री मंगलाराम गवारिया ने टेन्ट व्यवस्था की। अन्य सभी व्यवस्थाओं में ग्रामीणों ने सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री दमाराम सऊ ने कहा कि श्री खरताराम चौधरी ने छात्रों को किसान परिवेश से ऊपर का स्तर प्रदान करने में बहुत सहयोग प्रदान किया। विद्यालय की स्थिति को सुधारने के लिए प्रयासरत रहने की उन्होंने सभी से अपील की।

डॉ. सुरजाराम जाखड एसोसिएट प्रोफेसर J.N.V.U. ने पूर्व छात्रों के अनुभवों से सीख लेने और अपने उद्देश्य पर केन्द्रित रहने पर ध्यानाकर्षण किया। उन्होंने कहा कि हमें अपने आपको इतना मजबूत बनाना चाहिए कि हम दूसरों को रोजगार प्रदान कर सकें। बिना मेहनत किए आमदनी की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा का असली उद्देश्य सोचने की शक्ति का विकास करना है, न कि महज उसे मुद्रा अर्जन से जोड़ा जाय। छात्र अपने कॅरियर का चयन अपनी रुचि एवं अपनी क्षमता के आकलन के उपरान्त करें। मनुष्य का कर्म ही पूजनीय होता है न कि कर्म के बारे में केवल बातें

करते रहना।

एडीजे. श्री अजीज खान ने स्व. श्री खरताराम चौधरी की तुलना नेपोलियन बोनापार्ट से की जिसकी उपस्थिति मात्र सैनिकों में अद्‌भुत जोश प्रदान करती थी। उन्होंने कहा कि आज का युग विशिष्टीकरण का युग है। किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले खूब सोच समझकर पूरे मनोयोग से प्रयत्नरत होना चाहिए। सामान्य तरह का प्रयास परिणामों में गुणवत्ता नहीं ला सकता है।

कर्नल अचलाराम पंवार ने भणियाणा का नाम विश्वपटल पर देखने की तमन्ना जाहिर की।

कमान्डेन्ट अचलाराम बेरड़ ने अपने आदर्शों में स्व. श्री खरताराम चौधरी, श्री बादशाह दीक्षित पूर्व अध्यापक एवं वार्डन तथा श्री सवाईसिंह गोदारा एस.पी. को अपना आदर्श बताया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यदि हमें सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचना है तो शरीर को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है। अच्छा स्वास्थ्य और शांतिपूर्ण सतत् कर्म सफलता की कुंजी है। उनके अनुसार छात्र जीवन में मोबाइल का अधिक प्रयोग मस्तिष्क के लिए नुकसानदायी और समय को बर्बाद करने वाला होता है।

श्री मदनसिंह सारण ने अपने उद्‌बोधन में वर्तमान शिक्षा में दंड की कमी को अध्ययन के पतन का कारण बताया। उन्होंने अभिभावकों से प्रार्थना की कि वे संरक्षणवादी नीति को कम करके विद्यार्थियों को कठोरता सहन करने की आदत डलवाएँ। सरकारी विद्यालयों को उपेक्षित नहीं कर उपलब्ध संसाधनों का लाभ उठाएँ और समाज को आगे बढ़ाएँ। विद्यालय के रूप में छोड़ी हुई विरासत का संरक्षण करें और इसका उन्नयन करने में योगदान प्रदान करें।

श्री कैलाशदान रतनू अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि विद्यालय के संसाधनों का अधिक से अधिक लाभ उठाएँ। विद्यालय का नाम स्व. श्री खरताराम चौधरी के नाम पर करवाने की आवश्यकता महसूस की। उन्होंने कहा कि चौधरी जी की मूर्ति भणियाणा के सर्किल पर स्थापित करें ताकि उनके दर्शन हो सके। श्री अमरदीन पूर्व सरपंच पन्नासर ने अपने समय के अध्यापकों की प्रशंसा की। उनके द्वारा कठिन विषय को सामान्य तरीके से समझाने की चर्चा की। उन्होंने कहा कि बिना शिक्षा जीवन बिना तारों की रात (Starless Night) के समान है। शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन की आवश्यकता भी जरूरी है। श्री नेनदान पूर्व जिला प्रमुख ने स्व. श्री खरताराम चौधरी की स्वच्छ छवि के बारे में उल्लेख किया। उनके पदचिह्नों पर चलने की सलाह दी। अपने समय में विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली खाद्य आपूर्ति का उल्लेख किया। उन्होंने स्व. श्री खरताराम चौधरी द्वारा सभी जातियों, कौमों को समान समझने की तारीफ़ की। उन्होंने विद्यालय के प्रधानाचार्य की तारीफ़ में कहा कि श्री जसाराम चौधरी ने अपने नाम के अनुरूप कार्यकर इस सम्मेलन की क्रियान्विति की है।

डॉ. भरत सारण संस्थापक 50 विलेजर्स ने कविता के रूप में स्व. श्री खरताराम चौधरी को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने सभी श्रोताओं से अपील की कि वे विद्यालय की भौतिक कमियों को दूर करने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि शिक्षित वे है जो शिक्षित जैसा व्यवहार करें। उन्होंने अभिभावकों से प्रार्थना की कि वे अपने बच्चों को घर पर संस्कारित करें। अपने लायक कर्म हमेशा करें और समय का सदुपयोग करें।

रिटायर्ड इन्कम टेक्स कमिश्नर श्री डी.एन पारीक ने कहा कि गरीब बच्चों को विशेष रूप से ध्यान देकर शिक्षा प्रदान करना एक पुण्य कार्य है। हमें इसमें पूर्ण योगदान देना चाहिए।

श्री नवल गोदारा (N.R.I.) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमें अपने क्षणिक विचार त्यागकर अपने उद्देश्य की तरफ ध्यान देना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में आने वाले भटकाव को रोकना चाहिए। अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा सदैव देश के लिये दान करना चाहिए। किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझना एवं सकारात्मक सोच रखना ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने अभिभावकों से प्रार्थना की कि अनावश्यक 'पॉकेट मनी' अपने बच्चों को नहीं दें। इससे उनमें भटकाव आता है और समय की बर्बादी होती है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सवाईसिंह गोदारा एस.पी. बीकानेर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भणियाणा ग्राम के विकास हेतु सभी यथायोग्य कुछ न कुछ दें, यही स्व. श्री खरताराम जी को सच्ची श्रंदाजलि होगी। जात-पांत आदि की संकीर्णता को छोड़कर वृहद् सोच विकसित करें। बड़ी जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए तैयार करें। विद्यार्थी के कॅरियर का चुनाव पसंद अनुसार होना चाहिए न कि जाति गत हिसाब से। किसी भी कार्य को आधे अधूरे मन से नहीं करें। अपने काम को करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए। उन्होंने बताया वे ऐसे एशियन है जो U.N. मिशन में चुने गए। उन्होंने कहा कि सामाजिक ढाँचे को बनाए रखना हमारा दायित्व है। बड़ी सोच ही स्वच्छ समाज का निर्माण कर सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि इस विद्यालय के निर्माण के समय स्व. श्री खरताराम जी ने किस प्रकार तन, मन, धन से योगदान दिया। वे चूना बनाने वाले मिक्सर को अपने सिरहाने लगाकर सोते थे। उन्होंने बताया कि श्री ललित के. पंवार (IAS) तत्कालीन शिक्षा निदेशक ने स्वयं एक बार कहा था कि इस विद्यालय के कण कण में स्व. श्री खरताराम जी की आत्मा बसती है।

अंत में श्री रणवीरसिंह गोदारा (समाजसेवी) ने उपस्थित सभी मेहमानों का हार्दिक आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया तथा भोजन के पश्चात् कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
भणियाणा (जैसलमेर)
मो: 99833-98945

आप तो बस आप ही हैं!

लेखक : बुलाकी शर्मा, **प्रकाशक** : सूर्य प्रकाशन मन्दिर बीकानेर, **संस्करण** : 2017, **पृष्ठ संख्या** : 2018, **मूल्य** : ₹200

बुलाकी शर्मा कृत्त 'आप तो बस आप ही हैं!' व्यंग्य संकलन मिला। पृष्ठ पलटते ही प्रेम जनमेजय और सुशील सिद्धार्थ द्वारा की गई फ्लैप कवर पर टिप्पणियों को पढ़ा जिसमें प्रेम जी ने उन्हें आत्म पर व्यंग्य करने वाला कहा तो सुशीलजी उन्हें 'पाठकों के लेखक' कहते हुए उनकी रचनात्मक विनम्रता को स्वीकृति देते दिखे। फ्लैप के दूसरी ओर सुरेशकांत जी, सुभाष चन्द्र जी, जवाहर चौधरी जी तथा लालित्य ललित जी संग विराज उन्हें बधाई देते हुए कह रहे थे कि बुलाकी जी ने विसंगतियों का कोई कोना नहीं छोड़ा। सुभाष चन्द्र जी के अंदर से कल्लू मामा झाँक कर कह गए कि उनकी आयरनी और विट का कोई जोड़ नहीं तो जवाहर चौधरी साहब चुप्पी कैसे साध लेते, सो वे भी उनके लेखकीय अनुभव और भाषागत कौशल को स्वीकारते दिखे। लालित्य ललित जी ने बुलाकी जी को मृदुभाषी पर महीन मार करने वाला व्यंग्यकार माना। अब आप सोचिए एक ही लेखक में इतनी खूबियाँ छुपी हो तो हम जैसे 'नवांकुर' का कुछ भी सूरज को दिया दिखाने जैसा नहीं होगा? फिर भी बाज न आते हुए व्यंग्य संग्रह को पढ़ डाला।

तो जनाब! 'संकलन' में कुल बयालीस व्यंग्य लेख हैं जिनमें पहला लेख ही संकलन का शीर्षक भी बन पड़ा हैं-**'आप तो बस आप ही हैं!'** असल में सुखलाल और रामभरोसे के मध्य लेखक की उपस्थिति रामभरोसे को अखरती है। कारण-सुखलाल जी रामभरोसे से उधार ले सुख से बैठ गए हैं और उधार को रामभरोसे की उदारता समझ हड़पने के चक्कर में हैं। दूसरी ओर रामभरोसे भी उधार देकर राम के भरोसे ही हैं। जब देश में इतना कुछ राम के भरोसे चल ही रहा है तो फिर यह तो छोटी सी उधारी है। चूँकि हमारे समाज में रामभरोसे और सुखलाल सरीखे चरित्र भरपूर मात्रा में मिलते हैं जो राम के भरोसे पर उधार दे बैठते हैं और उसी भरोसे में सेंध लगा सुखलाल सरीखे सुख से जीते हैं, बस उन्हें तनिक सा झूठ बोलना पड़ता हैं और वह तो हम भारतीयों की नस-नस में खून की जगह दौड़ता हैं। अनायास निकल जाता हैं सायास होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अगला लेख **'राज करे ज्योतिष'** समाज के प्रगतिशील और जनवादी कहे जाने वाले दोगले चरित्रों की पोल खोलता है। ऐसे चरित्र एक ओर जनसभाओं में प्रगतिशीलता के झंडे गाड़ते हैं तो दूसरी ओर चोरी-चोरी राशिफल पढ़ते हैं और वास्तुदोष सुधारने के नाम पर घर की दर-ओ-दीवार तक बदलने से पीछे नहीं हटते, यहाँ तक कि लिबास का रंग भी 'वार' के अनुसार पहनने से नहीं चूकते। **'हम नहीं बदलेंगे'** लेख भी इसी झूठ की समस्या को लेकर हैं। **'बाप रे! एक महापुरुष के सौ करोड़ संताने'** एक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यंग्य है जिसमें भारतीय समाज की उस मानसिकता पर चोट हैं जिसमें सरकारी नौकरी के प्रति सीमाहीन लगाव हैं। 'सरकारी जँवाई को हर कोई अपना जँवाई बनाना चाहता हैं' कहकर लेखक ने दो तरफ मार की हैं। एक, सरकारी नौकरी पाकर व्यक्ति जनता का सेवक नहीं बल्कि जँवाई की तरह व्यवहार करता हैं तो दूसरे 'जॉब' सिक्योरिटी होने के कारण हर पिता अपनी पुत्री का भविष्य सरकारी नौकर में देखता हैं। यहाँ कई अन्य समस्याओं मसलन-जनसंख्या विस्फोट, धर्म और धर्म के नाम पर राजनीति करने वालों की भी अच्छी खबर ली गई हैं। **'क्या कहिए जवानी गुजर गई'** पढ़कर सिनेमा का वह गीत-'वो जवानी भी क्या जिसकी कोई कहानी न हो' याद हो आया। लेखक अपने डरपोक स्वभाव के कारण अपनी जवानी की कोई कहानी नहीं बना पाए जिसका उन्हें आज तक रंज हैं। **'लिफ्ट का इंतजार'** एक और महत्त्वपूर्ण व्यंग्य हैं जो तत्कालीन पद पर बैठते ही स्वयं को 'लाट साहब' घोषित कर देता है। यहाँ लेखक उरुग्वे के राष्ट्रपति का उदाहरण पेश करते हैं जो किसी भी सामान्य नागरिक को विपरीत परिस्थितियों में देख अपनी गाड़ी तक में लिफ्ट दे देते हैं जबकि हिन्दुस्तान में एक पार्षद स्वयं को उरुग्वे के राष्ट्रपति से ऊपर समझता हैं। वास्तव में यह हमारा मानसिक दिवालियापन ही हैं जिसके चलते 'उच्चता का भाव' हमारे अंदर कहीं गहरे जमा हैं और उससे बाहर आना हम लाज़मी नहीं समझते। **'मकान खरीद में बीवी बच्चे फ्री'** लेख भी तत्कालीन घटना से प्रेरित हैं। इस लेख में विज्ञापन की महिमा को अपरम्पार बताया हैं। हम सब कपड़े, गहने और अन्य घरेलू वस्तुओं की धमाका सेल से तो वाकिफ़ हैं, जो सामान्य हैं पर इंडोनेशिया में एक मोहतरमा ने स्वयं के लिए शादी का इश्तेहार इन्टरनेट पर दिया-'मकान खरीदने पर उसके साथ पत्नी और बच्चे फ्री मिलेंगे' वास्तव में लेखक यहाँ विज्ञापन क्षेत्र की कमजोरियों पर कुठाराघात करते हैं। बाजार की लीला साफ तौर पर यहाँ महसूस की जा सकती है। 'हम तो सिर्फ हम हैं' मैं लेखक अपनी एक्सक्लूसिव पर्सनेलिटी की चर्चा करते हैं तो **'संतजी करे सवाल'** में योग गुरु से व्यापार गुरु बने संत पर व्यंग्य हैं। यहाँ मुझे फिर एक फिल्मी गाना याद हो आया-'दुनिया करे सवाल तो हम क्या जवाब दें! वास्तव में दुनिया के सवालों का जवाब संतजी चाहते हुए दे सकते क्योंकि वे ऐसा करने लायक ही नहीं हैं। **'प्रभु की लीला प्रभु ही जाने'** में धर्म के भीरुपन से लेखक डरता दिखता हैं तो **'कोई लौटा दे मेरा बचपन'** लेख में लेखक नई पीढ़ी और अपनी पीढ़ी के बीच गहरी खाई को महसूसते हैं जो भाव, भाषा, रहन-सहन, खान-पान और खिलौनों तक बल्कि सोच को लेकर भी हैं। यहाँ लेखक सीधे शब्दों में गहरी बात तक कह जाते हैं। **'क्यों नहीं बोलूँ झूठ'** लेख आज झूठ की आवश्यकता पर बात करता हैं। ऑफिस में देर से आने और फिर झूठ का सहारा लेकर खुद को बचाने की कवायद हर सरकारी गैर सरकारी दफ्तरों में आम हैं। **'लबादे में रहने दो'** लेख आज की उस दिखावटी पीढ़ी पर व्यंग्य हैं जो होती कुछ और दिखाती कुछ है। हर व्यक्ति अपने चरित्र पर एक मुखौटा चढ़ा कर चलता हैं। कारण-'सहजता से कोसों दूर' रहकर हम स्वयं को विशिष्ट दिखाने की कोशिश करते हैं। 'पहचान का संकट' मित्र की इग्नोरेंस क्षमता की कहानी कहता हैं तो **'फेसबुक की सौगंध'**

जीवन में सोशल मीडिया की बढ़ती दखल-अंदाज़ी पर कटाक्ष है। लेखक ने अपने जीवन और आसपास के माहौल में पनपने वाले हर श्याम वर्ण को देखा और उस पर कटाक्ष किया। समाज में घर, परिवार, गाँव, शहर और देश तथा देश से बाहर तक की स्थितियों को झाँक कर देखते हैं और अपनी कलम की नोक को धार देने लगते हैं। 'आत्म व्यंग्य' इस संकलन की विशेषता बन पड़ी हैं। ऐसा कर बुलाकी शर्मा जी उन लोगों की बोलती बंद कर देते हैं जो व्यंग्यकारों पर आत्म-व्यंग्य न करने की तोहमत मढ़ते हैं।

संकलन के सभी व्यंग्य संक्षिप्त और स्वभाव से चुटीले होते हुए भी सरस हैं। वास्तव में बुलाकी शर्मा जी की शैली बात को सहजता से कह देने की है जिसे पाठक को समझने के लिए ज्यादा माथापच्ची या मस्तिष्क मंथन की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब वे किसी विसंगति पर चुटकी लेते हैं तो लगता है हमारे सामने ही उपस्थित है। सहज, सरस और जीवंत कथन शैली के कारण ही स्वर्गीय सुशील सिद्धार्थ जी ने उनके व्यंग्य-लेखों को 'बतरस' कहा है।

पाठक जब आलोच्य संकलन के पाठकीय अनुभव से गुजरता है तो उसे आभास होता है कि 'व्यंग्य' की धार मात्र लेखक की कलम की नोक पर ही नहीं है बल्कि वह लेखक की रगों में बहने वाले लहू में भी है। भाषा के रूप में हिन्दी-अंग्रेजी सहित राजस्थानी बोलियों का काफी प्रभाव है जो न केवल कहावतों या लोकोक्तियों में ही हैं बल्कि संवादों में भी झलकता है। 'सुखलाल' चरित्र बिलकुल ऐसे ही लगा जैसे सुभाष चंदर का कल्लू मामा या लालित्य ललित जी का पाण्डेय, जिनके माध्यम से लेखक अपनी बात आसानी से कह जाता है। पूरे संकलन में जो कमी खली वह 'विषय दोहराव' की रही। पढ़ते हुए लगा कि अमुक विषय को पूर्व में लिखे लेख में ही कह दिया गया था। इसके पीछे शायद व्यंग्य लेख का संक्षिप्त कलेवर हैं। मेरी ओर से वरिष्ठ व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा जी को ढेरों बधाई और शुभकामनाएँ।

समीक्षक : **डॉ. अनिता यादव**
6/10 3rd फ्लोर, इन्दिरा विकास कॉलोनी
मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मो: 8920225355

पगफेरौ

लेखक : छगनलाल व्यास, **प्रकाशक** : मनन प्रकाशन, खांडप, बाड़मेर, **संस्करण** : 2015, **पृष्ठ संख्या** : 112, **मूल्य** : ₹125

भाई छगनलाल व्यास रौ ओ चौथौ कांणी संगरै 'पगफेरौ' नाम सूँ सांमी आयो है। भाई व्यास राजस्थानी भासा रा चावा अर ठावा लिखारा है। ऐ आपरी कोरणी कलम सूँ जका चितराम कोरै उणमें आपरी माटी री सूरम तो आवै जकी आवै ही है। पण! इणरै सागै सागै ही समाज में आपरै आगती पागती जकी जकी घटै अर परोटीजै बीं अबखायाँ नैं भी आपरै चितरामाँ में उकैरण री चेस्टा करी है। हालांकि भाई व्यास आपरी काण्याँ में जिंण जिंण समाजू उठा पटक री बानग्याँ दरसाई है उणसूँ समाज रौ हर वरग नितू ही रू-ब-रू हुवंतौ रेवै। पण! इण सैंग नैं न्यारै न्यारै ढब सूँ न्यारी न्यारी सोच रै विगसाव रूप में दरसावंण नैं ही तो कळा री जरुरत हुवै, जकी आ पोथी पूरी करबा रौ जतन करै। भाई व्यास ईं पोथी री हरेक कांणी रै विगसाव री ओट में समाज में बात बात माथै जकी कवावंता, कथण, ओखाणां कैईजे उणरौ भी ठौड़ ठौड़ माथै सायरौ लियौ है, जकौ बीं कांणी नैं रसीली अर दरदीली बणा'र बात नैं कैवण रै ढब अर ढंग सूँ कैवण रौ जतन करयौ है। ओ ईं पोथी री काण्याँ रौ फुटरापौ है। भाई व्यास री ईं पोथी में कुल चवदै काण्याँ है। हरेक कांणी आपरै कथण नैं सांगोपाँग अठार अठार'र पूरौ करै। ईं पोथी री पैलड़ी कांणी है। **रगत**। धरती रै कोई भी जीव रौ बिना रगत जीणौ सँभै नँई हुय सकै। रोही रा जिंनावर का घर रै पाळतू पसुवाँ रै भी कीं दोराई सोराई हुवै जकी रगत री कमी बैसी का रगत में आयोड़ी गड़बड़ी रै कारण ही हुवै। आई सागण बात मानखै माथै लागू हुवै।

सभै समाज में आज हर क्षेत्र में विग्यान री पौंच बधगी है जिंणसूँ माँदगी रौ इलाज पूरौ पूरौ हुवै। पण! कैई पापड़ बैलणा पड़ै जद जा'र कठैई कोई बात बणै। पण! बणै तो अवस ही है। ईं कांणी में भी लिखारै रेखा रै मिस ही सही, बै सैंग बाताँ करी है जकी घर घर में बीतै।

एक गाँव एक देस नँई, सैंग ठौड़ाँ छळगारा छळ कर कर'र किंणतरै रा ऊँधा-पाधरा करै अर पाँगरै। ईं बात रौ खुलासौ **उणियारा** कांणी करै। समाज में कैई तरै री मानतावाँ जुग जुग सूँ घर करियोड़ी। कोई सधवा रै समेळे नैं चोखौ मानै तो कैई दूजी बात। **पगफेरौ** कांणी समाज री ईं सोच नैं ही सांमी राखै। समाज में लोग तरै तरै री बात करै। जितरा मुँढ़ा उतरी बात्याँ। कोई कीं केवै तो कोई कीं केवै तो कोई कीं। अठै तो लोग पाळै बेवतै नैं भी हँसै तो घोड़े माथै चढ़ियोड़ै नैं भी हँसे।

पगफैरो पोथी री आ मूळ कांणी विधवा ब्याँव जेड़ै असामाजिक अवरोधाँ माथै नुँवे जमाने रे नुँवै सोच अर बदळाव नैं सामीं राखै।

'हाथ पाणी' कांणी सीख अर दीठ देवै'क अबोध अर नाबालिग टाबराँ रा ब्याँव करणा किंणी भी दीठ अर विचार सूँ न्यावसंगत नँई है। कांणी में इणतरै रै ब्याँव री भुगत भोगी राम पियारी भुआ री बेटी जमना आपरै मूँढ़ै सूँ जिंण पीड़ावाँ नैं दरसावै बै घिरणा करण जैड़ी है। इणतरै रै काम नैं सारदा एक्ट रै मुजब अपराध मान्यौ है। जिंणमें ब्याँव कराबाळै पिण्डत नैं भी अपराधी मान'र सजा दैवण री बात है। कांणी में जद पिण्डत नै उणरी जोड़ायत ऐड़ै काम नैं नँई कराणै सारू समझावै तो बै आपरे हाथ में पाणी लै'र केवै'क आज सूँ म्हैं नाबालिग टाबराँ रा ब्याँव नँईं कराऊँला चावै कोई मुँह माँगी दिखणा दैवण रौ लालच भी देवै। कांणी में पांणी, परयावरण, शिक्षा आद रै मैतब नै भी बतायौ है जकौ हर दीठ सूँ ओपतौ अर सरावण जोगौ काम है। समाज सुधार री बाताँ व सीख आज री जरुरत है। एक छोरी बहू बण'र सासरै जावै तो उणनै किंण किंण तरै रै अभावाँ अर अबखायाँ सूँ रू-ब-रू हुवणौ पड़ै ईं बात नैं बा छोरी ही बताय सकै जकी भुगते। **गोमती** कांणी ऐड़ी पीड़ावाँ नैं ही उजासै। सासरै में सासरिये परिवार में सासू, नणद, देवर, देवराणी, जेठ, जेठाणी, आद, जद, जेठाणी जाद रै सुभाव अर बुवार रौ पूरौ पूरौ विरतांत गोमती आपबीती में बतावै। समाज में ईं कांणी री गोमती सासरै रै जिंण

जथारथ नैं उजगारै बै आज भी लाधै। घणौ फुटरापौ भी गत बिगाड़ै। क्यूं'क म्हासूँ गोरौ हुवै जकै जैं पीळियै रो रोग बतावै। कांणी **फुटरापौ** री जसोदा री गत भी इणतरै ही बिगड़ै। **कांणी मां री बात भारत माता माथै कथियौड़ी है।** कांणी **मिनखजात** आज रै जुग रै साँच नैं सांमी राखता बे सैंग अबखाया बतावै जकी मिनखजात ने डांगरां री जूँण जीवण खातर मजबूर करै। कांणी आपरौ धरम निभावै, पण मिनखजात रै मिनखपणै नै मिनख आंख्याँ फाड्या तरसै ही है। वा'रै मिनख थारी मिनखजात नैं तूँ ही लजावै जद'क थारै जलम रै सागै तनै थारी जूँण रै धरम री ठौड़-ठौड़ शिक्षा दैई जावै। पण! अफसोस'क तूँ थारै धरम सूं नितूकौ डिगतौ ही डिगतौ जावै। जिंणसू मिनखजात अर मिनखपणा सरमावै।

इणतरै भाई छगनलाल व्यास आपरै इण कांणी संगरै में चवदै काण्याँ सूँ समाज रै माँयनै जिंणतरै रौ समाजू, राजनैतिक, भिस्टाचार, व्यभिचार, कुरीति चलण, शिक्षा, परियावरण, देस री दुरदसा आद रै कारणाँ नैं परोटतै जका चितराम, चितरण कोरया है साव ही साँचा अर मूँढ़ै बोलता है। लिखारै रौ सोच अर परियास सरावंण जोगौ है। म्हैं दीठ नैं थूथकौ न्हाखूँ।

समीक्षक : **रामजीवण सारस्वत**

एफ-93, शिवँकर विहार, मुरलीधर व्यास नगर, जैसलमेर रोड, बीकानेर- 334004 (राज.)
मो: 9460078624

संजोग

लेखक : ओम प्रकाश तंवर **प्रकाशक** : आई. एस.डी.ई.एस.आर. संस्थान, बालिका महाविद्यालय के पीछे, चूरू-331001, **संस्करण** : 2018 **पृष्ठ** : 98 **मूल्य** : ₹ 150

लोक साहित्य के रंगों में जिस विधा ने सबसे अधिक प्रभाव जमाया है, वह है कहानी विधा। अपने परिवेश के अनुभवों को शब्दों का जामा पहनाते हुए जब कहानीकार कहानी लेखन करता है, तो वस्तुतः वह उस अनुभव को जी रहा होता है। इसी क्रम में राजस्थानी कहानी शृँखला में श्री ओम प्रकाश तँवर का संजोग कहानी संग्रह भी एक उल्लेखनीय योगदान है।

श्री ओम प्रकाश तँवर के **संजोग** कहानी संग्रह में कुल तीस कहानियाँ हैं जिनमें लेखक ने स्वार्थपूर्ण सामाजिक व्यवहार, जीव दया, सामाजिक विद्रूपता, संगत का प्रभाव, कार्याधिक्य का प्रभाव, नेक मार्ग का अनुसरण, जीवन-मूल्यों की शिक्षा, धार्मिक आस्था, पुनर्जन्म आदि विषयों को कहानी का आधार बनाया है। इस संग्रह का नामकरण भी इसमें संकलित इसी नाम की एक कहानी के नाम पर किया गया है। 'संजोग' नामक कहानी में लेखक ने आज की एक प्रमुख सामाजिक समस्या विवाह-शादी को लेकर विकृत हो रही सामाजिक सोच को उजागर करने का प्रयत्न किया है। यथार्थोन्मुखी इस कहानी में लेखक ने दहेज की माँग को लेकर वर द्वारा शादी से इनकार करने पर उसे नकारते हुए अन्य स्थान पर रिश्ता करने और ऐसे लोगों को नकारने की सीख दी है। निश्चय ही यह कहानी विवाह-विमर्श एवं सामाजिक जागरुकता की एक सशक्त कहानी है और इसके अनुरूप संग्रह का नामकरण किया जाना उचित ही है।

इसके अतिरिक्त संजोग की हक री माँग, तन सूं अधूरो-मन सूं पूरो, बिझोक, सलटावो, आजादी आई, काण-कायदो आदि कहानियाँ पाठक को बाँधकर रखने वाली व संदेश देने वाली कहानियाँ है तो संगत का असर, मतलब री मनुवार, बड़ै भात रो जीमण और के माँगै, गगनराम गपोड़ आदि कहानियाँ सामान्य मनोरंजन करने वाली हैं। कहीं-कहीं लेखक की कलम से कहानी के बहाने रेखाचित्र या भावचित्र का परिचय भी मिलता है। संजोग की कहानियों में चांदा भुवा, पेसरो भायो आदि कहानियों में कहानी से ज्यादा रेखाचित्र विधा के दर्शन होते हैं।

यद्यपि श्री ओम प्रकाश तँवर का राजस्थानी भाषा में लेखन का यह प्रथम प्रयास है, तथापि आपकी भाषा प्रवाह के अनुकूल है तथा स्वाभाविकता का गुण लिए हुए है। संग्रह की कहानियों को पढ़ने से ऐसा नहीं लगता कि यह उनका प्रथम प्रयास है, बल्कि उनकी कहानियाँ एक अनुभवी लेखक होने का परिचय देती हुई-सी प्रतीत होती हैं। शब्दों का चयन भावों के अनुकूल होने से कहानियों में स्वाभाविकता का असर देखा जा सकता है। कहानियों में वर्णित घटनाक्रम हमारे आसपास में हर किसी के साथ यदा कदा घटित होता ही रहता है। हरेक कहानी अपने आसपास के परिवेश को जोड़ते हुए किसी न किसी के साथ घटित यथार्थ का परिचय देते हुए पाठक को उसके जीवन के अनुभवों से जोड़कर समरसता पैदा करती है। देशकाल और वातावरण का स्वाभाविक चित्रण संजोग में देखा जा सकता है।

पात्र और संवाद कहानी विधा के लिए सबसे ज्यादा प्रभावी तत्व होते हैं। इस दृष्टि से 'संजोग' कहानी संग्रह की सभी कहानियों के पात्र सजीव और जीवन्त बन पड़े हैं। उदाहरण के लिए 'हक री मांग' कहानी के पात्र बाल मनोविज्ञान के अनुरूप भोळू बैल, झबरू कुत्ता, धीरू ऊँट, चतरू घोड़ा आदि कहानी को सजीवता प्रदान कर रहे हैं तो 'तन सूं अधूरो, मन सूं पूरो' कहानी का पात्र गणपत, पेसरो भायो का परमेश्वर, चांदा भुवा कहानी की चांदा आदि पाठक के मन पर प्रभाव छोड़ते हुए उसके अनुभूत सामाजिक यथार्थ के साथ जुड़कर कहानी को सार्थक बनाते हैं। पात्रों के साथ-साथ ही संवाद भी कहानी विधा की नींव की ईंट होते हैं। श्री ओम प्रकाश तँवर इस दृष्टि से साधुवाद के पात्र हैं कि आपने लगभग सभी कहानियों में सरस और प्रवाहपूर्ण शैली का प्रयोग करते हुए प्रभावशाली संवाद रचे हैं। लगभग सभी कहानियों से संवादों में बोलचाल की भाषा और पात्रानुकूल संवाद योजना लागू करने से कहानी पाठक के अन्तर्मन को छूती है।

कहानी के लिए कथानक का होना उतना ही आवश्यक है जितना किसी भवन के निर्माण के लिए निर्माण सामग्री का होना। कथानक ही वह तत्व है जिसके इर्द-गिर्द कहानी का ताना-बाना बुना जाता है। अगर ताना-बाना कमजोर हो तो उसकी बणगट का असर उससे बनने वाली रचना पर अवश्य पड़ता है। संजोग की कहानियों में यह तत्व अवश्य कुछ सुधार की अपेक्षा रखता

है। उदाहरण के लिए संजोग कहानी में हेमाराम का कथन कि ''म्हारो तो पिण्ड छूटग्यो। अबै थे जाणोर अै जाणै। आनै थे बरी करो या जेळ में नाखो, म्हांनै ईं सूं कोई लेणो देणो नीं।'' इतणो कैर थाणेदार नैं हाथ जोड़र हेमाराम आपरै घरां बड़ग्यो। यहाँ एक तरफ लेखक ने जहाँ दहेज की माँग करने वाले लोगों के विरुद्ध आवाज उठाने की बात कही है, वहीं दूसरी तरफ इस कथन के द्वारा यह सिद्ध हो रहा है कि उसे केवल अपने काम होने से ही मतलब था, ऐसे अन्याय करने वालों को सजा मिले, रोक लगे या और कई समाधान का मार्ग निकले इससे उसे कोई मतलब नहीं। यहाँ लेखक ने जैसा अनुभव किया वैसा ही अपनी कहानी में लिखा है। समाज में आमजन की यही धारणा रहती है कि चलो अपना काम निकल गया तो क्यों किसी के लिए परेशानी का कारण बनें। यहाँ लेखक चाहते तो सामाजिक उदासीनता को अपनी कहानी में स्थान दे सकते थे। कथानक में चरमोत्कर्ष बिन्दु की पहिचान कर उसे पाठक के मनोभावों के अनुरूप ढालकर प्रस्तुत करना ही कहानी का उद्देश्य तथा कहानी लेखक की सफलता होता है।

श्री ओम प्रकाश तँवर का कहानी संग्रह 'संजोग' राजस्थानी साहित्य जगत् के लिए एक सुखद अनुभूति देने वाला कृत्य है। आपने इस संग्रह में वर्तमान में तेजी से खो रहे सामाजिक-मानवीय मूल्यों को बचाने, दैवीय गुणों को बचाकर सद्मानव बनने की सीख, अतीत के खोये मूल्यों के संरक्षण तथा वर्तमान के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण के जुड़ने जैसे विषयों को कहानी विधा के रूप प्रस्तुतकर श्लाघनीय कार्य किया है। वस्तुतः श्री तँवर का अँग्रेजी भाषा से लम्बा जुड़ाव होने के बावजूद भी राजस्थानी भाषा में और वह भी गद्य लेखन के रूप में कहानी संग्रह की भेंट देना भी अपने आप में एक संजोग ही है। लेखक का प्रथम प्रयास स्तुत्य है एवं कहानियाँ पठनीय है। निश्चय ही श्री तँवर के कहानी संगह को साहित्यानुरागियों द्वारा सराहा जाएगा।

समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
प्रधानाचार्य, राजकीय आदर्श उ. मा. विद्यालय
जिगसाना ताल, तह. तारानगर (जिला-चूरू)
मो. 9413888209

डॉ. जीवन चन्द्र जैन एक विभूति के जीवन की काव्यमय प्रस्तुति

रचनाकार : टेकचन्द्र शर्मा **प्रकाशन** : जे.जे.टी. विश्वविद्यालय ज्ञान नगरी, चूड़ैला (झुंझुनूं) **मूल्य** : ₹ 200

डॉ. जीवन चन्द्र जैन के जीवन की काव्यमय प्रस्तुति प्रस्तुत करने वाले शिक्षाविद् टेकचन्द्र शर्मा शिक्षा विभाग के जाने माने हस्ताक्षर हैं। शिविरा के नियमित पाठक व लेखक हैं।

पढ़ना और लिखना उनका शौक है, जानी मानी हस्ती डॉ. जीवन चन्द्र जैन, जो सेवा की प्रतिमूर्ति हैं, उन पर कलम चलाकर आपने समाज तक एक संदेश पहुँचाने में सफलता हासिल की है। सेवाव्रतधारी मानव ही ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है और ऐसे महान व्यक्तिव पर कलम चलाना स्तुत्य प्रयास है।

पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में स्वयं रचनाकार ने उनके जीवन को काव्य शैली में प्रस्तुत किया है। जो श्रमसाध्य कार्य है। गद्य शैली में तो डॉ. जैन के बारे में पूर्व में भी लिखा गया है, किन्तु रोचक मनोरंजक प्रस्तुति का यह काव्यमय प्रथम प्रयास ही कहा जा सकता है। रोचकता ऐसी कि एक बार प्रारम्भ करने पर पाठक इसको पूरा पढ़ने के लिये मजबूर हो जाता है और बिना पढ़े इसको छोड़ ही नहीं सकता। यही रचनाकार की सफलता मानी जाती है कि उसकी कृति को लोग ध्यान से मनोयोग से पढ़ें। इसमें शर्मा पूर्णरूपेण सफल हुए हैं। दोहा पद्धति में पुस्तक लिखी गई है कहीं भी छंद भंग या प्रवाह का अभाव नज़र नहीं आता।

पुस्तक में इससे पूर्व झुंझुनूं एवं वैश्विक स्तर के गणमान्य व लायन्स क्लब के श्रेष्ठतम व उच्चतम व्यक्तियों के शुभ संदेश भी सम्मिलित हैं। मुख्य पृष्ठ पर डॉ. जैन का भव्य व सुन्दर चित्र विनम्रता पूर्ण हाथ जोड़े दिया गया है। बीच-बीच में डॉ. जैन के पारिवारिक परिजनों व व्यक्तियों के साथ उनके रंगीन चित्र पुस्तक को चार चाँद लगाते हैं।

उनकी योग्यता प्रौन्नति व उन्हें कीर्ति के शिखर पर पहुँचाने वाली उनकी जीवन संगिनी श्रीमती कुन्दन बाला का हद से ज्यादा योगदान रहा है। उनका मधुर स्वभाव व मिष्ट वाणी रोगी को आधा तो वैसे ही स्वस्थ कर देती थी। कुन्दन बाला ट्रस्ट की स्थापना व हर वर्ष पुण्य कमाई का बड़ा भाग उनके जन्मदिन व पुण्यतिथि पर दानदक्षिणा में खर्च करना डॉ. साहब का वैशिष्ट्य है। मात्र पाँच दस रुपए में रोगी को देखना कम से कम दवा लिखना और अस्सी वर्ष से अधिक होने पर भी सर्जन कार्य चीर फाड़ ऑपरेशन करना आपकी पहिचान है।

हर रविवार को पंसारी हॉस्पिटल में निःशुल्क सेवा देते हैं। ये सब काव्य शैली में आप इस पुस्तक में पाएँगे। दूसरे भाग में शेखावाटी व झुंझुनूं जिले के कवि, रचनाकार साहित्यकारों की कविताएँ उनके (डॉ. जीवन चन्द्र जैन) बारे में पूर्ण प्रकाश डालती हैं। झुंझुनूं जिले के गणमान्य व प्रसिद्ध साहित्यकारों ने अपनी कविताओं में उनके विशिष्ट गुणों का वर्णन किया है। उनका रसास्वादन तो आप पाठक स्वयं ही पढ़कर कर सकते हैं। लिखने मात्र से काम चलने वाला नहीं है। झुंझुनूं जिले के प्रसिद्ध व विख्यात कविवर डॉ. उदयवीर शर्मा बिसाऊ, खुर्शीद झुंझुनूं, सुधाकर श्रीवास्तव नवलगढ़, हिन्दी व राजस्थानी के प्रख्यात कवि लियाकत अली खाँ, भावुक भीमसर भागीरथ सिंह 'भाग्य' बगड़, सुरेश कुमार गोदू का बास (मण्डावा), डॉ. एल. के. शर्मा 'कान्त' (चिड़ावा), कासिम अली चौपदार झुंझुनूं, सुलेमान खान रहबर झुंझुनूं, डॉ. विद्या पुरोहित झुंझुनूं, एडवोकेट सुशील कुमार झुंझुनूं, बी. एल. सावन झुंझुनूं, राज कुमार सिंह 'राज' पिलानी, परमेश्वर हलवाई लाइन्स क्लब झुंझुनूं एवं टेकचन्द्र शर्मा ने पुस्तक को अपनी भव्य रचनाओं से मनोहारी बना दिया है।

प्राक्कथन जे.जे.टी. विश्वविद्यालय चूड़ैला के कुलपति विनोद कुमार टीबड़ेवाला ने लिखा है।

समीक्षक : **श्रीमती इरम खान**
वरिष्ठ अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
इस्लामपुर (झुंझुनूं) पिन- 333024
मो. 9784315982

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

बाड़मेर के चार रोवर गुजरात भ्रमण हेतु चयन

भारत स्काउट व गाइड राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली के मार्गदर्शनानुसार राजस्थान मुख्यालय जयपुर द्वारा 21 से 25 मार्च को पाँच दिवसीय ग्रामीण रोवर/रेंजर भारत दर्शन शिविर आयोजित किया गया है जिसमें बाड़मेर जिले से कुल 4 ग्रामीण रोवर का चयन राज्य स्तर पर हुआ। इस बार इन्हें गुजरात राज्य के प्रमुख सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्त्व के स्थलों का भ्रमण करवाया जाएगा। स्थानीय संघ सिणधरी सचिव दूदाराम चौधरी ने बताया कि इन चयनित चारों रोवर रेंजर को गर्मजोशी के साथ रवाना किया और सुखद यात्रा की कामना की। इस दौरान स्काउटर सर्वश्री पाबूराम चौधरी, गोरधनराम चौधरी, दीपाराम, रोवर भटूटराम, मोनिका चारण एवं रेंजर रेखा समेत कई लोग उपस्थित थे।

व्यक्तित्व विकास एवं अभिव्यक्ति शिविर सम्पन्न

कोटा। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के तत्वावधान में स्थानीय शिव ज्योति इन्टरनेशल स्कूल, चैनपुर कोटा में कोटा संभाग के कक्षा 10 व प्रवेशिका परीक्षा-2017 में अपने अपने जिलों में टॉप 20 जिलों में टॉप-20 स्थानों पर रहे प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए 'व्यक्तित्व विकास एवं अभिव्यक्ति उन्नयन शिविर' का आयोजन किया। जिसके समापन समारोह में मुख्य अतिथि उपनिदेशक प्रारम्भिक शिक्षा कोटा श्रीमती दुर्गा सुखवाल, अध्यक्षता सहायक निदेशक मा.शि. श्री अजीत लुहाड़िया तथा विशिष्ट अतिथि शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी कोटा संभाग श्री नवल किशोर ने कहा कि बोर्ड सभी संभागों में शिविर आयोजन कर व्यक्तित्व विकास के लिए चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों का कार्य करने वाली देश में एक मात्र संस्था है।

शिविर प्रभारी श्री अशोक गुप्ता ने 10-15 मई, 2018 तक आयोजित शिविर का प्रतिवेदन रखते हुए बताया कि विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों एवं समय प्रबन्धन, सृजनात्मक गतिविधियाँ, खेलकूद, योगाभ्यास, साक्षात्कार प्रक्रियाओं आदि सामाजिक सरोकारों पर विशेषज्ञों द्वारा जीवनोपयोगी जानकारी उपलब्ध करवाई। चम्बल फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स लि.,गढ़ेपान फेक्ट्री का शैक्षिक भ्रमण भी करवाया गया। कार्यक्रम 'मजलिस' के दौरान सर्वश्री मुकुट मणिराज, शरद तैलंग,हनीफ आयना व अतुल चतुर्वेदी ने काव्य पाठ किया। शिविर में डॉ. राजेन्द्र बैरागी ने पेन्टिंग, श्रीमती कविता गुप्ता ने कैरियर गाइडेन्स, श्री भगवती प्रसाद गौतम ने लेखन कौशल, डॉ. कुलवन्त गौड़ ने अंगदान, श्रीमती अनिता विजय ने देहदान, श्री महेन्द्र गौड़ ने खेलकूद, श्रीमती मधु शर्मा ने योगाभ्यास एवं श्री राजेन्द्र राव ने संगीत कला पर विशेष वार्ताएँ देकर शिविर को बहूपयोगी बनाने में सराहनीय योगदान दिया। अन्त में अतिथियों द्वारा सभी प्रशिक्षकों एवं संभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन पुरुषोत्तम शर्मा ने किया।

जल मन्दिर का लोकार्पण व भूमि समतलीकरण

उदयपुर,(भीण्डर)। सुभाष जयन्ती के पावन अवसर पर रा.बा.उ.मा.वि. भीण्डर, उदयपुर में नगर की ख्यातनाम स्वयंसेवी संस्था 'स्वामी विवेकानन्द परिषद्' द्वारा तकरीबन तीन लाख रुपये की लागत से स्वामी विवेकानन्द जल मन्दिर बनवाया गया तथा परिषद् की प्रेरणा से मैसनरी स्टोन माइन्स एण्ड केशन समिति भीण्डर द्वारा 1 लाख रुपये की लागत का शुद्ध पेयजल के लिए आर.ओ. प्लॉन्ट भी लगवाया गया।

जिसका लोकार्पण समारोह श्रीमान् भरत मेहता, शिक्षा उपनिदेशक (मा.शि.) उदयपुर मण्डल के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमान शिवजी गौड़ शिक्षा उपनिदेशक (प्रा.शि.) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आयोज्य लोकार्पण समारोह में मुख्य वक्ता श्री सुरेन्द्रसिंह राव सहायक उपनिदेशक (मा.शि.), उदयपुर मण्डल रहे तथा श्री परमेश्वर श्रीमाली सहायक उपनिदेशक प्रा.शि., राज्यस्तरीय भामाशाह से पुरस्कृत श्री सुखलाल साहू, श्री हातिम अली बोहरा, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री अब्बल अली बोहरा, श्री भंवरलाल पचोरी, श्री पंकज गंगावत, श्री महावीर वया, श्री रतन लाल स्वर्णकार, स्वामी विवेकानन्द परिषद के संरक्षक श्री प्रकाश वया, अध्यक्ष श्री खोजेमा बोहरा, सचिव श्री प्रकाश कुदाल व श्री जयप्रकाश जैन आदि उपस्थित रहे।

विद्यालय की संस्थाप्रधान श्रीमती आशा शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा विद्यालय में संचालित गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विद्यालय परिवार द्वारा भामाशाहों को शॉल, मोठड़ा और प्रतीक चिह्न से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि भामाशाह श्री साहू द्वारा लगभग 7 बीघा जमीन का खेल मैदान हेतु समतलीकरण का कार्य जारी है। सानिवि. अभियन्ता के अनुसार इस कार्य में लगभग 10 लाख रुपये का व्यय होने का अनुमान है। श्री साहू ने इस खेल मैदान में वृक्षारोपण कराने की भी घोषणा की। मुख्य अतिथि श्री मेहता ने दान और सेवा के महत्त्व को मानव का उदात्त जीवन मूल्य बताया। मुख्यवक्ता श्री राव ने कहा कि महापुरुष आज भी प्रासंगिक होकर राष्ट्रतत्व के प्राण है। उपनिदेशक (प्रा.शि.) श्री गौड़ ने भामाशाहों की प्रशंसा करते हुए कहा कि विद्यालयों के लिए इनके द्वारा किया गया अवदान स्तुत्य और श्लाघनीय है। कार्यक्रम का संचालन कुण्डई के प्रधानाचार्य श्री पंकज वया ने बखूबी किया।

ग्रीष्मकालीन महोत्सव में सरकारी योजनाओं की जानकारी

अलवर (बहरोड़) शाहजहांपुर। कस्बे के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में 07 मई 2018 को ग्रीष्मकालीन महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों ने प्रधानाचार्य श्री विनोद कुमार शर्मा की अध्यक्षता में कस्बे में जनचेतना रैली का आयोजन किया। श्री शर्मा के

रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करने के पश्चात रैली ग्राम पंचायत शाहजहांपुर के मुख्य बाजार, पुराना बस स्टैण्ड एवं अन्य क्षेत्रों में से गुजरी। इस दौरान विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकाओं द्वारा ग्रामीणों एवं जनप्रतिनिधियों को सरकारी विद्यालयों में मौजूद सुविधाएँ एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम के दौरान नवागंतुक छात्र-छात्राओं का विद्यालय परिवार द्वारा स्वागत किया गया। संचालन व्याख्याता श्री सुनील यादव ने किया। सर्वश्री रामवतार यादव, धर्मपाल मीणा, गिरिराज यादव, पृथ्वीसिंह, महेश यादव, सुरेन्द्र एवं सर्व श्रीमती सरोज यादव, सुषमा शर्मा, वंदना मीणा, सावित्री साई, पुष्पा यादव व स्मृति प्रकाश आदि मौजूद रहे।

सड़क सुरक्षा निबन्ध प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर मोनिका प्रथम

राजसमन्द (कुंभलगढ़)। महाराणा कुम्भा रा.उ.मा.वि. केलवाड़ा, जिला राजसमंद में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित 'सड़क सुरक्षा निबन्ध प्रतियोगिता' में स्कूल की छात्रा मोनिका प्रजापत के प्रथम आने पर संस्थाप्रधान श्री मोहनलाल बलाई ने अभिनन्दन कर उत्साहवर्धन किया। प्रभारी श्री सत्यनारायण नागौरी ने बताया कि 29 वाँ राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह के तहत 23 अप्रेल को सड़क परिवन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से विज्ञान भवन नई दिल्ली में परिवहन मंत्री माननीय श्री नितिन गड़करी ने सड़क सुरक्षा पर निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर छात्रा मोनिका प्रजापत को प्रथम पुरस्कार के रूप में 20,000 रुपये एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर स्टाफ सहित विद्यालय परिवार व ग्रामीणों ने भी हर्ष व्यक्त किया।

प्रधानाचार्य कक्ष का लोकार्पण

बीकानेर। लूणकरणसर के निकटवर्ती गाँव आडसर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में भामाशाह राधेश्याम डूढाणी द्वारा नव निर्मित प्रधानाचार्य कक्ष का लोकार्पण महंत मोहनदास एवं श्री रवि शेखर द्वारा किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री रवि शेखर मेघवाल ने शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि शिक्षा प्राप्त व्यक्ति संस्कारवान समाज और देश का निर्माण कर सकता है। मंहत मोहनदास ने भामाशाह राधेश्याम डूढ़ाणी के योगदान पर उन्हें शिक्षा का सच्चा हितेशी बताया। शाला प्रधानाचार्य श्री रामजीलाल घोड़ेला ने सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भामाशाहों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान से नव संस्कृति का उत्थान होगा। इस अवसर पर डूढ़ाणी परिवार के भामाशाहों का सम्मान किया तथा कालू प्रधानाचार्य श्री ताराचंद भुवाल, नाजिमा अजीज, गारबदेसर प्रधानाचार्य श्री मांगीलाल स्वामी, कालू सरपंच श्री हजारीमल सारस्वत, लूणकरणसर सरपंच श्री रफीक मालावत, श्री प्रभूदयाल सारस्वत, श्री जेथनाथ, श्री रेवंत दास स्वामी, श्री मेघनाथ, श्री रामकुमार सारस्वत, श्री शिवराज संस्कर्ता आदि ने विचार रखे। शाला स्टाफ सर्वश्री ओंकार मल राघानी, नन्दलाल प्रजापत, अजय कुमार पारीक, रामलाल नाथ, शिवकुमार व धीरज बिश्नोई ने सभी को धन्यवाद दिया।

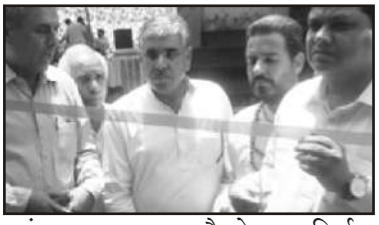

दण्डी की छात्र-छात्राओं को लेपटॉप मिला

बीकानेर (छत्तरगढ़)। स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दण्डी की कक्षा 8वीं बोर्ड सत्र-2016-17 के छात्र राजेश व छात्रा ममता कंवर को दिनांक-30 मई, 2018 को लेपटॉप मिला। लेपटॉप मिलने के अवसर पर शाला प्रांगण में प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया तथा आयोजित समारोह में ग्रामीणों, अभिभावकों एवं समस्त शाला परिवार ने भाग लेकर राजेश और ममता को शुभकामनाएँ देकर जीवन में और अधिक मेहनत करने की सीख दी। अध्यापक श्री सत्यनारायण जीनगर ने संचालन किया।

अपनी शादी के आशीर्वाद समारोह में किया प्रधानाध्यापक ने सपत्नीक पौधारोपण

अजमेर जिले से सटे गाँव आनंदीपुरा में कार्यरत प्रधानाध्यापक साँवर लाल बैरवा ने अपनी शादी के आशीर्वाद समारोह में पौधे लगा कर अनुकरणीय कार्य किया जिसमें अजमेर के उपजिला प्रमुख सहित कई जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों-कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री बैरवा व श्रीमती मनफूल बैरवा (नव दम्पती) ने पौधारोपण कर अपनी शादी को 'ग्रीन शादी' का रूप देकर अनूठी मिशाल कायम की। श्री बैरवा ने अपनी शादी के निमंत्रण पत्रों में भी पेड़ लगाने, बेटी बचाने-बेटी पढ़ाने का संदेश प्रमुखता से छपवाकर अनूठी मिशाल कायम की, जिसका स्वागत किया गया। श्री बैरवा ने बिना दहेज के साधारण परिवार में शादी कर अपनी सरलता का परिचय दिया।

इस कार्यक्रम में अजमेर के उपजिला प्रमुख श्री टीकम चन्द चौधरी, डी.आर. श्री गिरधारी लाल गुर्जर, गुलाबपुरा नगरपालिका चेयरमैन श्री धनराज गुर्जर, राज्यस्तर पर पुरस्कृत श्री रामगोपाल बैरवा प्राध्यापक, भीलवाड़ा डेयरी के चैयरमेन श्री रामलाल जाट, हुरडा पं. स. के प्रधान श्रीमती घीसी देवी, उप प्रधान श्री मधुसुदन पारीक, आसींद के पूर्व विधायक श्री हगामीलाल मेवाड़ा सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी आदि भयानक आँधी-तूफान में भी आशीर्वाद देने एवं पौधारोपणार्थ शामिल हुए।

संकलन- प्रकाशन सहायक

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

ज्यादा टीवी. देखने से कैंसर का खतरा

लंदन– एक अध्ययन में कहा गया है कि चार घंटे से अधिक समय तक टीवी. देखने वाले पुरुषों को आँतों का कैंसर होने की आशंका अधिक होती है। यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, इम्पीरियल कॉलेज लंदन और यूएन. इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर के शोध में बताया कि ऐसे पुरुषों को आँतों का कैंसर होने की आशंका 35 फीसदी तक अधिक रहती है।

साभार– हिन्दुस्तान 11 फरवरी, 2018

सुरक्षित यात्रा के लिए एप बनाया

वर्जीनिया– अमेरिका में सुनसान रास्ते से घर लौटते समय सुरक्षित रहने के लिए भारतवंशी छात्रा मेघा गुप्ता ने 'सेफ ट्रेवल' एप तैयार किया है, जो विपरीत परिस्थितियों में महिलाओं के घर वालों को अलर्ट भेज देता है। मेघा गुप्ता वर्जीनिया स्टेट के हर्नडोन में रहती है। वह हर दिन स्कूल से घर लौटते वक्त 20 मिनट का सफर सुनसान रास्ते पर चलकर तय करती है। हाई स्कूल में साइंस और टेक्नोलॉजी विषय पढ़ने वाली मेघा को एपल के आईओएस. सिस्टम के लिए एप बनाने वाली प्रतियोगिता में विजेता भी घोषित किया गया।

साभार– हिन्दुस्तान 12 फरवरी, 2018

कॉमनवेल्थ में 2 कैटेगरी में गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय वेटलिफ्टर बनी संजीता चानू तथा सबसे युवा वेटलिफ्टर बने दीपक लाठर

गोल्ड कोस्ट: कॉमनवेल्थ गेम्स के दूसरे दिन 24 साल की वेटलिफ्टर संजीता चानू ने 53 किग्रा. कैटेगरी में गोल्ड दिलाया। संजीता चानू ने कुल 192 किलो वजन उठाया। वो कॉमनवेल्थ में 2 कैटेगरी में गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय वेटलिफ्टर बन गई हैं। संजीता ने ग्लास्गो में 48 किग्रा. वर्ग में गोल्ड जीता था। कम उम्र में कॉमनवेल्थ मेडल जीतने वाले भारतीय वेटलिफ्टर बने दीपक लाठर ने 69 किग्रा. वर्ग में ब्रॉन्ज जीता। 18 साल के दीपक कॉमनवेल्थ गेम्स में मेडल जीतने वाले देश के सबसे युवा वेटलिफ्टर बन गए हैं।

साभार : दैनिक भास्कर 7 अप्रेल, 2018

फुटपाथ पर बैठी बच्ची ने कहा- मुझे भी पढ़ाओगी क्या? उसके बाद से अब तक 15 साल में 4500 बच्चों को मुफ्त पढ़ा चुकी : स्मिता बेन देसाई

सूरत: 61 साल की स्मिता बेन देसाई 15 साल से बच्चों को मुफ्त में पढ़ा रही हैं। अब तक वह करीब 4500 बच्चों को मुफ्त में पढ़ा चुकी हैं। उनके पढ़ाए बच्चे सीए., डॉक्टर और इंजीनियर तक हैं। स्मिता बेन का कहना है कि जो शिक्षा मिली है, वह समाज का कर्ज़ है। इसी कर्ज़ को मुफ्त में पढ़ाकर उतार रही हूँ। वह जीवन भारती स्कूल में शिक्षिका थीं। कुछ बच्चे उनके पास मुफ्त में ट्यूशन पढ़ने आया करते थे। एक दिन वह स्कूल जा रही थी, तो फुटपाथ पर बैठी एक बच्ची ने कहा, 'आप पढ़ाती हैं, मुझे भी पढ़ाएँगी क्या?' उसके बाद स्मिता बेन ने उस बच्ची को अपने घर पढ़ाना शुरू कर दिया। स्मिता बेन जब सूरत आई थी, तो उनके पास रहने को घर नहीं था, लेकिन गरीब बच्चों की शिक्षा की चिंता थी। उन्होंने सड़क पर बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। बच्चों से कहा कि वे अपनी पहचान के बच्चों को लाएँ। 2015 में स्मिता बेन के काम से प्रभावित होकर उमेश भाई पटेल ने उन्हें अपना घर दे दिया।

साभार : दैनिक भास्कर 3 अप्रैल, 2018

बिजली पैदा करने वाला बॉयो टॉयलेट बनाया

कोलकाता: आईआईटी. खड़गपुर ने ऐसा बॉयोटॉयलेट बनाया है जिसके फ्लशटैंक की क्षमता 500 लीटर पानी के भंडारण की है। यानि एक बार पानी भरने के बाद इसे कम से कम 15 साल तक इस्तेमाल किया जा सकता है। इस मॉडल को पीएम. स्वच्छ भारत अवार्ड दिया गया है। एनटीपीसी. ने गाँवों के लिए यह टॉयलेट बनवाया है। इसमें माइक्रोबायल फ्यूल सेल रिएक्टर लगे हैं जो पानी को रिसाइकिल करेंगे। सेप्टिक टैंक में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक बैक्टीरिया लगा है जो मानव मल से बिजली पैदा करेगा। परियोजना प्रमुख एम. घांघरेकर ने बताया कि इस टॉयलेट की बिजली से मोबाइल आसानी से चार्ज हो सकेगा।

साभार : राजस्थान पत्रिका, 3 अप्रेल, 2018

भारतीय डाक पेमेंट बैंक ने अप्रैल से काम शुरू किया

मुंबई: इंडियन पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी.) एयरटेल और पेटीएम. के बाद तीसरा ऐसा पेमेंट बैंक होगा जो अप्रैल से पूरी तरह से काम शुरू कर दिया। इस बैंक की सेवाएँ देश के सभी 1.55 लाख डाकघरों में ली जा सकेगी। इसके लिए आईपीपीबी. की 650 शाखा का नेटवर्क काम करेगा। भारतीय पोस्ट के मुताबिक इस सेवा के विस्तार का काम पूरा होने से देश का वित्तीय नेटवर्क काफी मजबूत हो जाएगा।

साभार : राजस्थान पत्रिका 31 मार्च, 2018

147 फीट ऊँचे टावर से गुरुत्वाकर्षण परीक्षण का यह परिणाम निकला

आस्ट्रेलिया के 3 युवाओं ने विज्ञान के परीक्षण करने के लिए 'हाउ रिडिक्यूलस' चैनल बनाया, इसमें सभी चीजों के परीक्षण कैमरे के सामने होते हैं, उसमें कुछ छिपाया नहीं जाता। तीनों युवाओं ने करीब 20 किलो बर्फ के टुकड़े और उतने ही बड़े आकार वाले तरबूज के साथ 147 फीट ऊँचे टावर से गुरुत्वाकर्षण का प्रयोग किया। पर्थ से कुछ दूरी पर जिनजिन टाउन में उन्होंने परीक्षण किया। पहले वे टावर की तीसरी मंजिल से तरबूज फेंकते हैं और वह स्प्रिंगपेड पर आने के बाद उछलकर टूट जाता है। उतने ही आकार वाला दूसरा तरबूज और अधिक ऊँचाई से उसी तरह फेंका जाता है, वह भी टूट जाता है। हालांकि जब 20 किलो वजनी बर्फ का बड़ा टुकड़ा और अधिक ऊँचाई से फेंका जाता है, तो वह स्प्रिंगपेड पर गिरने के बाद नहीं टूटता। उसी बर्फ के टुकड़े को एक मंजिल नीचे आकर उसी तरह फेंका जाता है, तो वह बिखर जाता है। तीन युवाओं ने दिखाया कि चीजों का गुरुत्वाकर्षण उनके आकार से ज्यादा बल, वजन और ऊँचाई पर निर्भर करता है।

साभार : दैनिक भास्कर 11 मार्च, 2018

अपंग गायों को कृत्रिम पैर का सहारा

बीकानेर: तहसील लूणकरणसर के ग्राम ढाणी भोपालाराम की कृष्ण गोशाला में पोषित हो रही अपंग गायों को अब कृत्रिम पैर का सहारा मिलेगा। इसको लेकर पेन मीडिया फाउण्डेशन सोसायटी जयपुर की ओर से गोवंश को कृत्रिम पैर कृष्णा लिम्ब लगाने के लिए कैम्प लगाया गया। जयपुर से आए डॉ. तपेश माथुर व लूणकरणसर के प्रथम श्रेणी चिकित्सालय के प्रभारी अधिकारी डॉ. नरेश शर्मा के नेतृत्व में दल ने गोशाला का निरीक्षण किया। गोशाला में संधारित 80 अपंग पशुओं में से प्रारंभिक तौर पर 3 गोवंश के कृत्रिम पैर कृष्णा लिम्ब लगाने के लिए आवश्यक नाप लिए गए। डॉ. माथुर ने बताया कि कुछ समय बाद इन्हें कृष्णा लिम्ब लगाया जाएगा। फिजियोथैरेपी से इन गोवंश को पुनः अपनी सामान्य चाल चलने व कृत्रिम पैर लगाने के लिए अभ्यस्त किया जाएगा।

साभार : राजस्थान पत्रिका 01 अप्रेल, 2018

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

अलवर

रा.मा.वि. भीखाहेड़ी, तह. लक्ष्मणगढ़ में श्री श्याम सुन्दर शर्मा के पुत्रों द्वारा 50 लाख 30 हजार रुपये की लागत से 27×22 का एक कमरा मय 27×8 का बरामदा एवं पानी के लिए सीमेन्ट की एक टंकी का निर्माण करवाया गया एवं समस्त ग्रामवासियों द्वारा 27×22 कमरा मय 27×8 का बरामदा एवं रंग पेन्ट कराया जिसकी लागत 5 लाख 20 हजार रुपये, श्री गुड्डू प्रधान एवं स्टाफ के सहयोग से 54×9 का एक चबूतरा बनाया गया जिसकी लागत 40 हजार रुपये, श्री राम मीना से एक पंखा लागत 1400 रुपये, श्री राधेश्याम मीना से 2 पंखे लागत 2,400 रुपये, श्री जगदीश बैरवा से 2 पंखे लागत 2,800 रुपये, विश्राम डेयरी से एक पंखा लागत 1,200 रुपये, पूर्व प्रधानाध्यापक श्री जयलाल मीना से 2 पंखे लागत 2,800 रुपये, संस्थाप्रधान एवं समस्त स्टाफ की तरफ से H.M. व्हील चेयर लागत 4,400 रुपये, कक्षा 10 के विद्यार्थियों द्वारा सत्र 2015-16 एवं 2016-17 द्वारा 2 लोहे की अलमारी लागत 7,900 रुपये, श्री भरत लाल मीना से 100 फीट लम्बी पाईप लागत 800 रुपये, ग्राम पंचायत द्वारा 220 फीट नाले का निर्माण एवं पटाव लागत 3 लाख 70 हजार रुपये तथा 04 शौचालय एवं 06 बाथरूम लागत 01 लाख 80 हजार रुपये, स्थानीय विद्यालय के व.अ. श्री रामराज मीना द्वारा पूरे विद्यालय में निःशुल्क नल फीटिंग लागत 11,000 रुपये।

उदयपुर

रा.बा.उ.मा.वि. भूपालपुरा में श्रीमती लीलावती कोठारी (अध्यापिका) ने सेवानिवृत्ति के अवसर पर अपने पति स्व. श्री निर्मल कोठारी की स्मृति में विद्यालय में (26×19) का एक कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया जिसकी लागत 5,00,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. कड़िया** में श्रीमती टमुदेवी मादरेचा द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से सरस्वती माँ का मन्दिर का निर्माण करवाया गया तथा इन्हीं के पुत्र श्री महावीर मादरेचा द्वारा 25,000 रुपये की लागत से फर्नीचर व सम्पूर्ण विद्यालय भवन का रंग रोगन किया गया। श्री अम्बालाल एवं श्री केसू लाल मेहता द्वारा 1,25,000 रुपये की लागत से प्रत्येक कक्षा में बैंच व चौकी का निर्माण करवाया गया, श्री महेन्द्र सिंह (आशिया उपसरपंच) से 10 बैंच सैट लागत 25,000 रुपये, श्रीमती नारायणी देवी पत्नी स्व. रोशन लाल मादरेचा की स्मृति में 11,500 रुपये का फर्नीचर विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री शान्ति लाल सुथार से 05 छत के पंखे विद्यालय को सप्रेम भेंट जिनकी लागत 6,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. मटून (गिर्वा)** को श्री हेमन्त गोखरू पंचवटी द्वारा स्व. फूलचंद चन्दा कुमारी गोखरू बनेड़ा की स्मृति में छात्रों के पानी पीने हेतु एक आर.ओ. एवं एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट जिसकी अनुमानित लागत 50,000 रुपये, श्री नवयुवक मण्डल मटून द्वारा आर.ओ. एवं लोहे का स्टेण्ड सप्रेम भेंट जिसकी अनुमानित लागत 21,000 रुपये, श्री अर्जुन सिंह देवड़ा से एक हजार लीटर की प्लास्टिक की पानी की टंकी एक पाईप फीटिंग का कार्य कराया गया जिसकी अनुमानित लागत 10,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. बलीचा, तह. लसाड़िया** को श्री विजय सिंह मेहता (वरिष्ठ शा.शि.) द्वारा 27,000 रुपये की लागत से ट्यूबवेल की मोटर, केनाप्लस का हरा पाईप विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि. बेडवास (गिर्वा)** को चौकसी हेरियस लिमिटेड उदयपुर के सी.एस.आर. श्री प्रवीण यादव द्वारा 250 जोड़ी-बाटा जूते व 500 जोड़ी मोजे कक्षा एक से आठ तक के छात्र-छात्राओं को दिए गए जिसकी लागत 1,15,000 रुपये, इण्डस टॉवर्स लिमिटेड, जयपुर द्वारा कक्षा एक से पाँचवी तक के छात्र-छात्राओं को 165 स्वेटर वितरित किए गए जिसकी लागत 30,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. मालवा का चौरा, कोटड़ा** में श्रीमती मंजू जैन (व.अ.) द्वारा छत मरम्मत हेतु 1,00,000 रुपये का चैक विद्यालय को सप्रेम भेंट।

कोटा

रा.उ.मा.वि. झाड़गाँव, तह. दीगोद को स्थानीय गाँव के मीणा समाज के प्रमुख लोगों द्वारा विद्यालय की आवश्यकता पूर्ति एवं शाला विकास हेतु 1,05,000 रुपये प्रधानाचार्य को सप्रेम भेंट।

श्री गंगानगर

रा.आ.उ.मा.वि. 14 ए.पी.डी. कमरानियां (अनूपगढ़) को श्री विजय कुमार शर्मा (व.लि. ग्रेड-।) द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को 25,000 रुपये की लागत से स्कूल ड्रेसें वितरित की।

चित्तौड़गढ़

रा.आ.उ.मा.वि. भादसोड़ा में श्री धनराज धींग (व. पुस्तकालयाध्यक्ष) द्वारा सरस्वती माता मन्दिर का निर्माण करवाया गया एवं सभी छात्र-छात्राओं को सामूहिक भोजन कुल खर्च-1,00,000 रुपये, श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा (प्रधानाचार्य) की सेवानिवृत्ति पर एक वाटर कूलर भेंट, लागत 30,000 रुपये, श्री अशोक कुमार, श्री ललित कुमार रांका से एक इन्वर्टर व 10 कुर्सी जिसकी लागत 21,000 रुपये, महावीर इन्टरनेशनल शाखा भादसोड़ा एवं मेहता चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 100 जर्सी व 675 मोजे विद्यालय के छात्र-छात्राओं को वितरित, श्री शेख असगर भाई सलमा बॉक्सवाला (USA) निवासी निम्बाहेड़ा द्वारा एक प्रिन्टर जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री कन्हैयालाल बोरदिया (व्याख्याता वाणिज्य) से 10 कुर्सी व 100 धार्मिक पुस्तकें, श्री प्रदीप कुमार दीक्षित (व्या. वाणिज्य) द्वारा सेवानिवृत्ति पर एक माइक सेट भेंट जिसकी लागत 8,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि. लसड़ावन पं.स. निम्बाहेड़ा** में श्री ख्याली लाल खटीक द्वारा 3,50,000 रुपये की लागत से एक कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया, श्री कमलेश चावत द्वारा साईकिल स्टेण्ड हेतु 21,000 रुपये, श्री बाल मुकुंद आमेटा से एक आर.ओ. भेंट, जिसकी लागत 18,000 रुपये, श्री पुरुषोत्तम लाल भट्ट से एक वाटर कूलर जिसकी लागत 52,000 रुपये, श्री सुरेश रातड़िया से 21 विद्यालय गणवेश प्राप्त हुए एवं श्री भोपराज जाट से 21 विद्यालय गणवेश जिसकी लागत 7,000 रुपये, श्री सुरेश चौधरी से समस्त छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय पर्व पर भोजन, जिस पर कुल खर्च 50,000 रुपये, श्री हरनारायण टेलर से साइकिल स्टेण्ड पर टीन शेड जिसकी लागत 35,000 रुपये। **रा.बा.उ.मा.वि. रूद, पं. स. राशमी** को श्री हरिसिंह राणावत ने अपने पुत्र स्व. कमलसिंह राणावत की पुण्य स्मृति में 45,000 रुपये का एक वाटर कूलर भेंट किया।

चूरू

रा.उ.मा.वि. रणसीसर तह. सरदारशहर को जनसहयोग से फर्नीचर निर्माण हेतु 40,000 रुपये प्राप्त हुए तथा 11,700 रुपये विद्यालय विकास की अन्य जरूरतें पूरी करने हेतु प्राप्त हुए। **रा.आ.उ.मा.वि. भूखरेड़ी, तह. रतनगढ़** को श्री डूंगरराम महरिया से एक H.P. का प्रिन्टर जिसकी लागत 11,600 रुपये, श्री जवाहर सिंह भामू से लोहे की एक अलमारी प्राप्त हुई, जिसकी लागत 6,200 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि. उड़सर लोडेरा** को सर्वश्री हनुमानमल मीणा (से.नि.अ.), कैलाश चन्द्र पारीक (से.नि.अ.), भागीरथ सारण प्रत्येक से फर्नीचर हेतु 11,100-11,100 रुपये प्राप्त हुए, श्री हजारी मल सारण से फर्नीचर हेतु 6,100 रुपये प्राप्त हुए, सर्वश्री सांवरमल सारण, रामेश्वरलाल सुण्डा, तिलाकाराम सारण, रामानंद पाडिया प्रत्येक से फर्नीचर हेतु 5,100-5,100 रुपये प्राप्त हुए।

शेष अगले अंक में

संकलन- प्रकाशन सहायक

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जुलाई, 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः डॉ. राजकुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका : जुलाई, 2018

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भाटाला (बाड़मेर) में दिनांक 6 मई, 2018 को आयोजित गुरुवंदन-सखासंगम कार्यक्रम में उपस्थित श्री बंशीधर गुर्जर (उप निदेशक मा.शि. जोधपुर), श्री गोमाराम जीनगर (सहा. निदेशक मा.शि. राजस्थान, बीकानेर) पूज्य संत श्री रघुनाथ भारती, श्री दीपसिंह यादव (प्रधानाचार्य) ग्रामीणजन तथा पूर्व विद्यार्थीगण।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भणियाणा (जैसलमेर) में दिनांक 6 मई, 2018 को आयोजित सखासंगम कार्यक्रम में उपस्थित श्री सवाईसिंह गोदारा I.P.S., जिला पुलिस अधीक्षक, बीकानेर (पूर्व विद्यार्थी), गणमान्य नागरिक, भामाशाह एवं पूर्व विद्यार्थीगण।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जुलाई, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2जुलाई, 2018 पृष्ठ 56 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्र वीथिका

निदेशालय परिसर में दिनांक 14 जून,2018 को आयोजित कॉन्फ्रेंस वॉल का भूमि पूजन व शिलान्यास समारोह

समारोह में उपस्थित मुख्यअतिथि डॉ.गोपाल कृष्ण जोशी विधायक बीकानेर विधान सभा क्षेत्र (पश्चिम),श्री नथमल डिडेल निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज., अधिकारीवृन्द एवं कर्मचारीगण